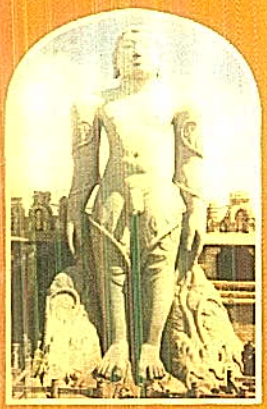

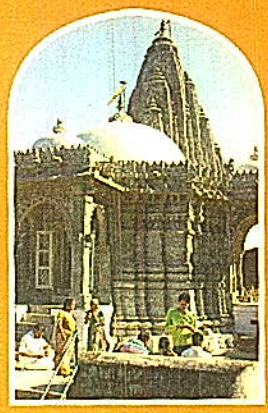

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

VOLUME : V ISSUE : 2 MUMBAI, AUGUST 2014 PAGES : 44 PRICE :₹25

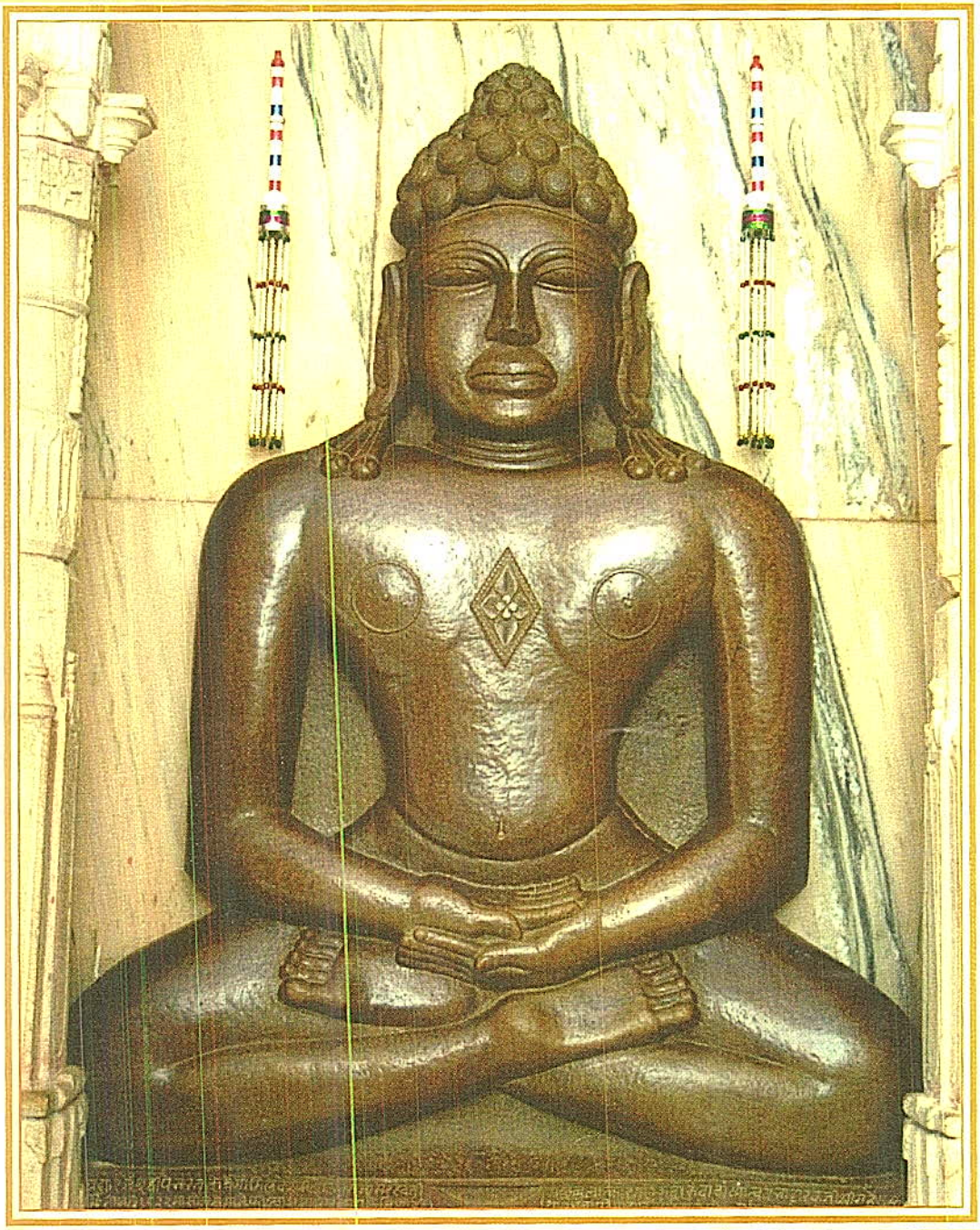

आठवें तीर्थंकर भगवान श्री चन्द्रप्रभ जी, बीना-बारहा क्षेत्र, मध्यप्रदेश

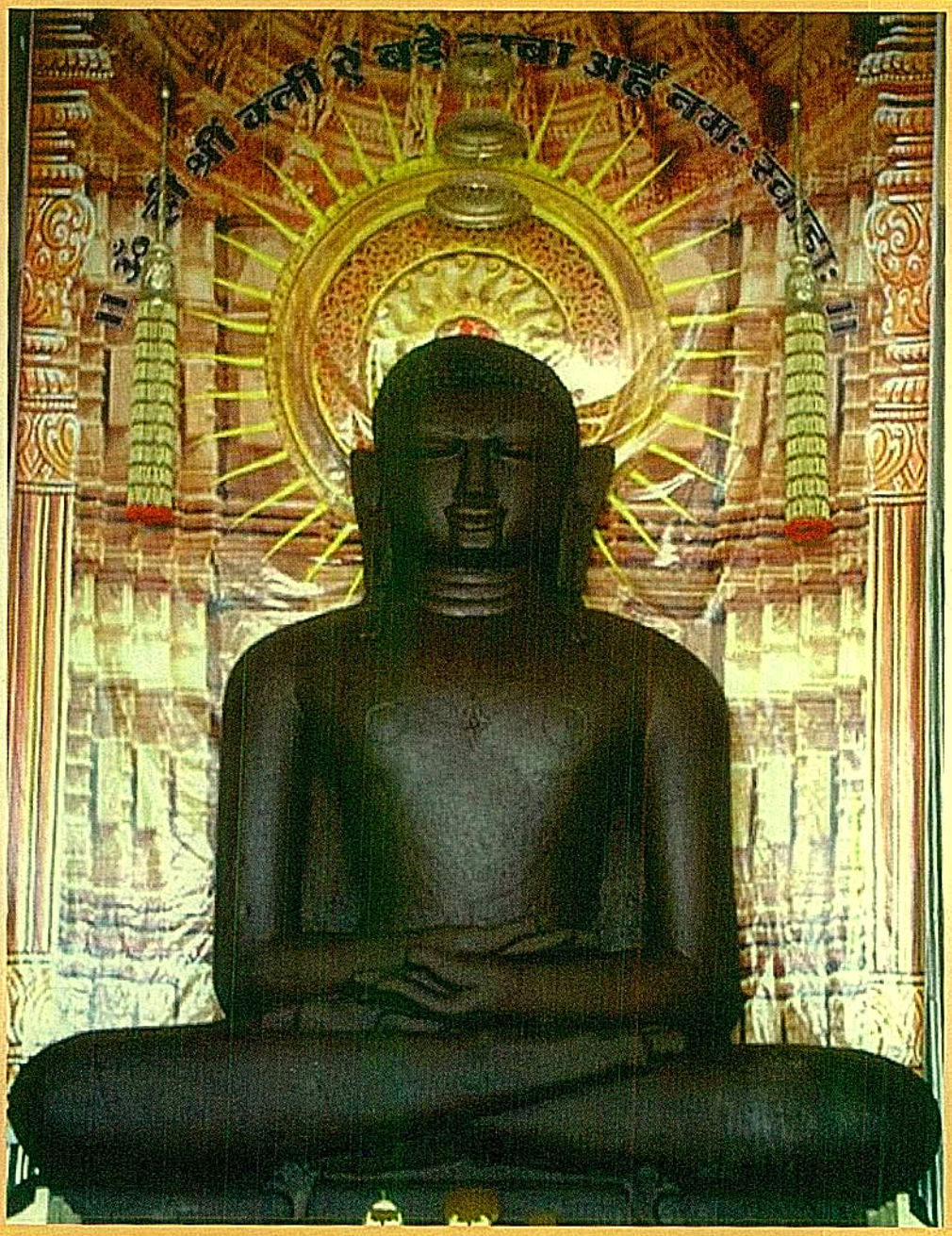

पतित पावन तरण तारण, हमारी फरियाद सुन लेना।
तेरे चरणों में मस्तक है, हमें अपना बना लेना।।

R.K. MARBLE GROUP

Corporate Office : Makrana Road, Madanganj-Kishangarh, Dist.Ajmer(Raj.)-305801
Tel : +91 1463 260101-10, Fax : +91 1463 250601
E-mail : info@rkmarble.com, Website : www.rkmarble.com

अध्यक्ष की कलम से

साधर्मी बंधुओं एवं माताओं / बहिनो,

सादर जय जिनेन्द्र।

रूठे मेघ लगभग एक माह की देरी से पूरे भारतवर्ष में गरज-गरज कर बरसे। सूखे की आशंका से निजात मिली। एक-दो प्रांतों को छोड़कर मानसूनी वर्षा सामान्य आंकड़ों के करीब-करीब पहुंच रही है यह शुभ संकेत है। पूरे देश में श्रमण परम्परा के अनुसार, चातुर्मास स्थापना के साथ ही साथ, धर्म के मर्म को जन-जन की सोच को तरंगित करने के लिए, धर्म प्रभावना के अनेक अंगों ने कार्यक्रमों के, विधानों के रूप ग्रहण कर लिए हैं।

एक नई सोच, एक नई दिशा, एक नये चिंतन से शुरुआत हुई है 'रक्षाबंधन' के त्योहार से। जन सामान्य के लिए यह सामाजिक पर्व बहिन-बेटियों की रक्षा का संकल्प-रक्षा सूत्र बांधकर कर्तव्य बोध कराता है, लेकिन जैन मान्यता के अनुसार यह इस संकल्प से और बहुत ऊँचा उठकर उन श्रमणों की रक्षा का संकल्प का दायित्व बोध करता है सभी श्रावकों को, जन सामान्य को-जो संयम, साधना, तपश्चरण को अंगीकार कर श्रमण परम्परा का पालन कर रहे हैं। श्रमणों की चर्या इस कलयुग में भौतिकवादी युग में निरतिचार रूप पलती रहे यह समाज की सोच हो, आचरण हो, यही हमारा 'रक्षा बंधन' संकल्प हो।

दो तेज हवाओं की दास्तां है तूफां पर।
काश वो न 'मुनि' होते या मै न श्रावक होता।।

वर्षा काल में सामान्यतः सारी गतिविधियां धीमी पड़ जाती हैं - आवागमन, व्यापार, सांसारिक रीति-रिवाज से युक्त बहुतेरे संस्कार। लेकिन प्रकृति हमें देती है वह सुअवसर जब हम स्वयं अपने को समझने का, अपने अंतःकरण में झांककर देखने का, अपने जीवन में किये गये कार्यों की समीक्षा करने का एवं 'जीवन के उद्देश्य' को परिभाषित करने का उपक्रम कर पाते हैं। कुछ क्षण आत्मचिंतन के लिए पा जाते हैं। चंद मिनिट 'आत्म-शांति' के सामीप्य का थोड़ा अनुभव कर पाते हैं- एक नई ऊर्जा का आस्वादन कर पाते हैं, कर्तापने से अकर्तापने की महिमा को समझने का क्षणिक आभास कर पाते हैं।

भव्य जिनालयों की प्रतिष्ठा के साथ-साथ 'जिनधर्म की शिक्षा' के हेतु 'प्रतिमा स्थलियों' की स्थापना, पाठशालाओं की स्थापना - जिनमें धर्म से ओतप्रोत संस्कारों के बीजारोपण के महती पाठ्यक्रम समाहित हैं - वंदनीय हैं। 'सर्वे भवंतु सुखिनः' को चरितार्थ करने वाले - मेडिकल सुविधाओं से युक्त - जन-जन के स्वास्थ्य लाभ हेतु स्थापित 'भाग्योदय', सागर (म.प्र.), मेडिकल सेन्टर-गांधीनगर-दिल्ली तथा प्रतिभावान बालकों हेतु - प्रशासनिक प्रशिक्षण संस्थान 'अनुशासन- दिल्ली की स्थापना - प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय हैं। जिनके आशीर्वाद से समाज ने इन्हें कार्यान्वित किया वे महाश्रमण - आचार्य संत शिरोमणि 108 परम पूज्य विद्यासागरजी महाराज के चरणों में त्रयबार नमोस्तु। एवं

गुरुवर के संकेतों को शिरोधार्य करने वाले एवं इन संस्थानों को तन-मन-धन से आकार देने वाले 'समाज रत्नों' के प्रति तीर्थक्षेत्र कमेटी परिवार बहुमान प्रगट कर जय जिनेन्द्र निवेदित करता है- उनकी कर्मठता के प्रति प्रणाम निवेदित करता है।

मुकुट सप्तमी पर इस बार बहुत ही हर्षोल्लास एवं भक्तिभाव से भगवान पार्श्वनाथ के मोक्ष दिवस के उपलक्ष्य में श्री सम्मेदशिखरजी पार्श्वनाथ टोंक पर गाजे-बाजे एवं सजाओं के साथ हजारों श्रद्धालुओं ने लाडू चढ़ाकर पर्व मनाया, तीर्थक्षेत्र कमेटी सभी श्रद्धालुओं के प्रति अपना बहुमान व्यक्त करती है।

आने वाले पर्यूषण पर्व की तैयारियां पूरे देश एवं विदेशों में जोर-शोर से की जा रही है .... क्यों न हो? आखिर यह हमारा सबसे महान पर्व है जो जीवन के अंतरतम् को उजागर करता है एवं सभी को जीवन जीने की कला सिखाता है। सभी बंधुओं, भाईयों, बहनों को पर्यूषण पर्व की ढेर सारी शुभकामनाएं प्रेषित हैं।

एक नई सोच, एक नई बुनियाद
एक नया स्वप्न, एक नया विश्वास
एक नई कल्पना, एक नया आयाम
एक नई आस्था, एक नया आगाज
तो आइये हम सब 'पर्यूषण पर्व' में
करें मिलकर एक नई शुरुआत।।

जय जिनेन्द्र
जय जय गुरुदेव

आपका ही

सुधीर जैन

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 5 अंक 2 अगस्त 2014

परामर्श मण्डल

डॉ. नीलम जैन, पुणे
श्री संजय जैन 'मैक्स', इंदौर
श्री श्रीकिशोर जैन, दिल्ली

संपादक

उमानाथ आर. दुबे
डॉ. सुरेन्द्र जैन 'भारती', बुरहानपुर (मानद्)

कार्यालय
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई 400 004.
फोन : 022-2387 8293 फैक्स: 022-23859370

e-mail : tirthvandana4@yahoo.com
e-mail : tirthvandana4@gmail.com
Website : www.digamberjainteerth.com

'भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी' को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, वी.पी.रोड, मुंबई के सेविंग खाता नं.13100100008770 अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी.पी.टैंक, मुंबई के सेविंग खाता नंबर 001210100017881 में किसी भी शाखा में नि:शुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें.

मूल्य

वार्षिक	:	300 रुपये
त्रिवार्षिक	:	800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष)	:	2500 रुपये

विज्ञापन आमंत्रित हैं.

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. सम्पादक का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।

इस अंक में

पर्यूषण पर्व में तीर्थरक्षा का करें संकल्प	5
जैनधर्म के अष्टम तीर्थंकर श्री चन्द्रप्रभ भगवान्	8
सात सौ जैन मुनियों की रक्षा का प्रतीक - रक्षा बंधन पर्व (वात्सल्य पूर्णिमा)	10
सोलहकारण पर्व	1[illegible]
क्षमा की क्षमता	14
आध्यात्मिक पर्व : पर्युषण पर्व	16
राष्ट्रीय क्षेत्र प्रतिनिधि सम्मेलन सानंद सम्पन्न	17
कार्य प्रगति रिपोर्ट	20
मंदिर बनाओ, पर मानव सेवा भी हो	27
प्लास्टिक अपशिष्ट और हम	29
सैनिक सीमा पर एवं संत संस्कृति की रक्षा करते हैं	36
हमारे नये बने सदस्य	41

धन के लिए धर्म नहीं होता, धर्म के लिए धन होता है। जहां धर्म है वहीं धन है ।

पर्यूषण पर्व में तीर्थरक्षा का करें संकल्प

- डॉ.सुरेन्द्रकुमार जैन 'भारती'

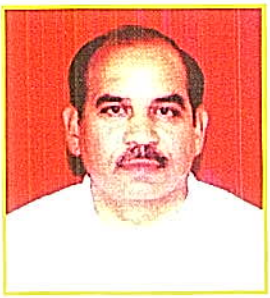

भारतीय संस्कृति में पर्वों का विशेष महत्त्व है क्योंकि वे व्यक्ति को मर्यादा में रहकर मर्यादित आचरण करना सिखाते हैं। यह मर्यादा स्वतंत्रता देती है किन्तु स्वच्छन्दता पर रोक लगाती है। यह मात्र स्वयं जीने का दर्शन नहीं अपितु 'जियो और जीने दो' का दर्शन है। यह दूसरों को नियंत्रित करने के बजाय स्वयं को नियन्त्रित करने का माध्यम है जिसके सहारे हम वह सब पा सकते हैं जिससे सुख मिलता है,शान्ति मिलती है, यश मिलता है। वास्तव में मानवीय जीवन को गरिमा इन पर्वों से ही मिलती है।

जैन धर्मानुयायियों द्वारा प्रतिवर्ष भाद्रपद शुक्ल पंचमी से भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी तक मनाया जाने वाला पर्यूषणपर्व ऐसा ही पर्व है जिसे पर्वों का राजा कहा जाता है। यह हमें आत्मानुशासन सिखाता है।

नैतिकता के सच्चे प्रेरक हमारे पर्व होते हैं। वे अध्यात्म से जोड़ते हैं। जीने की कला सिखाते हैं। तत्त्वचिन्तन एवं आत्माराधना के अवसर प्रदान करते हैं। इन दिनों व्यक्ति संसार के यथार्थ स्वरूप की जानकारी, संसार से बचने के उपाय एवं उत्तम क्षमा-मार्दव-आर्जव-शौच-सत्य-संयम-तप-त्याग-आकिञ्चन्य एवं ब्रह्मचर्य रूप दशधर्मों का यथार्थ चिन्तन-मनन कर उन्हें अंगीकार करने का प्रयत्न करता है। आत्मा-परमात्मा की निकटता के लिए इन दिनों उपवास किये जाते हैं, स्वाध्याय होता है और संयम युक्त जीवन को जीवन का अंग बनाया जाता है। पर्यूषणपर्व से जुड़ना आत्महित के लिए आत्मगौरव की बात है। जिन्दगी विचारों की जंग है। यदि प्रशस्त विचार मिलें, सार्थक चिन्तन हो तो जीवन आस्था के रंग भरने लगते हैं। इसके लिए धर्म की शरण में जाने वाला व्यक्ति स्वयं को पतित से पावन बना लेता है। हम मानव हैं और विकास चाहते हैं। किन्तु इसके लिए आत्मबल के साथ-साथ कठोर परिश्रम, सदाशयता, सदाचारपूर्ण जीवन जीते हुए विलासिता से दूर रहना आवश्यक है। मनुष्य जिन विलासिता की वस्तुओं को संग्रहीत करके बड़ा दिखना चाहता है वह कालान्तर में स्वयं वस्तु बनकर रह जाता है और वस्तु स्वभाव-अपनी आत्मा से दूर हो जाता है। जो बाधक तत्त्वों को साधक मानता है वह बन्धन विमुक्त कैसे हो सकता है ? पर्यूषणपर्व सच्ची स्वतंत्रता की ओर ले जाता है क्योंकि वह धर्ममय जीवन का संदेश देता है।

पर्यूषणपर्व जीवन में आत्मशोधन का निमित्त उपस्थित करता है। वह चाहता है कि मानव अपने हित पर विचार करे, अपने स्वभाव की ओर मुड़े। क्षमा, मार्दव, आर्जव जैसे स्वाभाविक गुणों की क्या स्थिति है; यह विचार मन में लाकर अभय की साधना करने वाला मनुष्य 'जियो और जीने दो' की भावना को जब हृदयंगम करता है तब पर्वाराधना पूर्ण होती है। क्यों न हम धर्म के इन दस सोपानों पर चढ़ने का प्रयास करें ? हम उतरते/गिरते तो आज तक रहे हैं अब उठने का सुअवसर आया है-पर्यूषणपर्व के रूप में; क्या हम मुक्ति के इस अवसर को खोना चाहेंगे ? कभी नहीं । अतः धर्म के दसलक्षण अपने जीवन में उतारें। इनका संक्षिप्त स्वरूप इस प्रकार है-

1.उत्तम क्षमा धर्म-

उत्तम क्षमा का मानव जीवन में वही स्थान है जो एक जीव के लिए आत्मा का। जिस प्रकार बिना आत्मा के इस मानव देह का कोई मूल्य नहीं उसी प्रकार क्षमा के बिना आत्मा का भी कोई मूल्य नहीं । क्षमा आत्मा का स्वभाव है जो हर क्षण इस जीव के साथ है । जिस प्रकार हाथ से हम किसी प्राणी को मार सकते हैं तो उसी हाथ से किसी मरते हुये को बचा भी सकते हैं । बस, धर्म यह कहता है कि तुम न जाने कितने जन्मों से मरते और मारते आ रहे हो,अब उत्तम क्षमा को अपना लो ताकि ना किसी को मारना पड़े और ना ही स्वयं असमय मरण को प्राप्त करना पड़े । क्षमा मानव जीवन की शोभा है । घर-गृहस्थी को जोड़ने का सेतु है । मानव से भगवान् बनने के लिए उपादेय है । बस आपको करना यही है कि जो क्रोध रूप विभाव आपके हृदय में बैठा हुआ है उसे हटाओ और उसकी जगह क्षमा को प्रतिष्ठित करो । क्षमा कहीं गई नहीं है , क्षमा कहीं से आएगी भी नहीं; वह तो आपकी आत्मा में ही विद्यमान है अतः आप क्षमाको अपनायें और आत्म वैभव से युक्त हों ।

2. उत्तम मार्दव धर्म-

''मृदोर्भावः मार्दवम्'' अर्थात् जहाँ मृदुता का भाव है वहाँ मार्दव धर्म होता है । हमारी विचार एवं कार्यप्रक्रिया तीन तरह से होती है 1. मन से 2. वचन से 3. शरीर से । अतः मन,वचन एवं काय (शरीर) में किसी प्रकार की वक्रता न होना मार्दव है । इस जीव ने अनेक जन्मों में बाह्य कारणों से अहंकार रूप प्रवृत्ति की । अहंकार में जिया, अहंकार के लिये जिया और अहंकार में जीते-जीते ही मर गया । उसने अहंकार को तो कभी छोड़ा नहीं और वह अहम् (आत्म स्वरूप) में कभी आया नहीं । अनेक कारणों से अहंकार भी किया और उसकी पूर्ति के लिये क्रोध,मान, माया,लोभ रूपी कषायों से स्वयं को सम्पृक्त भी बनाये रखा। परिणाम स्वरूप उसने कभी अपने आत्म स्वरूप का रसास्वादन किया ही नहीं, जाना ही नहीं । मार्दव धर्म हमें सिखाता है कि-निरभिमानता का जीवन जीने वाला कभी उस स्थिति में नहीं आता जब उसे किसी के सामने सिर झुकाना पड़े; जबकि अभिमानी को चाहे जब सिर झुकाना ही पड़ता है । चाहे जब उसे अपने ही कारणों से नीचा देखना ही पड़ता है अतः मान छोड़ो और

सेवा में मनुष्य का धर्म बोलता है ।

मार्दव धर्म को अपनाओ ।

3. उत्तम आर्जव धर्म-

''ऋजोर्भावः आर्जवम्''जहाँ ऋजुता का भाव होता है वहाँ आर्जव धर्म होता है ऋजुता नाम सरलता का है और सरलता वहीं होती है जहाँ कुटिलता का अभाव होता है । कुटिलता कठिनाई पैदा करती है । कठिनाई से कार्य असंभव जैसे प्रतीत होने लगते हैं और हमारी प्रतीति (विश्वास) दूसरों से तो क्या, अपने आप से भी डगमगाने लगता है। यह डगमगाने का मार्ग ही संसार है जो अनेक कुटिलताओं से भरा हुआ है। मुझे संसार छोड़ना है। यदि मेरा ऐसा संकल्प है तो क्यों न मैं कुटिलताओं से बचूं ? आर्जव की विरोधी माया है। जो स्वयं को ठगती है और दूसरों को ठगने के लिये प्रेरित करती है। मैं इस माया के बंधन को तोड़ना चाहता हूँ ताकि काया के बंधन से स्वयं को मुक्त कर सकूं। आत्मा के परमात्म स्वरूप को इस माया ने ही ढक लिया है, आवृत किया है। मैं चाहता हूँ कि मेरी आत्मा भी परमात्मा बने, मैं भी भगवान बनूं, मैं भी सिद्धावस्था में बैठूं । मेरा यह सोचा हुआ विचार तभी फलीभूत हो सकता है जबकि मैं आर्जव धर्म को अपना लूं । तो लीजिए, मैं माया के बंधन को काटता हूँ और ऋजुता के भाव को अपनाता हूँ। मेरा यही संकल्प है। मेरी यही सरलता है।

4.उत्तम शौच धर्म-

''शुचेर्भावः शौचम्''अर्थात् जहाँ शुचिता का भाव होता है वहाँ शौच धर्म होता है । ऐसा कौन मनुष्य होगा जो शुचिता को नहीं चाहता हो ? शुचिता का अर्थ है-पवित्रता । यह पवित्रता बिना निर्लोभता के नहीं आती । निर्लोभी बनने के लिये हमें साध्य और साधन को समझना चाहिए। हमारे लिये जो आत्मा साध्य है वह लोभ से रहित अर्थात् शौच गुण को अपनाने पर ही प्राप्त हो सकती है । यदि साधन पवित्र नहीं हैं; तो पवित्र साध्य की भी प्राप्ति नहीं हो सकती । 'काँटे से काँटा निकलता है इस लोकोक्ति को लोग गलत अर्थों में लेते हैं । इसका अर्थ गलत साधनों का उपयोग करना नहीं है बल्कि यहाँ उपयोगिता को लक्ष्य करके इस लोकोक्ति का अर्थ करना चाहिए । लोभ वह बुराई है जो प्राप्त साधनों का उपयोग/उपभोग नहीं करने देती और जो प्राप्त नहीं है उसे पाने के लिये दिन-रात चिन्तातुर बनाये रखती है अतः दोनों ही दृष्टि से लोभ त्याज्य है । हम संसार में जो कुछ पाते हैं वह पुण्य योग से प्राप्त होता है और यह भी सभी जानते हैं कि पुण्य कभी भी लोभ से नहीं होता बल्कि लोभ के त्यागने से होता है। इसीलिए नीतिकारों ने कहा कि-सुख तो निर्लोभता में है, शौच धर्म में है ।

5. उत्तम सत्य धर्म-

''सतेहितं यत्कथ्यते तत्सत्यं'' अर्थात् जो हित के लिये कहा जाता है वह सत्य है। सत्य वह जिसका अस्तित्व है। संसार में झूठ का कभी अस्तित्व नहीं रहता। यदि झूठ चलता भी है तो वह भी सत्य के नाम पर चलता है । झूठ के पैर नहीं होते और सत्य कभी पंगु नहीं होता । जीवन का आधार सत्य है और जीवन का लक्ष्य भी सत्य है । परम सत्य आत्मा है जो हमारे अन्दर विद्यमान है । उस परम सत्य तक पहुँचने के लिये जो हमने झूठ के अनेक आवरण चढ़ा रखे हैं उनका विसर्जन करना होगा, उन्हें हटाना पड़ेगा । परिवार और शरीर का मोह भी आत्महित के क्षेत्र में बाधक हैं अतः उनके प्रति भी मोह छोड़ना पड़ेगा । सत्य से जीवन प्रतिष्ठा प्राप्त करता है और अहिंसा की रक्षा होती है; क्योंकि अहिंसा और सत्य एक ही सिक्के के दो पहलू हैं । नीति कहती है कि-''सत्यं ब्रूयात्, प्रियं ब्रूयात्,मा ब्रूयात्,सत्यमप्रियम्''अर्थात् सत्य बोलना चाहिये,प्रिय बोलना चाहिए किन्तु अप्रिय सत्य नहीं बोलना चाहिए। आज हम सत्य के भी प्रिय नहीं हैं और अप्रिय सत्य बोलने से भी नहीं चूकते अतः ऐसे समय में सत्य धर्म की चर्चा और भी आवश्यक हो जाती है । हम सत्य के राही बनें,सत्य के विश्वासी बनें; इसी में जीवन की सार्थकता है।

6. उत्तम संयम धर्म-

''संयमनं संयमः''अर्थात् जहाँ संयम अर्थात् स्वयं पर नियंत्रण का भाव होता है वहाँ संयम होता है। संयम न रुकना है और न चलना बल्कि संयम सधे हुए रुकना है और सधे हुए चलना है। मन,वचन और काय यदि अनियंत्रित या असंयमित हो जायें तो स्वयं के लिए कष्टदायी हो जाते हैं औरों के लिए भी कष्टदायी हो सकते हैं । अतः मानव जीवन में संयम अनिवार्य है । हम यदि दृष्टि को एकाग्र न करें तो हम कुछ देख भी नहीं सकते, ठीक इसी तरह यदि स्व पर संयम न रखें तो आत्महित नहीं कर सकते । आज तक का हमारा जीवन असंयम में गुजरा या जो भी हमने संयम पाला वह भी लोक से जुड़ा हुआ था । परलोक के विषय में हमने कभी सोचा ही नहीं । जिस गति में गये उसी के हो गये । अब समय आ गया है कि हम अपनी सत्ता को पहचानें और उस आत्मा को पाने का लक्ष्य बनायें जिसे पाये बिना मुक्ति संभव नहीं है। मनुष्य के पाँच इन्द्रियाँ होती हैं और इनको वश में किये बिना आत्मा की ओर दृष्टि ही नहीं जाती । इसी प्रकार छह काय के जीव होते हैं उन पर यदि अहिंसक,रक्षात्मक एवं सहअस्तित्वगत दृष्टि नहीं बनी तो भी संयम का पालन नहीं हो सकता। अतः संसार में भी संयम आवश्यक है और संसार से पार उतरने के लिए भी संयम आवश्यक है।

7. उत्तम तप धर्म-

संसार में बिना तप के कुछ नहीं मिलता और ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे तप करने पर प्राप्त न किया जा सके। तप में दो अक्षर हैं और इसके विपरीत पत में भी दो अक्षर हैं किन्तु दोनों के अर्थ में कितना अंतर है ? एक उत्थान की ओर ले जाता है और दूसरा पतन की ओर। मानवीय सोच,शक्ति,पुरुषार्थ का परिणाम तो उत्थान ही होना चाहिए, वह पतन की ओर क्यों जाये ?इसीलिए जैनाचार्यों ने कहा कि तप में कष्ट तो अवश्य होगा लेकिन इससे जो ऊर्जा एवं शक्ति मिलेगी वह बड़े से बड़े साध्य को प्राप्त कराने में सहायक होगी। जैनाचार्यों ने तप का लक्ष्य कर्मक्षय एवं इच्छाओं का निरोध बताया । इस लक्ष्य के साथ जो अन्तरंग और बहिरंग

धर्म केवल मंदिर में हीं, मूक प्राणियों के ऊपर दया करना भी धर्म है ।

प्रकार से तपस्या करता है वह कर्मों की निर्जरा करने में भी समर्थ होता है। संसार में अन्यान्य तपों की भरमार है। कोई नाम के लिये तप रहा है, कोई ख्याति के लिये, कोई दूसरों से अधिक श्रेष्ठ एवं अधिक तपस्वी दिखने के लिए और कोई दूसरों को हानि पहुँचाने के लिए। लेकिन यह तप वास्तविक नहीं हैं अपितु कुगति में पहुँचाने वाले हैं अतः इनका परिहार करना भी एक तप है। हमें तो वही तप इष्ट है जो कर्मक्षय के लिये हो, आत्महित के लिये हो।

8. उत्तम त्याग धर्म-

त्याग और दान के बिना न व्यक्ति का जीवन चलता है और न समाज का; धर्म तो यह हैं ही। जो बुरा है उसे त्यागो और जो अच्छा है उसका दान करो। हमारा धर्म यही कहता है। राग-द्वेष का त्याग और औषधि, शास्त्र (ज्ञान), अभय और आहार का दान करना यही धर्म है। इसके बिना न जीवन चल सकता है, न धर्म पल सकता है, न साधना हो सकती है और न साध्य की प्राप्ति हो सकती है। यहाँ स्पष्ट कर दूँ कि जहाँ राग होता है वहाँ दान नहीं होता और जहाँ दान होता है वहाँ राग नहीं होता। दान में स्व-पर कल्याण की भावना निहित है। सुपात्र की पहचान कर दान देने से गृहस्थ सत्कर्म में प्रवृत्त माना जाता है। घर की शोभा दान से है अतः दान अवश्य देना चाहिए। इसमें मात्रा को नहीं भावना को देखा जाता है। जैसी भावना वैसा ही फल। सद्भावों पूर्वक कम दान का भी वृहत्फल प्राप्त होते देखा जाता है। अतः निरन्तर मन में दान की भावना रखते हुए शक्ति और संयोग मिलने पर दान देना चाहिए।

9. उत्तम आकिंचन्य धर्म-

मैं और मेरा कुछ भी नहीं है, एकमात्र मेरी आत्मा है; इस भाव का नाम है– आकिञ्चन्य धर्म। यह धर्म हमें बताता है कि संसार में जो भी मिला; छूटने के लिए मिला, जो भी ग्रहण किया उसे छोड़ना है। जिसने भी अपना कहा; धोखा दिया, जिसे भी अपना माना, धोखा खाया। घर, परिवार, पुत्र, परिजन, पुरजन सब अपने माने; लेकिन सबके सब अपने सिद्ध नहीं हुए। परिग्रह का संचय किया कि इससे सुख होगा; लेकिन उसी के पाश में इस प्रकार जकड़े कि मुक्त होना मुश्किल हो गया। ऐसे में ध्यान गया आत्मा की ओर, अपनी ओर। वास्तविक धर्म था ही यही; बस समझने में समय अवश्य लग गया। जब ध्यान आया कि-''आतम के अहित विषय कषाय, इनमें मेरी परणति न जाय;''तभी से संकल्प कर लिया कि बस, अब और नहीं। आत्मा को संभालना है, पुद्गल को छोड़ना है। संकल्प पूरा हुआ, बाह्य विकल्पों का अभाव हो गया; रहे अन्तरंग विकल्प;सो उनका भी त्याग कर दिया ताकि श्रेष्ठ, निर्विकार, शुद्धात्मदशा को प्राप्त कर सकूं, सिद्धत्व को प्राप्त कर सकूं।

10. उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म-

''ब्रह्मणि चरणं ब्रह्मचर्यः''अर्थात् आत्मा में विचरण करना, लीन होना ब्रह्मचर्य है। आज तक इस जीव ने परिग्रह, परिवार और पर्याय को सँभाला; लेकिन परिणामों की उपेक्षा की। यदि परिणामों की गति को सँभाला होता तो संसार का अंत हो जाता। सत्ता, संगठन और समाज की धुन में स्वयं को भूल गया। न आत्मा याद रही, न स्व-उपकार। परोपकार के मद में पुद्गल की ही सेवा की, पर्यायों के बहाव में बहता गया और आत्महित का स्मरण ही नहीं रहा। शील, सादगी, सदाशयता की सम्पदा से ही आत्महित हो सकता है; यह स्मरण ही नहीं रहा। संयोग से सद्उपदेश मिला परिणाम स्वरूप आत्मा की आत्मा की ओर दृष्टि गई तो सृष्टि ही बदल गयी। अब संसार के होने,नहीं होने का प्रश्न ही नहीं रहा। हाँ, परावलम्बन का स्थान स्वावलम्बन ने ले लिया। द्रव्यस्त्री और भावस्त्री का त्याग हो गया। निराकुल दिगम्बरी अवस्था को ग्रहण किया और चल पड़े उधर जिधर मात्र एकत्व विभक्त आत्मा ही है और कुछ नहीं, कुछ भी नहीं।

तीर्थरक्षा का संकल्प

पर्यूषण पर्व के दस दिनों में हम सब प्रतिदिन इस बात का संकल्प लें कि तीर्थ हमारे प्राणभूत तत्त्व हैं जिनसे हमें मोक्ष पुरुषार्थ की प्रेरणा मिलती है। त्यागधर्म और आकिंचन्य धर्म पर चर्चा और विचार करते समय इस बात का संकल्प लें कि हम अपनी दानराशि का आधा हिस्सा प्राचीन तीर्थों के संरक्षण हेतु दान करेंगे। दि. 27 जुलाई को इन्दौर के गोम्मटगिरि तीर्थ पर सम्पन्न भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी-मध्यांचल के द्वारा आयोजित सम्मेलन में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी के प्रखर अध्यक्ष सिंघई सुधीर जैन ने अपनी आस्था प्राचीन तीर्थों के संरक्षण के प्रति दोहराते हुए समाज से तन-मन-धन से सहयोग की अपील की है। हमें तीर्थक्षेत्र कमेटी को मजबूत बनाना चाहिए। चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज, मुनि श्री आर्यनन्दी जी महाराज, आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की परम्परा में दीक्षित वर्तमान के वरिष्ठतम आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज, आचार्य श्री विद्यानन्द जी महाराज, आचार्य श्री वर्धमानसागर जी महाराज, मुनिपुङ्गव श्री सुधासागर जी महाराज आदि सभी संतों ने तीर्थक्षेत्र कमेटी के प्रति अपना शुभाशीर्वाद प्रदान किया है और स्वयं भी समाज को प्रेरित कर अनेक तीर्थों का संरक्षण एवं जीर्णोद्धार करवाया है। तीर्थक्षेत्र कमेटी को इन कार्यों से, प्रेरणाओं से संबल मिलता है। आइए, आप भी संकल्पित हों कि तीर्थ हमारे हैं और हम इनकी वंदना भी करेंगे और इनके संरक्षण के लिए प्रयत्नशील भी होंगे। दान भी देंगे और इनके संरक्षण का भाव भी रखेंगे। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी आपके उदार सहयोग का अभिनन्दन करेगी।

पर्यूषण पर्व की सफलता हेतु हमारी शुभकामनाएं आप सबके साथ हैं। क्षमावणी पर्व पर विगत सभी ज्ञात-अज्ञात भूलों के प्रति क्षमा भाव रखते हुए क्षमाप्रार्थी हूँ।

धर्म को जानने वाला व्यक्ति पुण्य से कमाता है और पुण्य के क्षेत्र में लगाता है।

जैनधर्म के अष्टम तीर्थंकर श्री चन्द्रप्रभ भगवान्

डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन
मो. 09826565737

जैनधर्म की २४ तीर्थंकर परम्परा के अष्टम तीर्थंकर श्री चन्द्रप्रभ भगवान् हम सबके आराध्य हैं। वे चन्द्रमा के समान कान्तिवाले होने के कारण 'चन्द्रप्रभ' नहीं हैं किन्तु चन्द्रमा की प्रभा को भी हरने वाले हैं क्योंकि चन्द्रकान्ति तो रात्रि में ही प्रकाशित होती है जबकि वे तो अपनी प्रभा से दिन और रात; दोनों को प्रकाशित करने वाले थे। आचार्य श्री गुणभद्र ने श्री चन्द्रप्रभ भगवान् को नमस्कार करते हुए लिखा है कि-

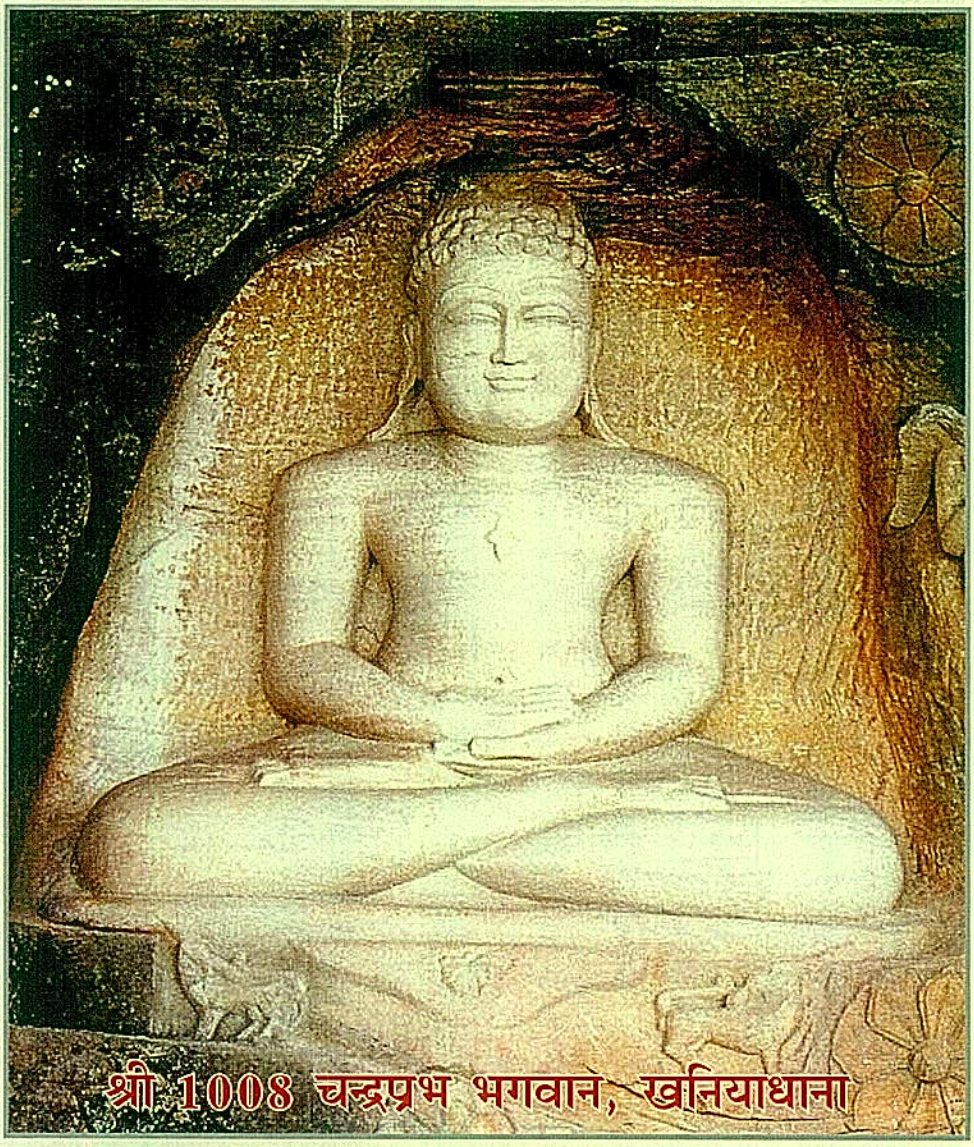

नीत्वैकवर्णतां सर्वां सभां यः प्रभया स्वया।
शुद्धितामनयच्छुद्धः, शुद्धयै चन्द्रप्रभोऽस्तु नः।।
देहप्रभेव वाग्यस्याह्लादिन्यपि च बोधिनी।
तन्नमामि नभोभागे सुरतारापरिष्कृतम्।।

अर्थात् जो स्वयं शुद्ध हैं जिन्होंने अपनी प्रभा के द्वारा समस्त सभा को एक वर्ण की बनाकर शुद्ध कर दी, वे चन्द्रप्रभ स्वामी हम सबकी शुद्धि के लिए हों। शरीर की प्रभा के समान जिनकी वाणी भी हर्षित करने वाली तथा पदार्थों को प्रकाशित करने वाली थी और जो आकाश में देवरूपी ताराओं से घिरे रहते थे उन चन्द्रप्रभ स्वामी को नमस्कार करता हूँ।

आचार्य श्री समन्तभद्र ने स्वयंभू स्तोत्र में उनकी स्तुति इस प्रकार की है-

चन्द्रप्रभं चन्द्रमरीचिगौरं चन्द्रं द्वितीयं जगतीव कान्तम्।
वन्देऽभिवन्द्यं महतामृषीन्द्रं जिनं जितस्वान्तकषायबन्धम्।।

अर्थात् मैं चन्द्रमा की किरणों के समान गौर वर्ण, संसार में दूसरे चन्द्रमा के समान सुन्दर, इन्द्र आदि बड़े-बड़े जनों के वन्दनीय, गणधरादि ऋषियों के स्वामी कर्म रूप शत्रुओं को जीतने वाले और अपने विकारी भाव स्वरूप कषाय के बन्धन को जीतने वाले चन्द्रमा के समान कान्ति के धारक चन्द्रप्रभ नामक अष्टम तीर्थंकर की वन्दना करता हूँ।

इस प्रकार महामहिमाशाली ७ तीर्थंकर श्री चन्द्रप्रभ भगवान् का चरित हम सबके लिए जानने योग्य है। जिन्होंने पहले श्रीवर्मा, फिर श्रीधरदेव, फिर अजितसेन, फिर अच्युत स्वर्ग के इन्द्र, फिर राजा पद्मनाभ और फिर अहमिन्द्र पद को प्राप्त किया; ऐसा पुण्यशाली जीव जिसने राजा पद्मनाभ की पर्याय में तीर्थंकर प्रकृति का बंध किया था वह जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र में चन्द्रपुर नामक नगर में इक्ष्वाकुवंश काश्यपगोत्री, वैभव सम्पन्न राजा महासेन की महारानी लक्ष्मणा (लक्ष्मीमती) के गर्भ में चैत्र कृष्ण पंचमी को आकर नौ माह पर्यन्त गर्भ में रह पौष कृष्ण एकादशी के दिन शक्र योग अनुराधा नक्षत्र में उत्पन्न हुआ। जन्म से ही यह बालक मति, श्रुत, अवधि; इन तीन ज्ञान का धारी था। जन्म के समय ही तीन लोक में अपूर्व शांति छा गयी। इधर सौधर्म इन्द्र का आसन कम्पायमान हुआ तो उसने जाना कि चन्द्रपुर में तीर्थंकर बालक का जन्म हुआ है। वह अपने समस्त वैभव एवं इन्द्रपरिकर के साथ ऐरावत हाथी को लेकर चन्द्रपुर में आया और अपनी शची से प्रसूतिगृह से तीर्थंकर बालक को मंगवाकर ऐरावत हाथी पर विराजमान कर सुमेरुपर्वत पर ले गया और वहाँ पाण्डुक शिला पर विराजमान कर क्षीरसागर के जल से भर १००८ कलशों से उनका अभिषेक किया। पश्चात् उनका नाम 'चन्द्रप्रभ' घोषित किया। उनका चिह्न अर्द्ध चन्द्रमा था। इन्द्र ने तीर्थंकर बालक चन्द्रप्रभ के सामने 'आनन्द' नामक नाटक किया और महान् हर्ष प्रकट किया। बाद में क्षमायाचनापूर्वक वह बालक माता-पिता

जीवन को उन्नत और ऊँचाई पर ले जाने के लिए धर्म ही एकमात्र साधन है।

को सौंप दिया।

इस जन्मोत्सव(जन्म कल्याणक महोत्सव) के मध्य इन्द्र ने माता-पिता के पुण्य की महिमा की सराहना की और रानी लक्ष्मणा से कहा कि आप बड़ी पुण्यशालिनी हैं जो तीर्थंकर को जन्म दिया। जो माता तीर्थंकर को जन्म देती है वह अपनी स्त्री पर्याय को सार्थक करती है।

सातवें तीर्थंकर श्री सुपार्श्वनाथ भगवान् के मोक्ष जाने के बाद नौ सौ करोड़ सागर का अन्तर बीत जाने पर तीर्थंकर भगवान् चन्द्रप्रभ उत्पन्न हुए थे। उनकी १०लाख पूर्व की आयु भी इसी में समाहित थी। उनका शरीर १५० धनुष ऊँचा, धवल वर्णी था। वे द्वितीया के चन्द्रमा की तरह बढ़ रहे थे। सारा संसार उनके आगे नतमस्तक था। उनके शरीर की कांति इस प्रकार थी मानो उन्हें अमृत से बनाया गया हो। उनकी द्रव्य लेश्या अर्थात् शरीर की कांति पूर्ण चन्द्रमा की कांति को जीतने वाली ऐसी सुशोभित होती थी। मानो बाह्य वस्तुओं को देखने के लिए अधिक होने से भाव लेश्या ही बाहर निकल आयी हो। अर्थात् उनका शरीर और भाव दोनों शुक्ल थे।

श्री चन्द्रप्रभ स्वामी ने ढाई लाख पूर्व कुमार काल व्यतीत किया, वैवाहिक सुखों का भोग किया। साढ़े छः लाख पूर्व और चौबीस पूर्वांग राज्य का उपभोग किया और अपने राजकीय कौशल से प्रजा का संरक्षण किया। एक दिन जब वे अपने महल में अपना मुख कमल दर्पण में देख रहे थे तभी बिजली कौंधी और क्षणभर में उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ मानो यह शरीर नश्वर है और इससे जो प्रीति की जाती है वह ईति के समान दुःख दायी है। उन्होंने विचार किया कि-

किं सुखं यदि न स्वस्मात्का लक्ष्मीश्चेदियं चला।
किं यौवनं यदि ध्वंसि किमायुर्यदि सावधि।
सम्बन्धो बन्धुभिः कोऽसौ चेद्वियोगपुरस्सरः।
स एवाहं त एवार्थास्तान्येव करणान्यपि।।
प्रीतिः सैवानुभूतिश्च वृत्तिश्चास्यां भवावनौ।
परिवृत्तमिदं सर्वं पुनः पुनरनन्तरम्।।
तत्र किं जातमप्येष्यत्काले किं वा भविष्यति।
इति जानन्नहं चास्मिन्मोमुहीमि मुहुर्मुहुः।।

(आचार्य गुणभद्र : उत्तरपुराण, श्लोक-२०५ से २०८)

अर्थात् वह सुख ही क्या है जो अपनी आत्मा से उत्पन्न न हो, वह लक्ष्मी ही क्या है जो चंचल हो, वह यौवन ही क्या है जो नष्ट हो जानेवाला हो, और वह आयु ही क्या है जो अवधि से सहित हो-सान्त हो। जिसके आगे वियोग होने वाला है; ऐसा बन्धुजनों के साथ समागम किस काम का? मैं वही हूँ, पदार्थ वही है, इन्द्रियाँ भी वही हैं, प्रीति और अनुभूति भी वही है, तथा प्रवृत्ति भी वही है किन्तु इस संसार की भूमि में यह सब बार-बार बदलता रहता है। इस संसार में अब तक क्या हुआ है और आगे क्या होने वाला है यह मैं जानता हूँ, फिर भी बार बार मोह को प्राप्त हो रहा हूँ; यह आश्चर्य है।

इस प्रकार विचार कर उन्होंने आत्मकल्याण के लिए जिन दीक्षा ग्रहण करने का निश्चय किया। उनके निश्चय को जानकर लोकांतिक देवों ने आकर उनके विचारों की अनुमोदना की। महाराज चन्द्रप्रभ ने अपना राज्यभार अपने सुपुत्र वरचन्द्र को सौंप दिया। अनन्तर वे दीक्षा हेतु वनगमन के लिए प्रवृत्त हुए। देवों और मनुष्यों ने उन्हें विमला नाम पालकी में विराजमान किया और सर्वर्तुक वन में ले गये। वहाँ उन्होंने दो दिन के उपवास का नियम लेकर पौष कृष्ण एकादशी के दिन अनुराधा नक्षत्र में एक हजार राजाओं के साथ नाग वृक्ष के नीचे निर्ग्रन्थ दीक्षा स्वीकार की। दीक्षा के साथ ही उन्हें मनःपर्यय ज्ञान प्राप्त हो गया।

दूसरे दिन वे मुनि चन्द्रप्रभ आहारचर्या हेतु नलिन नामक नगर में गये वहाँ राजा सोमदत्त ने उन्हें नवधा भक्तिपूर्वक उत्तम आहार दिया। वहाँ आकर वे पुनः ध्यानस्थ हो गये। उनका छद्मस्थकाल तीन माह रहा। इस प्रकार जिनकल्प मुद्रा के द्वारा तीन माह बिताकर दीक्षा वन में नाग वृक्ष के नीचे बेला का नियम लेकर स्थित हुए। फाल्गुन कृष्ण सप्तमी के सायंकाल अनुराधा नक्षत्र में उन्हें चन्द्रपुरी में चार घातिया कर्मों का नाश करने पर केवलज्ञान उत्पन्न हुआ। जिससे वे परमावगाढ़ सम्यग्दर्शन, अंतिम यथाख्यात चारित्र, क्षायिक ज्ञान, दर्शन तथा ज्ञानादि पाँच लब्धियाँ पाकर शरीर सहित सयोगकेवली जिनेन्द्र हो गये। उस समय वे सर्वज्ञ थे, समस्त लोक के स्वामी थे, सबका हित करने वाले थे, सबके एक मात्र रक्षक थे, सर्वदर्शी थे, समस्त इन्द्रों के द्वारा वन्दनीय थे और समस्त पदार्थों का उपदेश देने वाले थे। चौंतीस अतिशयों के द्वारा उनके विशेष वैभव का उदय प्रकट हो रहा था और आठ प्रातिहार्यों के द्वारा तीर्थंकर नाम कर्म का उदय व्यक्त हो रहा था। वे देवों के देव थे, उनके चरण कमलों को समस्त इन्द्र अपने मुकुटों पर धारण करते थे, अपनी प्रभा से उन्होंने समस्त संसार को आनन्दित किया था, तथा वे समस्त लोक के आभूषण थे। गति, जीव, समास, गुणस्थान, नय, प्रमाण आदि के विस्तार का ज्ञान कराने वाले श्रीमान् चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र आकाश में स्थित थे।

कुबेर के द्वारा निर्मित समोशरण की बारह सभाओं के मध्य अन्तरिक्ष में विराजमान सर्वज्ञ चन्द्रप्रभ ने तीर्थंकर प्रकृति के अनुरूप अपनी दिव्यध्वनि से संसार को मुनि एवं श्रावक धर्म का उपदेश दिया। जीव संरक्षण की भावना से युक्त प्रेरणाएं दीं और कर्त्तव्य मार्ग बताया। उनके समोशरण में दत्त आदि ९३ गणधर, दो हजार पूर्वधारी, आठ हजार अवधिज्ञानी, दो लाख चार सौ शिक्षक, दस हजार केवलज्ञानी, चौदह हजार विक्रिया ऋद्धिधारक मुनि, आठ हजार मनःपर्यय ज्ञान के धारक मुनि तथा सात हजार छः सौ वादी; इस प्रकार ढाई लाख मुनि थे। वरुणा आदि तीन लाख अस्सी हजार आर्यिकाएं, तीन लाख श्रावक, पाँच लाख श्राविकाएं थीं। असंख्यात देव-देवियां, संख्यात तिर्यंच उनकी सेवा-स्तुति करते थे। उनकी वाणी को सुनकर अपने भव को पवित्र करते थे।

भगवान् की दिव्यध्वनि में आया कि प्रत्येक वस्तु तत्त्व और अतत्त्व रूप अर्थात् अस्ति और नास्ति रूप है। आत्मा है, क्योंकि उसमें ज्ञान का सद्भाव है। कर्म रहने पर यह आत्मा संसार भ्रमण करती है और कर्म रहित होने पर सिद्धालय में विराजमान हो जाती है। द्रव्य का परिणमन गुणों से होता है, द्रव्य से गुण कभी अलग नहीं होते। इस प्रकार धर्म तीर्थ का प्रवर्तन करते हुए तीर्थंकर श्री चन्द्रप्रभ ने सम्मेदशिखर पहुँचकर एक हजार मुनियों के साथ प्रतिमा योग धारण कर फाल्गुन शुक्ल सप्तमी के दिन ज्येष्ठा नक्षत्र में सायंकाल के समय योगनिरोध कर खडगासन से निर्वाण पद को प्राप्त किया। इन्द्र ने निर्वाणकल्याणक महोत्सव मनाया और तीर्थंकर श्री चन्द्रप्रभ भगवान् की जय-जयकार की। उनके कल्याणक क्षेत्र और जिनबिम्ब आज भी अतिशयकारी एवं पूजनीय हैं।

हमारा धर्म कथनी प्रधान नहीं, करनी प्रधान है।

सात सौ जैन मुनियों की रक्षा का प्रतीक - रक्षा बंधन पर्व (वात्सल्य पूर्णिमा)

- राजकुमार जैन, इटारसी

भारतीय पर्वों की श्रृंखला में पावन पर्व रक्षा बंधन का महत्वपूर्ण स्थान है। यह पर्व भारतीय जन जीवन में भ्रातृत्व, प्रेम एवं सौहार्दपूर्ण स्नेह की पवित्र निर्मलधारा को प्रवाहित करता है। भगिनी द्वारा भ्राता के हाथ में बांध गया पावन रक्षा सूत्र अबला की रक्षा का प्रतीक बन जाता है और भ्राता अपने कर्तव्य के प्रति सदैव सजग रूप से रक्षा सूत्र की आन का निर्वाह जीवनपर्यन्त करता है। अतः यह मात्र भौतिक बंधन ही नहीं है, अपितु भावना पूर्ण स्नेहसिक्त हृदय बंधन है।

जैन धर्म में रक्षा बंधन पर्व का अपना विशेष महत्व है। जैन धर्म में रक्षा बंधन का लौकिक महत्व उतना नहीं है, जितना धार्मिक महत्व है। अतः यह पर्व मनुष्य को आध्यात्मिक अभ्युत्थान हेतु विशेषतः प्रेरित करता है। जैन धर्म में इस पर्व से संबंधित एक कथा विशेष का उल्लेख मिलता है जिसका धार्मिक दृष्टि से बड़ा महत्व है। कथा का प्रमुख अंश निम्न प्रकार है :-

एक बार सात सौ जैन मुनियों पर घोर उपसर्ग हुआ और समस्त मुनि संघ पर भीषण संकट छा गया। तब मुनिश्री विष्णु कुमार ने अपनी विक्रिया ऋद्धि द्वारा संघ पर हो रहे उपसर्ग को शांत किया और सात सौ मुनियों की रक्षा की। तब ही से यह पर्व जैन समाज द्वारा रक्षा पर्व के रूप में मनाया जाने लगा। घटना प्रसंग का प्रारम्भ तब से होता है जब जैन धर्म के उन्नीसवें तीर्थंकर भगवान मल्लिकुमार के शासन काल में उज्जयिनी नगरी में श्री वर्मा नामक राजा राज्य करता था। राजा विद्वान, गुणी और धर्मात्मा था। उसके राज्य संचालन में परामर्श देने वाले एवं सहायता करने वाले बलि, बृहस्पति, प्रह्लाद और नमूचि नामक चार बुद्धिमान एवं पराक्रमी मंत्री थे। ये चारों मंत्री यद्यपि योग्य एवं गुणी थे, किन्तु जैन धर्म के प्रति उनका कट्टर विरोध था, जबकि राजा जैन धर्मानुयायी था।

एक बार उज्जयिनी में सात सौ जैन मुनियों का विशाल संघ विचरण करता हुआ आया। उस समय संघ का नेतृत्व श्री अकम्पनाचार्य जी कर रहे थे। नगर में संघ के पदार्पण का समाचार सुनते ही नगरवासीजन पूजन द्रव्य लेकर उनके दर्शन हेतु जाने लगे। राजा को भी जब यह समाचार ज्ञात हुआ तो उन्होंने भी मुनिवरों के दर्शन लाभ लेने की इच्छा से मंत्री सहित वहां जाने का निश्चय किया। मंत्रियों को भी अनिच्छा पूर्वक राजा के साथ जाना पड़ा।

संघ के नायक श्री अकंपनाचार्य द्वादशांग के पाठी एवं निमित्त ज्ञानी थे। निमित्त ज्ञान से किसी अनिष्ट प्रसंग का ज्ञान कर उन्होंने संघ के समस्त मुनियों को आदेश दिया कि राजा के साथ जब मंत्रिगण दर्शनार्थ यहां आवें तब कोई भी उनके साथ किसी प्रकार का वाद-विवाद अथवा शास्त्रार्थ न करे, अन्यथा समस्त संघ पर महान संकट आने की आशंका है। आचार्यश्री के आदेश को समस्त मुनियों ने शिरोधार्य किया। अतः जब राजा और मंत्रीगण दर्शनार्थ वहां आए उस समय आचार्यश्री की आज्ञानुसार समस्त मुनिवर मौन धारण कर आत्मध्यान में लीन हो गए। ध्यानस्थ मुनियों की उपशांत मुद्रा को देखकर राजा को अत्यन्त हर्ष हुआ। किन्तु मंत्रियों का अंतःकरण कुटिल भावों से भर गया। अतः जब वे नगर की ओर लौट रहे थे तब मंत्रियों ने मुनियों की निंदा करते हुए राजा से कहा- "देखा राजन्! कितने ढोंगी हैं ये सब मुनिगण, आपके पहुंचने पर ध्यान का ढोंग करके चुपचाप बैठे रहे, ताकि आपके सामने उनकी पोल न खुल जाय।

राजा किन्हीं दूसरे विचारों में निमग्न था। अतः मंत्रियों की बात पर उसने कोई विशेष ध्यान नहीं दिया। मंत्रियों ने राजा के मौन को अपनी बात का समर्थन समझा और वे मुनि निंदा हेतु अधिक प्रोत्सा. हुए।

उसी समय सामने से श्रुतसागर नामक एक मुनिराज आ रहे थे जो नगर में आहार ग्रहण करने हेतु गए थे। उन्हें आचार्यजी के आदेश के विषय में ज्ञात नहीं था। अतः वे निर्विकार भाव से बिना किसी अनिष्ट की आशंका के चले आ रहे थे। सामने से आते हुए मुनिराज को देखकर मंत्रियों का मन पुनः कुटिल भावों से भर गया और उन्होंने मुनिराज की निंदा करते हुए राजा से कहा- 'देखिये, राजन्! यह मुनि अपना उदरपूरण कर बैल की तरह चला आ रहा है।'

मुनिराज ने मंत्रियों के वचन सुने, किन्तु वे शांत रहे और किसी भी प्रकार का विकार अपने अंतःकरण में उत्पन्न नहीं होने दिया। पुनः मंत्रियों ने मुनिराज के समक्ष ही संघ के प्रति भी निंदा वचन कहे। जिसे सुनकर मुनिराज विचलित हुए बिना नहीं रह सके। वे उन निंदा वचनों को सहन न कर सके। उन्हें आचार्यश्री द्वारा प्रदत्त आज्ञा के विषय में ज्ञान नहीं था। अतः उन्होंने मंत्रियों को संबोधित करते हुए कहा- 'तुम्हें अपनी विद्या का मिथ्याभिमान है। यदि यथार्थ विद्या के धारक हो तो मेरे साथ शास्त्रार्थ कर अपने यथार्थ ज्ञान का प्रदर्शन करो। तब ही वास्तविकता ज्ञात हो सकेगी।

मुनिवर के वचन सुनकर मिथ्याभिमानी मंत्रियों को तत्काल क्रोध आ गया और वे तत्क्षण मुनिराज के साथ शास्त्रार्थ करने के लिए तैयार हो गए। किन्तु मुनिराज के यथार्थ ज्ञान के समक्ष मंत्रियों का मिथ्या ज्ञान क्षण भर भी टिक न सका और वे निरुत्तर हो गए। जिस प्रकार एक ही दिनकर का अबाधित प्रकाश चतुर्दिक में व्याप्त अंधकार को दूर कर देता है, उसी प्रकार श्रुतसागर मुनिराज ने अनेकांतवाद के युक्तिबल से क्षण मात्र में उन मंत्रियों के मिथ्याभिमान एवं मिथ्या ज्ञान रूप तम को निरस्त कर उन्हें निरुत्तर कर दिया। राजा के समक्ष निरुत्तर एवं अपमानित हुए वे मंत्री उस समय तो विष का घूंट पीकर राजा के साथ चल दिए। किन्तु उनके मन में प्रतिशोध की तीव्र भावना जागृत हो उठी और इसके लिए वे उचित अवसर एवं उपाय खोजने लगे। साथ ही सब तरह से वे अपने आपको असहाय सा अनुभव करने लगे।

धन साधन है साध्य नहीं। जैसे नाव को चलाने के लिए सरोवर में जल।

इधर जब मुनि श्रुतसागर ने अपने संघ में आकर आचार्यश्री को सम्पूर्ण वृत्तान्त सुनाया तो वे संघ पर आने वाले भावी संकट के निवारण हेतु उपाय खोजने लगे। अंत में उन्होंने श्रुतसागर मुनि से कहा-'यह तो ठीक नहीं हुआ। अब तो निश्चित रूप से संघ पर कोई भारी विपत्ति आने की आशंका है। अस्तु जो घटित हो चुका है उसका अनुचिंतन न कर अब सम्पूर्ण संघ की रक्षा के लिए तुम उसी स्थान पर जाकर कायोत्सर्ग ध्यान में स्थित हो जाओ।'

आचार्य देव की आज्ञा को शिरोधार्य कर मुनि श्रुतसागर अविचलित भाव से समस्त मुनिसंघ की रक्षा हेतु वहां से चलकर शास्त्रार्थ वाले स्थान पर आकर सुमेरू पर्वत के समान निश्चलता के साथ धैर्यपूर्वक कायोत्सर्ग ध्यान में लीन हो गए।

इधर अपमानित एवं पराजित हुए मंत्री अपने मानभंग का प्रतिशोध लेने के उद्देश्य से रात्रि में मुनिराज का वध करने हेतु नगर के बाहर आए। मार्ग में शास्त्रार्थ वाले स्थान पर ही मुनिवर को ध्यानस्थ देखकर उनकी प्रसन्नता की सीमा नहीं रही। परस्पर मंत्रणा करने के पश्चात उन्होंने निर्णय किया और बोले- 'यही दुष्ट हमारा अपमान करने वाला है। अतः पहले इसे यहीं समाप्त कर देना चाहिए।'

ऐसी विकृत और दुष्ट भावना से प्रेरित होकर चारों मंत्रियों ने मुनि के भिन्न-भिन्न अंग छेद करने के उद्देश्य से एक साथ खड्ग उठाई और मुनिराज पर प्रहार किया। किन्तु मुनिराज के पूर्वजन्मकृत पुण्य प्रभाव से वहां वनदेवी प्रकट हुई और उन्होंने चारों दुष्ट मंत्रियों को तत्काल वहीं कीलित कर दिया। अर्थात कील की भाँति वे अपनी यथावत मुद्रा और स्थिति में वहीं गड़ गए और रातभर टस से मस न हो सके। ऐसा प्रतीत होता था मानो वहां चार मूर्तियां स्थापित कर दी गई हों।

प्रातःकाल नगरवासी जन जब वहां से निकले तो ध्यानस्थ मुनिराज एवं खड्ग उठाए हुए चारों कीलित मंत्रियों को देखकर उनके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। मंत्रियों की दुष्टता की बात क्षण मात्र में सारे नगर में फैल गई। सारे नगरवासी इस अभूतपूर्व दृश्य को देखने के लिए उमड़ पड़े। समाचार सुनकर राजा स्वयं भी वहां पहुंचा। कुछ देर बाद जब वन देवी का प्रभाव समाप्त हुआ और चारों मंत्री पुनः अपनी स्वाभाविक स्थिति में आ गए तो लज्जा के कारण नगर वासियों एवं राजा के समक्ष अपना सिर ऊँचा न कर सके। राजा ने उन्हें धिक्कारते हुए कहा- 'धिक्कार है तुम्हें! तुम लोग इन निर्दोष मुनिराज का वध करने आए थे। ऐसे पापियों एवं दुष्ट लोगों के लिए मेरे नगर में कोई स्थान नहीं है।

इतना कहकर राजा ने उन चारों मंत्रियों को गधे पर बैठाकर नगर के बाहर निकाल दिया। वहां से अपमानित व लज्जित होकर निकले हुए वे चारों मंत्री हस्तिनापुर की ओर चल दिए। मुनि संघ का उपद्रव शांत हुआ जानकर समस्त मुनियों ने अपना ध्यान समाप्त किया और श्री अंकपनाचार्य देव अपने सात सौ मुनियों के संघ सहित वहां से विहार करते हुए चल दिए।

जिस समय यह घटना घटित हुई उस समय हस्तिनापुरी में पद्म राजा राज्य का संचालन करते थे। किन्तु उस समय वे अपने पड़ोसी राजा सिंहबल से बहुत परेशान थे। इधर उज्जयिनी से निष्कासित चारों मंत्रियों ने अपने बुद्धि कौशल से सिंहबल को कैदकर उसे पद्म राजा के समक्ष प्रस्तुत किया। इससे पद्म राजा उन मंत्रियों पर अत्यन्त प्रसन्न हुआ और अपनी मंत्रि परिषद में उन्हें स्थान दे दिया। साथ ही यथेच्छ वस्तु मांगने का वचन भी दिया। मंत्रियों ने किसी उपयुक्त समय पर भविष्य में वचन लेने का निवेदन कर उस वचन को भविष्य के लिए सुरक्षित करा लिया।

उधर श्री अंकपनाचार्य भी अपने सात सौ मुनियों के संघ सहित विहार करते हुए कुछ दिनों बाद हस्तिनापुरी में पधारे और वहीं नगर से बाहर एक उद्यान में चातुर्मास योग धारण किया। प्रजाजन अत्यन्त उत्साहपूर्वक उनकी वंदना करने लगे। श्री अंकपनाचार्य के संघ का आगमन सुनते ही बलि आदि चारों दुष्ट मंत्री उज्जयिनी में हुए अपने घोर अपमान का प्रतिशोध लेने के लिए उपाय खोजने लगे। किन्तु वे जानते थे कि पद्म राजा मुनियों का परम भक्त है। अतः उनके समक्ष अपना वश नहीं चल सकेगा। उसी समय बलि को राजा द्वारा दिए गए अपने पूर्व वचन का स्मरण हो गाया और वह अपने सहयोगियों से बोला-'चिंता मत करो, राजा ने हमें जो वचन दिया था उसके बदले हम सात दिन का राज्य मांग लें। बस, शासन हमारे हाथ में आने पर राजा हमारे कार्य में हस्तक्षेप नहीं कर पाएगा।

ऐसा विचार कर वे चारों दुष्ट मंत्री राजा के पास गए और अपने पूर्व वचन का स्मरण दिलाते हुए उसके बदले में सात दिन का राज्य मांग लिया। यह सुनते ही राजा स्तब्ध रह गया। उसे किसी अनर्थ की आशंका हुई। किन्तु वचनबद्ध होने के कारण वह विवश था। सात दिन के लिए शासन की बागडोर दुष्ट मंत्रियों के हाथ में चली गई।

शासन हाथ में आते ही चारों दुष्ट मंत्रियों ने एक महान यज्ञ के बहाने मुनिसंघ पर घोर महान उपसर्ग प्रारम्भ कर दिया। जहां पर मुनिसंघ विराजमान था वहीं उनके चारों तरफ एक यज्ञ मण्डप की रचना कर उसमें चारों तरफ लकड़ियों के ढेर लगवा दिए। उसमें भीषण अग्नि प्रज्ज्वलित करके उसमें पशुओं का होम करना प्रारम्भ कर दिया। यज्ञ का धुँआ और पशु होम की दुर्गन्ध से मुनिसंघ को असह्य वेदना और कष्ट झेलना पड़ा। इस प्रकार उन्होंने मुनि संघ को घोर कष्ट दिया। इतना कष्ट होने पर भी शांत मुद्रा धारण कर मुनिवर अत्यन्त धैर्यपूर्वक कष्ट को सहन करते हुए सुमेरु सदृश निश्चल चित्त से निर्विकार भावयुक्त आत्मध्यान में लीन हो गए। उनके मन में कष्ट देने वालों के प्रति किंचित मात्र भी क्रोध या प्रतिशोध की भावना जागृत नहीं हुई। इस कष्ट को वे अपना पूर्वजन्मकृत अशुभ कर्म का फल मान रहे थे। अतः निर्विकार भाव से उसे वे सहन कर रहे थे।

हस्तिनापुरी में जब यह घटना घट रही थी तब मुनिश्री विष्णु कुमार के गुरु श्रुतसागरजी महाराज मिथिला नगरी में विराजमान थे। वे निमित्त ज्ञान (ज्योतिष आदि) के ज्ञाता थे। आकाश में अचानक श्रवण नक्षत्र को कांपता हुआ देखकर उनके मुख से अचानक 'हा' शब्द निकला। गुरुमुख से यह उद्गार शब्द सुनकर पुष्पदंत नामक एक क्षुल्लक ने इसका कारण पूछा। मुनिराज ने कहा - हस्तिनापुरी में अकंपनाचार्य आदि 700 मुनियों पर पापी बलि द्वारा घोर उपसर्ग किया जा रहा है।'

गुरुमुख से यह सुनते ही पुष्पदंत क्षुल्लक के हृदय में संघ के प्रति वात्सल्य भाव उमड़ आया। उन्होंने करुणार्द्र होकर गुरु जी से उपसर्ग निवारण का उपाय पूछा। मुनिराज ने बतलाया कि विष्णु कुमार मुनि को विक्रिया ऋद्धि प्रकट हुई है और उस ऋद्धि के प्रभाव से वे उपसर्ग को शांत कर मुनिसंघ की रक्षा कर सकते हैं।

क्षुल्लक पुष्पदंत तत्काल ही विष्णुकुमार मुनि के पास पहुंचे और श्री गुरु जी द्वारा बतलाई गई सम्पूर्ण घटना उन्हें कह सुनाई। विष्णु कुमार मुनि को तो अपनी विक्रिया ऋद्धि का आभास नहीं था। पुष्पदंत द्वारा ज्ञात होने पर परीक्षा के लिए उन्होंने अपना हाथ बढ़ाया तो कहीं भी रुके बिना वह काफी दूर तक चला गया। मुनिसंघ पर हो रहे उपसर्ग का समाचार सुनकर वे तत्क्षण हस्तिनापुर पहुंचे। वहाँ उन्होंने अपने भ्राता राजा पद्म से बोले- 'अरे बंधु' तुम्हारे राज्य में मुनियों पर यह उपसर्ग और अत्याचार कैसा?

राजा पद्म विष्णु कुमार मुनि के चरणों में गिर पड़े और अश्रुप्लवित नेत्रों से उनकी ओर देखते हुए तथा अपनी निःसहाय अवस्था बतलाते हुए करुणा भाव से बोले- प्रभो! राज्य सत्ता मेरे हाथ में नहीं है। दुष्ट बलि ने मुझे वचनबद्ध करके शासन की बागडोर अपने हाथ में ले ली है। अतः मैं विवश हूँ। भगवन्! आप महासमर्थ हैं। अतः आप ही इस उपसर्ग को किसी तरह दूर करके शीघ्र मुनिसंघ की रक्षा का उपाय कीजिये।

वात्सल्य भाव प्रधान मुनिश्री विष्णु कुमार ने अपना मुनित्व छोड़कर विक्रिया ऋद्धि से बौने ब्राह्मण का वेश बनाया और यज्ञ मण्डप में जाकर सुमधुर वचनों से बलि को प्रसन्न कर दिया। प्रसन्न होकर राजा बलि ने ब्राह्मण से कहा- महाराज! आप हमारे यहां पधारे हैं- यह हमारा सौभाग्य है। आप जो चाहें निःसंकोच मांग लें।'

बौने ब्राह्मण के भेष में मुनि विष्णु कुमार ने कहा- 'मैं सब बातों से संतुष्ट हूँ। मुझे किसी भी वस्तु की आवश्यकता नहीं है।'

किन्तु राजा बलि ने जब विशेष आग्रह किया तो अनिच्छापूर्वक ब्राह्मण वेशधारी मुनि विष्णुकुमार ने कहा- ठीक है। यदि आपका इतना ही आग्रह विशेष है तो मुझे तीन डग भूमि दे दीजिये।'

यह सुनकर राजा बलि को अत्यधिक आश्चर्य हुआ। साथ ही ब्राह्मण के निष्काम भाव को देखकर अत्यधिक प्रभावित भी हुआ। उसने ब्राह्मण को तीन डग भूमि देने का वचन दिया और बोला- महाराज! आप जहां चाहें, वहां अपने पैरों से तीन डग भूमि नाप लें।

राजा बलि के द्वारा वचन देने के साथ ही मुनि विष्णुकुमार ने अपना बौनापन त्यागकर विक्रिया ऋद्धि के द्वारा अपने स्वरूप को बढ़ाना प्रारम्भ कर दिया। ब्राह्मण के बढ़ते हुए स्वरूप को देखते हुए राजा बलि आश्चर्य से किंकर्तव्य विमूढ़ हो गया। मुनि विष्णु कुमार ने अपने पैरों को फैलाते हुए कहा- अरे दुष्ट! देख, मेरा एक पैर तो मेरू पर है और दूसरा पैर मानुषोत्तर पर। बोल, अब तीसरा पैर कहां रखूं?

विष्णु कुमार की इस विक्रिया से पृथ्वी पर चारों ओर कोलाहल मच गया। देवगण भी आश्चर्य चकित होकर वहां आए और दुष्ट बलि को बांध कर विष्णु कुमार की स्तुति करते हुए कहने लगे- प्रभो, क्षमा कीजिये। यह दुष्ट बलि का दुष्कृत्य है। वह आपके चरणों में उपस्थित है। कृपा कर अपनी विक्रिया को समेट लीजिये।

बलि आदि चारों मंत्री भी विष्णु कुमार के चरणों में गिर पड़े और अपने घोर अपराध के लिए बारम्बार क्षमा याचना करने लगे। उन्होंने अपने दुष्कृत्य के लिए पुनः-पुनः पश्चाताप किया। तत्काल ही अकंपनाचार्य आदि सात सौ मुनियों का घोर उपसर्ग समाप्त हो गया। मुनिश्री विष्णु कुमार ने अपनी विक्रिया समेट ली और चारों ओर शांति छा गई। राजा पद्म, चारों मंत्रिगण एवं नगरवासी, समस्त प्रजाजन अत्यन्त भक्तिपूर्वक मुनियों की वंदना करने लगे। चारों मंत्रियों ने उनके चरणों में गिरकर घोर अपराध के लिए क्षमा याचना की और अपने द्वारा किए गए दुष्कृत्यों के लिए पश्चाताप करने लगे। इतना ही नहीं, उन्होंने हिंसामय मिथ्यामत का परित्याग कर जैनधर्म ग्रहण कर लिया और उसी के उपासक बन गए।

इस प्रकार मुनिसंघ पर हो रहे उपसर्ग के दूर होने के कारण तथा सात सौ मुनियों की रक्षा होने के कारण वह अलौकिक दिवस 'रक्षा दिवस' के नाम से कहलाया जाने लगा और प्रतिवर्ष श्रावण शुक्ला 15 (पूर्णिमा) को वात्सल्य पूर्णिमा -रक्षा पर्व (रक्षा बंधन) के रूप में मनाया जाने लगा। तब से लेकर आज तक जैन धर्मानुयायियों द्वारा प्रतिवर्ष यह पर्व अत्यन्त हर्ष और उल्लास के साथ धार्मिक रूप में मनाया जाता है। इस पर्व के द्वारा वे असहायों की रक्षा के प्रति अपने कर्तव्य को समझते हैं और हिंसामय कृत्यों का परित्याग कर अहिंसा को जीवन में आत्मसात करने का प्रयत्न करते हैं।

श्रावण शुक्ल 15 (पूर्णिमा) के दिन आज भी जैन मंदिरों में 'रक्षा-सूत्र' रखे जाते हैं। जैन श्रावक (गृहस्थ) मंदिरों में जाकर पहले देव दर्शन करते हैं, पश्चात अत्यन्त श्रद्धा एवं भक्ति के साथ रक्षा-सूत्र को पवित्रता से ग्रहण कर दाहिने हाथ की कलाई में बांध लेते हैं। ताकि उन मुनिवरों की भाँति उनकी भी विविध कष्टों एवं अनिष्टों से रक्षा हो सके।

सरलता, सादगी और सद्भावना ही जीवन का सही धर्म है।

सोलहकारण पर्व

संकलनकर्ता : **सुशीला पाटनी**
आर. के. हाऊस, किशनगढ़

प्रतिवर्ष सोलहकारण पर्व भाद्रपद कृष्णा प्रतिपदा से प्रारम्भ होकर आश्विन कृष्णा प्रतिपदा तक मनाया जाता है। सामान्यतः यह पर्व 31 दिन का होता है।

इस पर्व में सोलहकारण भावनाओं का चिन्तन किया जाता है। शास्त्रों में 16 भावनायें कही गई हैं। इन भावनाओं से तीर्थंकर नामकर्म प्रकृति का बंध होता है। इस कर्मप्रकृति के उदय से समवशरण एवं पंचकल्याणक रूप विभूति प्राप्त होती है।

भावनाओं का संक्षिप्त विवेचन इस प्रकार है : –

1. **दर्शनविशुद्धि** :– इस भावना का होना आवश्यक है। क्योंकि इसके न होने पर और शेष सबके अथवा कुछ के होने पर भी तीर्थंकर प्रकृति का बंध नही होता है। दर्शन शब्द का अर्थ है यथार्थ श्रद्धान अर्थात् जिनेन्द्रदेव द्वारा बताये गये मार्ग का 25 दोषों से रहित और अंगो से सहित पूर्ण श्रद्धान करना ही दर्शन विशुद्धि भावना है।
2. **विनयसम्पन्नता** :– सम्यदर्शन, ज्ञान, चारित्र एवं वीर्य की, इनके कारणों की तथा इनके धारकों की विनय करना तथा आयु में ज्येष्ठ जनों का यथायोग्य आदर करना विनय सम्पन्नता कहलाती है।
3. **शीलव्रतेषु अनतिचार** :– अहिंसा आदि पाँच व्रत हैं तथा इनका क्रोधादि कषायों से रहित पालन करना शील कहलाता है। व्रत और शीलों का निर्दोष रीति से पालन करना ही शीलव्रतेशु अनतिचार है।
4. **अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग** :– सदैव ज्ञानाभ्यास में लगे रहना अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग है। जो व्यक्ति निरन्तर धार्मिक ज्ञानाभ्यास करता है, उसके हृदय में मोह रूपी महान् अन्धकार निवास नहीं करता है।
5. **अभीक्ष्ण संवेग** :– सांसारिक विषय भोगों से डरते रहना अभीक्ष्ण संवेग है।
6. **शक्तितः त्याग** :– अपनी शक्ति को न छिपाते हुए आहार, औषधि, अभय, उपकरण आदि का दान देना शक्तितः त्याग है।
7. **शक्तितः तप** :– अपनी शक्ति को न छिपाकर मोक्षमार्ग में उपयोगी तपानुष्ठान करना शक्तितः तप है।

8. **साधु समाधि** :– दिगम्बर साधु के तप में उपस्थित आपत्तियों का निवारण करना तथा उनके संयम की रक्षा करना, साधु समाधि है।
9. **वैयावृत्यकरण** :– गुणी पुरूषों की साधना में आने वाली कठिनाइयों को दूर करने का प्रयत्न करना एवं उनकी सेवा सुश्रूषा करना, वैयावृत्यकरण है।

10-13. **अर्हत्भक्ति, आचार्यभक्ति, बहुश्रुतभक्ति, प्रवचन भक्ति** :– अरिहन्त–आचार्य–बहुश्रुत–प्रवचन (शास्त्र) इन चारों में शुद्ध निष्ठापूर्वक अनुराग रखना ही अरिहन्त–आचार्य–बहुश्रुत–प्रवचन भक्ति है। बहुश्रुत का अर्थ उपाध्याय है। प्रवचन का अर्थ जिनवाणी है।

14. **आवश्यकापरिहाणि** :– सामायिक, चतुर्विंषतिस्तव, वन्दना, प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान और कायोत्सर्ग। इन छह आवश्यक क्रियाओं को यथाकाल अविच्छिन्न रूप से करते रहना आवश्यकापरिहाणि है।
15. **मार्गप्रभावना** :– अपने श्रेष्ठ ज्ञान और आचरण से मोक्षमार्ग का प्रचार–प्रसार करना मार्गप्रभावना है।
16. **प्रवचनवत्सलत्व** :– गाय के बछड़े की तरह साधर्मी जनों से निच्छल–निष्काम स्नेह रखना प्रवचन वत्सलत्व है।

इस तरह कहा जा सकता है कि ये सोलहकारण भावनायें संसार मार्ग से मोक्ष मार्ग की ओर ले जाने वाली हैं। कहा भी है – "भावना भवनाशिनी"। तीर्थंकर प्रकृति के बंध के लिये इनमें से प्रथम दर्शन विशुद्धि भावना का होना अनिवार्य है। अन्य 15 में से कोई भी चल सकती है। अतः हमें अपने मन में यह भावना अवश्य ही भानी चाहिये कि उपर्युक्त सोलह कारण भावनाओं को भाकर शीघ्र ही तीर्थंकर पद की प्राप्ति हो।

धर्म विपत्तियों में मुस्कुराना सिखलाता है।

क्षमा की क्षमता

–डा0 सुनील जैन 'संचय', ललितपुर

क्षमावणी का पर्व सौहार्द, सौजन्यता और सद्भावना का पर्व है। आज के दिन एक दूसरे से क्षमा मांगकर मन की कलुषता को दूर किया जाता है।

मानवता जिन गुणों से समृद्ध होती है उनमें क्षमा प्रमुख और महत्वपूर्ण है। क्षमा न हो , तो आदमी को पशुता की खाई में गिरते देर न लगेगी। पश्चिमी विचारक ज्यां पाल सार्त्र का कहना था कि मनुष्य पशु ही पैदा होता है क्षमा उसे आदमी बनाती है, इसमें शक की गुंजाइश नहीं। क्षमा के अभाव में जीवन रक्त–रंजित और धरती वध मंच हो जाएगी। सर्वत्र जंगल का राज कायम हो जायेगा। हर कोई अपने से कम शक्तिमान के खात्में का कारण बन जाएगा। जंगल के राज में जाहिर है कि आदमीयत की तलाश नहीं की जा सकती। क्षमा इसी जंगली राज के हर असर को मिटाती है और आदमी को उसके आदमी होने की गरिमा से भरती है।

इसलिए आदमी से जुड़े जितने भी धर्म धरती पर विकसित हुए हैं, सबमें क्षमा को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। अन्य मुद्दों पर परस्पर खंडन–मंडन और प्रतिवाद में रत रहने–वाले विभिन्न धर्म संस्थाओं में जिन मुट्ठी भर मुद्दों पर मतैक्य है, उनमें क्षमा की एक है। सभी धर्म–परंपराओं ने क्षमा के महत्व को न केवल स्वीकार किया है, बल्कि उसे मानव समाज में आम और वृहत्त करने के लिए भी तमाम उपास किये हैं।

क्षमावणी पर्व हमारी वैमनसता, कलुषता, बैर–दुश्मनी एवं आपस की तमाम प्रकार की टकराहटों को समाप्त कर जीवन में प्रेम, स्नेह, वात्सल्य, प्यार, आत्मीयता की धारा को बहाने का नाम है। हम अपनी कषायों को छोड़ें, अपने बैरों की गांठों को खोलें, बुराइयों को समाप्त करें, बदले, प्रतिशोध की भावना को नष्ट करें, नफरत–घृणा, द्वेष बंद करें, आपसी झगडों, कलह को छोड़ें।

भारत की प्राचीन श्रमण संस्कृति की अत्यंत महत्वपूर्ण जिन–परंपरा ने तो क्षमा को पर्व के रूप में ही प्रचलित किया है। जैनों के प्रमुखतम पर्व में 'क्षमापर्व' है। इसे क्षमावणी भी कहते हैं। पर्यूषण पर्व के तुरंत बाद यह पर्व मनाया जाता है। पर्यूषण दरअसल एक पर्व–अवधि है, दस दिनों तक चलने वाले पर्व की एक श्रृखंला है, जिसके दौरान क्षमा को आचरण की सभ्यता के रूप में ढाला जाता है। जैनों के सभी संप्रदायों में इसकी समान मान्यता है।

सिर्फ इस पर्व–अवधि के दौरान ही नहीं, बल्कि जिन–परंपरा में वर्ष भर क्षमा का जीवन जिया जाता है। अंतिम तीर्थंकर हैं महावीर स्वामी। उनके 'अनेकांत' यानी सत्य को अनेक रूपों और अन्तों में मानने की विचारणा से टकराव की प्रवृत्ति का निराकरण हुआ तथा अहिंसा को व्यावहारिक जीवन में कियान्वित किया जा सकना मुमकिन हो पाया। इस स्थिति ने 'जियो और जीने दो' की भावना का आधार है। क्षमी इसी भावना का आधार है। वह अहिंसा को व्यावहारिक रूप से सक्षम बनाती है और टकराव की हर आशंका का सिर उठाने से पहले ही समाधान कर देती है।

क्षमावणी पर्व तो हम सभी के हद्रय में मैत्री पुष्प खिलान आता है, मनोमालिन्य को मिटाने आता है, बैरभाव की ग्रंथियां तोड़ने आता है। ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' की उक्ति वास्तव में क्षमा पर्व जैसे आयोजनों में ही चरितार्थ होते दिखती है। क्षमावाणी पर्व हमें ''आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्'' की शिक्षा प्रदान करता है। क्षमावणी के पावन पर्व पर ''सत्वेषुमैत्री' और मैत्री भाव जगत में मेरा सब जीवों से नित्य रहे' जैसी पंक्तियों को चरितार्थ होते देखा जा सकता है। हमें यह पर्व सद्भावना का संदेश देता है। यह पर्व 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तुः निरामयाः'' की भावना भाने की प्रेरणा प्रदान करता है।

इस समय विश्व में अति–प्रभावों और अल्प प्रभावी कुल करीब तीन सौ धर्म–संगठन हैं, जिनमें से सिर्फ जिन–मत ने ही न केवल क्षमा को पर्व के रूप में आंका, बल्कि इस बारे में वैज्ञानिक रीति से अध्ययन अनुशीलन भी किया है। जैन–परंपर. ने क्षमा को क्रोध का विधायक रूपांतरण माना है। निश्चित ही क्रोध एक ऊर्जा है, जो अन्य तमाम ऊर्जा–रूपों की तरह हर प्राणी में अन्तर्निहित होती है। किसी–न किसी बहाने से इस ऊर्जा का जब आक्रोश या हिंसक भावना की शक्ल में निस्सरण होता है, तब वह क्रोध है। क्रोध की यह ऊर्जा नकारात्मक होती है, पर जब यही विधायक दिशा में मुड़ जाती है, तब उसका रूपांतरण हो जाता है और यही क्षमा के रूप में जीव–जगत पर बरस पड़ती है। इसीलिए जैनों में क्षमा अर्जित नहीं की जा सकती, बल्कि आचरण की सभ्यता और सम्यक्दर्शन व सम्यक् चारित्र से अपने भीतर रूपांतरित की जाती है। क्षमा और क्रोध में ऊर्जा एक ही है, सिर्फ उनकी दिशाओं का फर्क है।

क्षमा हमारे खुद के लिए है, भले ही दूसरा व्यक्ति उसे मांगे या नहीं, वह अपनी भूल स्वीकारे या नहीं। परन्तु हममें से हर एक के लिए क्षमा स्वयं के लिए है। क्षमा हमें कमजोर बनाती है

जीवन की सच्चाई भविष्य की परछाई होती है।

यह भ्रम है। क्षमा तो वीरों का आभूषण है, इसमें हमें स्वयं की निजी शक्ति–साहस का ज्ञान होता है। असल में यह क्षमा हमें और भी ज्यादा शक्तिशाली और बेहतर व्यक्ति बनाती है।

क्षमा के मामले में 'क्षमादान' को 'क्षमायाचना' से अधिक महत्व दिया गया है। मांगी हुई क्षमा व्यक्ति में पश्चाताप का भाव जगाती हैकृहालांकि गलतियों में घुलने की बजाय पश्चाताप कहीं बेहतर है, क्योंकि इससे गलतियों के निराकरण की संभावनाएं उदित होती हैं लेकिन फिर भी मांगी हुई क्षमा से दी जाने वाली क्षमा ज्यादा कीमती है, क्योंकि मांगी हुई सिर्फ अपना ही मन साफ करती है, जबकि दी जाने वाली क्षमा का प्रभाव दोहरा होता है। वह क्षमा देने वाले को तो ऊर्जस्वी बनाती ही है, साथ ही जिसे क्षमा किया जाता है उसके भी मनोमालिन्य धोती है।

भगवान महावीर इसलिए वीर कहलाए क्योंकि उन्होंने क्षमा को जीवन का अनिवार्य तत्व स्वीकार कर अपनाया। उनके बतलाए हुए मार्ग को धर्म कहा गया, क्योंकि इसमें क्षमा की प्रधानता थी। सम्राट अशोक इसलिए महान नहीं कहलाए कि उन्होंने कलिंग युद्ध में विजय प्राप्त की, अपितु ऐसे धर्म की शरण में चले गए जिसमें क्षमा की प्रधानता थी। ईसा मसीह ने उन लोगों को भी क्षमा कद दिया, जिन्होंने ईसा मसीह को सूली पर टांग दिया और ईसा मसीह प्रभु बन गए। उनके दिखलाया गया मार्ग एक नया धर्म बन गया। क्षमा के अभाव में न कोई व्यक्ति वीर है और न कोई धर्म पूर्ण है। शत्रु और मित्र शब्दों का अस्तित्व वास्तव में 'क्षमा' के अभाव में ही है। जहां क्षमा है, वहां शत्रुता अथवा द्वेष का क्या काम? क्षमा दुश्मनी का विनाश कर दोस्ती का विस्तार करती है, इसलिए जैनधर्म में तो इसे एक पर्व के रूप में मनाया जाता है। क्षमा कब करें? मांगने पर या बिना मांगे? यदि कोई व्यक्ति क्षमा मांगता है, तो क्षमा न करना अपराध जैसी स्थिति हो जाती है। क्षमा मांगने वाला अपनी गलती को स्वीकार कर अपराधबोध से मुक्त हो जाता है, लेकिन क्षमा न करने वाला उसकी पीड़ा से सुलगता रहता है। अतः किसी के क्षमा मांगने पर क्षमा कर देना उसके स्वयं के लिए एक उपयोगी क्षण है। यदि कोई अपनी गलती के लिए क्षमा न मांगे तो भी क्या उसे क्षमा किया जा सकता है? यह क्षमा मांगने वाले पर निर्भर है, पर क्षमा न करने पर क्षमा न करने वाला भी तो भुगतेगा। क्षमादान तो हर हालत में संभव है। क्षमा मांगने पर भी और क्षमा न मांगने पर भी। बस थोड़ी सूझबूझ की जरूरत है। दूसरा क्षमा मांगे या न मांगे आप तो किसी भी तरह उसे क्षमा कर घातक मनोभावों से मुक्त हो जाइए। आप क्यों दूसरे की गलती का बोझ अपने मन में ढो रहे हैं? क्षमा न मांगने पर भी किसी को सही तरीके से उसकी गलती का एहसास कराकर क्षमा कर देने से गलती के शीघ्र परिष्कार की अपेक्षा की जा सकती है। क्षमा करना दूसरे को सुधरने का अवसर प्रदान करना ही है, अतः यह अनिवार्य भी है। अधूरी या आंशिक क्षमा का भी कोई अर्थ नहीं। बिना शर्त पूर्णरूप से क्षमायाचना करें और क्षमा भी करें। लाभ–हानि या किसी निहित स्वार्थ से ऊपर उठकर क्षमा मांगने और क्षमा देने से क्षमा निष्काम कर्म की कोटि में आ जाती है और निष्काम कर्म सबसे उत्तम माना गया है। जो लोग न क्षमा मांगना जानते हैं और न क्षमा करना ही वे अपने लिए इस धरती पर ही नरक की सृष्टि कर लेते हैं और उसमें पड़े रहते हैं। क्षमाशील व्यक्ति ही इस धरती पर स्वर्ग की सृष्टि कर जीतेजी स्वर्ग भोगते हैं।

'क्षमादान के बाद यदि भावना जगे कि ''मैंने क्षमा किया' तो ऐसा क्षमादान भी व्यर्थ है। वह क्षमा नहीं मानवीय गुणों को विकास नहीं, विनाश है। वह विराटता नहीं क्षुद्रता है, क्योंकि मैं के जगते ही क्षमादान की दिव्यता तिरोहित हो जाती है, और क्षुद्र मानवीय अहंकार का अंधेरा उग आता है। अहंकार या अभिमान , क्षमा की राह के सबसे बड़े रोड़े हैं। क्षमा तो अहंकार से मुक्ति का विज्ञान है। उससे ही यदि अहंकार पनपे तो वह दया, तरस, रहम कुछ भी हो सकता है, मगर क्षमा नहीं हो सकता। जो अहंकार क्षमा–याचक के लिए बाधक हो, वह क्षमा दाता के लिए आखिर साधक कैसे हो सकता है।

क्षमायाचक वास्तव में क्षमा का पात्र है या नहीं, क्षमादाता को इसका भी निर्धारण करना होता है, क्योंकि क्षमा वस्तुतः सक्षम का दिव्यास्त्र है। क्षमा के बारे में आमतौर पर यह भ्रांति रही है कि यह कमजोर व्यक्ति का हथियार है। नहीं, क्षमा अक्षम व्यक्ति का हथियार नहीं है, क्योंकि क्षमा करने के लिए भी क्षमता होनी चाहिए। क्षमता के अभाव में व्यक्ति क्षमा का ढोंग जरूर कर सकता है, मगर क्षमा नहीं कर सकता। क्लीव और कायर का नहीं, बल्कि क्षमतावान और सामर्थ्यवान का हथियार है क्षमा। वही व्यक्ति क्षमा कर सकने का अधिकारी है जिसमें बड़प्पन किसी भी विधायक चीज को हो सकता है, क्षमता का, सामर्थ्य का, गुणों का, भावनाओं का, हार्दिकता का। बड़प्पन जितना गहरा और आत्यांतिक होगा, क्षमा की क्षमता उतनी ही विराट समर्थ होगी।

जैसा भी हो सम्बंध बनाये रखिये।
दिल मिले या न मिले हाथ मिलाते रहिये।।

आध्यात्मिक पर्व : पर्युषण पर्व

- डॉ. राजीव प्रचण्डिया, अलीगढ़ (उ.प्र.)

पर्युषण पर्व अध्यात्म-ऊर्जा का अजस्र स्रोत है। यह पर्व अंतरंग में व्याप्त कषायों के मैल यानि राग और द्वेष रूपी गंदगी का परिहार करता है। कषायिक मैल के रहते व्यक्ति आत्म स्वभाग को पहचान नहीं पाता है। पर्युषण आत्मस्वभाव को पहचानने का एक अच्छा जरिया है। भाद्र मास का यह वह समय है जब व्रत साधना और ध्यान-आराधना के माध्यम से क्रोध मान, माया व लोभ को मेटकर तन और मन को शुद्ध-परिशुद्ध करने का भरपूर मौका मिलता है। आज हमारी स्थिति यह है कि हम आत्म स्वभाव को पहचानने में असमर्थ हैं किन्तु धर्म के मूल तत्व को आत्मसात न कर पाने से विभावों-कषायों के घेरे में घिरे रहते हैं और आत्म स्वभाव से दूर रहते हैं। आत्मस्वभाव के अभाव में जीवन न खुलता है और न खिलता है। बंध से निर्बंध होने का कलाधर है पर्यूषण पर्व, जो आत्मस्वभाव यानि क्षमा, मार्दव, आर्जव को जिन्हें कर्म-कषायों ने आवरित किया हुआ है, को अनावरित करने की प्रबल प्रेरणा देता है, इतना ही नहीं आवरित आत्मिक स्वभाव कैसे अनावरित हो, इसके लिए भी यह पर्व उपाय बताता है।

यदि कोई सच्चे मन से स्वभाव को अनावरित करना चाहता है तो उसके लिए प्रमुख उपाय है संयम व तप साधना। इसलिए इस पर्व में व्रत-विधान पर बल दिया जाता है। संयमन और तप आराधन के बिना या व्रतों के परिपालन को अपने जीवन में प्रसंकल्पित किए बिना हम कितना भी प्रयत्न कर लें, कर्म-कषायों को मेट नहीं सकते और बिना इनके मिटे हमें शाश्वत सत्य की अनुभूति नहीं हो सकती यानि आत्मिक स्वभाव प्रकट नहीं हो सकता। जब हम इन उपायों को अंगीकार कर लेते हैं या हमारे जीवन का हिस्सा बन जाते हैं तो हमें शाश्वत सत्य की प्रतीति होने लगती है जिसको थामकर यदि हम निरंतर बढ़ने लगें तो पदार्थों के प्रति ममत्व-आसक्ति स्वतः छूटने लगती है और संसार की निस्सारता हमें अनुभूत होने लगती है यानि हमारे अंतरंग में व्याप्त आकिंचन्य प्रकट होने लगता है फिर हम तन और मन से पूर्णतः शुद्ध और बुद्ध होते हुए ब्रह्म यानि आत्म तत्व में रमने लगते हैं फिर हमारा आचरण सद् से सदा मण्डित रहने लगता है। हमारे चलने में ईर्या समिति बोलने में भाषा समिति यानि हमारी प्रत्येक क्रिया में प्रामाणिकता व जागरूकता मुखर हो जाती है। अंततोगत्वा विषमता, समता में परिणत हो जाती है। फलतः शील खिल उठता है और शेष खील-खील हो जाते हैं।

यह पर्व हमें सीख देता है, संसार में रहते हुए कैसे और कितनी सीमा तक हम अध्यात्ममय हो सकते हैं। इस संसार में जीव की सच्ची राह यदि कोई है, तो वह है , सम्यक्त्व की राह। इस पर चल कर हम स्व-पर का कल्याण कर सकते हैं। वास्तव में यह पर्व हमें जीवन जीने का सही सलीका सिखाता है।

परमपूज्य एलाचार्य श्री श्रुतसागरजी 'आचार्य' पद पर प्रतिष्ठित

रविवार, 27 जुलाई, 2014, नई दिल्ली। परमपूज्य श्वेतपिच्छाचार्यश्री विद्यानंदजी मुनिराज ने 52वाँ दीक्षा दिवस के अवसर पर कुन्दकुन्द भारती में आयोजित धर्मसभा में कहा कि - शरीर आदि बाह्य पदार्थों को सजाने में हम बहुत समय लगाते हैं, लेकिन उससे वास्तविक भला नहीं होगा, आत्मा का कल्याण तो अपने जीवन को सम्यक्दर्शन, ज्ञान, चारित्र रूपी त्रिरत्नों को सजाने से ही होगा। इसी पर ध्यान देना चाहिए और इसके लिए रोज पूजा-पाठ स्वाध्याय करना चाहिए।

परमपूज्य आचार्यश्री का पाद-प्रक्षालन श्री सतीश चन्द जैन (SCJ) सपरिवार, नवीन पिच्छी श्री अनिल जैन (नेपाल) सपरिवार, शास्त्र श्री विनय जैन (ग्रीनपार्क) सपरिवार ने भेंट किए।

परमपूज्य आचार्यश्री विद्यानन्द जी मुनिराज ने अपने प्रिय शिष्य परमपूज्य एलाचार्यश्री श्रुतसागरजी महाराज को श्रावण शुक्ल, प्रतिपदा, रविपुष्य योग में विधि-विधानपूर्वक **आचार्य पद** पर प्रतिष्ठित किया। मंत्र पाठ एवं शंखनाद एवं करतल ध्वनि के साथ उनका स्वस्तिक लेखन किया गया। पूज्य श्रुतसागर जी का पाद-प्रक्षालन श्री सतीश चन्द जैन, पिच्छी भेंट श्री राकेश जैन (ग्रीनपार्क) एवं शास्त्र श्री सुशील जैन (रोहतक रोड) ने भेंट किए। ध्यातव्य हो कि पूज्य एलाचार्य श्री को 21 फरवरी, 1988 में **मुनि दीक्षा**, 18 अप्रैल, 1998 को **उपाध्याय दीक्षा** एवं 8 दिसम्बर, 2006 को **एलाचार्य दीक्षा** प्रदान की गई।

श्री सतीश चन्द जैन ने परमपूज्य एलाचार्यश्री श्रुतसागरजी महाराज की वैशाली में कठिन परिस्थितियों में उल्लेखनीय भूमिका निभाने के लिए उनके प्रति समाज की ओर से अपनी विनयांजलि अर्पित की।

कार्यक्रम में मुनिश्री अनुमान सागर जी एवं गणिनी आर्यिका प्रज्ञमती माताजी का भी समारोह को आशीर्वाद प्राप्त हुआ।

परमपूज्य एलाचार्यश्री श्रुतसागरजी महाराज को आचार्य पद प्रदान करने की घोषणा करते ही तालियों की गड़गड़ाहट एवं जयकारों से सभास्थल गूँजता रहा।

कुन्दकुन्द भारती के अध्यक्ष साहूश्री अखिलेश जैन एवं महामंत्री श्री मुकेश कुमार जैन, कुन्दकुन्द भारती न्यास के सभी न्यासीगण, भगवान महावीर स्मारक समिति वैशाली के अध्यक्ष श्री स्वदेश भूषण जैन एवं श्री रमेशचन्द जैन (अध्यक्ष- ग्रीनपार्क जैन समाज), मुनि विहार समिति के संघपति श्री राजेन्द्र जैन (ग्रीनपार्क) तथा दिल्ली जैन समाज के गणमान्य महानुभाव एवं बाहर से पधारे महानुभावों ने पूज्य आचार्य संघ के प्रति अपनी विनयांजलि प्रकट करते हुए श्रीफल समर्पित किए।

'मंगलाचरण' करते हुए प्रो. (डॉ.) वीरसागर जैन ने जैन शास्त्रों के अनुसार दीक्षा दिवस की भावना का महत्व समझाया कि इससे वैराग्य की वृद्धि होती है। इस अवसर पर श्री प्रदीप जैन, श्रीमती उषा जैन (ग्रीनपार्क), श्रीमती अंजू जैन (सैनिक फार्म), सुश्री मेघा जैन ने भजन एवं काव्य-पाठ श्रीमती त्रिशला जैन एवं श्रीमती प्रभाकिरण जैन ने प्रस्तुत किए। सभा संचालन करते हुए श्री सतीश जैन (आकाशवाणी) ने परमपूज्य आचार्यश्री जी द्वारा किए गए महत्वपूर्ण कार्यों का समाज के बीच उल्लेख कर पुरानी स्मृति को ताजा किया।

प्रेषक : सतीश चन्द जैन (SCJ), दिल्ली

धर्म धारण करने की चीज है, उदाहरण की नहीं।

27 जुलाई, 2014 को श्री गोम्मटगिरि क्षेत्र, इंदौर पर प्रथम बार राष्ट्रीय क्षेत्र प्रतिनिधि सम्मेलन सानंद सम्पन्न

भारतवर्षीय दिगम्बरजैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के तत्वावधान में भारत के सभी तीर्थक्षेत्रों के अध्यक्षों, मंत्रियों एवं क्षेत्र प्रतिनिधि सदस्यों का राष्ट्रीय सम्मेलन रविवार दिनांक 27 जुलाई, 2014 को प्रातः 10 बजे से श्री बाहुबली दिगम्बर जैन ट्रस्ट गोम्मटगिरि, इंदौर (म.प्र.) के सभागृह में तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष स.सिंघई श्री सुधीर जैन, कटनी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ, जिसमें निम्नलिखित कार्यवाही संपादित की गई-

सर्वप्रथम देश के विभिन्न तीर्थक्षेत्रों से पधारे हुए प्रतिनिधियों, पदाधिकारियों एवं केन्द्रीय कमेटी के पदाधिकारियों का तिलक एवं दुपट्टा पहनाकर मध्यांचल समिति के अध्यक्ष श्री विमल सोगानी एवं अन्य पदाधिकारियों की ओर से स्वागत एवं अभिनन्दन किया गया।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के सभी उपस्थित पदाधिकारियों एवं अंचलीय समिति के अध्यक्षों को मंच पर आसीन होने के लिए मंच संचालक श्री संजय जैन 'मैक्स' ने आमंत्रित किया। पश्चात श्रीमती तृप्ति पाटोदी, इंदौर के मंगलाचरण से सम्मेलन की कार्यवाही प्रारम्भ हुई।

सत्र का शुभारम्भ दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। दीप प्रज्ज्वलित करने की विधि राष्ट्रीय अध्यक्ष स.सिं.श्री सुधीर जैन एवं मंच पर उपस्थित सभी महानुभावों के द्वारा सम्पन्न हुआ।

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीर जैन ने मंच पर उपस्थित सभी पदाधिकारियों एवं अंचलीय समिति के सभी अध्यक्षों का परिचय कराया तथा उनका स्वागत तिलक एवं दुपट्टा पहनाकर किया गया। उन्होंने यह बताया कि तीर्थक्षेत्र कमेटी का राष्ट्रीय स्तर पर तीर्थक्षेत्रों के पदाधिकारियों, प्रतिनिधियों का सम्मेलन आयोजित करने का यह प्रथम प्रयास हुआ है। सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य तीर्थक्षेत्रों के पदाधिकारियों से सीधी बातचीत करने, उनकी आवश्यकताओं, समस्याओं को सुनने-समझने के साथ-साथ उनके क्षेत्र पर कौन-कौन सी योजनाएं संचालित हैं इसके बारे में तीर्थक्षेत्र कमेटी के पदाधिकारियों को जानकारी प्राप्त करना है।

हम सभी का यह उद्देश्य है कि तीर्थक्षेत्रों का संरक्षण-संवर्धन एवं उनका समुन्नत विकास हो और यदि इसमें किसी प्रकार की समस्या अथवा अवरोध आता है तो तीर्थक्षेत्र कमेटी उसे दूर करने में उनकी पूरी मदद करेगी।

राष्ट्रीय महामंत्री श्री पंकज जैन ने तीर्थक्षेत्र कमेटी की वर्तमान कार्यकारिणी समिति द्वारा पिछले 11 महीनों में किये गये कार्यों की प्रगति रिपोर्ट पढ़कर सुनायी, जिसका कर-तल-ध्वनि से स्वागत किया गया तथा तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा किये गये प्रयासों की भूरि-भूरि प्रशंसा की गई।

इंदौर में राष्ट्रीय क्षेत्र प्रतिनिधि सम्मेलन की झलकियाँ

जहां धर्म रहता है वहां धन अपने आप बरसता है ।

इंदौर में राष्ट्रीय क्षेत्र प्रतिनिधि सम्मेलन की झलकियाँ

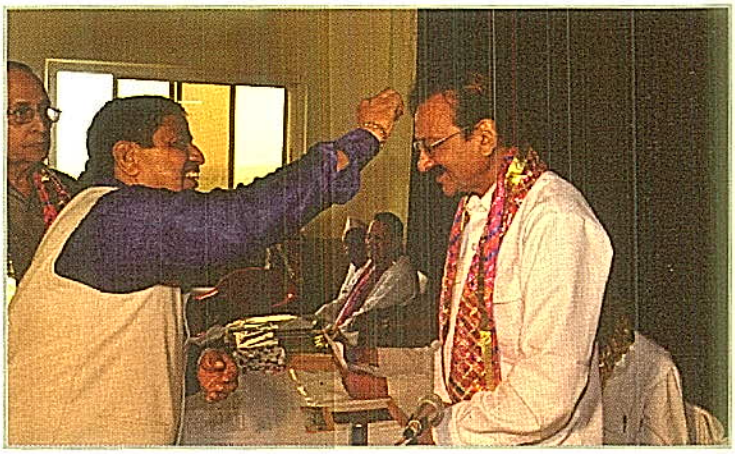

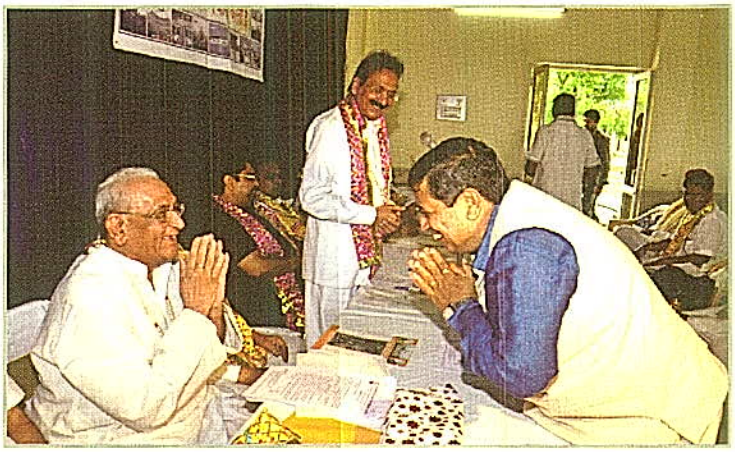

बोलना स्वर्ण है किन्तु मौन स्वर्ण से निर्मित आभूषण है ।

कार्य प्रगति रिपोर्ट

(25 अगस्त, 2013 से 25 जुलाई, 2014 तक)

श्रमण संस्कृति इस देश की प्राचीनतम संस्कृति है और हमारे पावन तीर्थ इसके जीते जागते उदाहरण हैं। धर्म, कला, इतिहास और पुरातत्व की दृष्टि से यह हमारी अमूल्य धरोहर है। इनका संरक्षण, संवर्धन करना हम सभी का दायित्व है। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी इस दायित्व के निर्वाह में पिछले 110 वर्षों से निरंतर जुटी है। इसे परमपूज्य आचार्यों, मुनिराजों एवं आर्यिका माताओं के आशीर्वाद के साथ-साथ समाज का समर्पित सहयोग भी प्राप्त है। तीर्थ संरक्षण की सेवा कार्य में आज जितने भी कार्यकर्ता निःस्वार्थ भाव से जुड़े हुए हैं वे अवश्य ही महान पुण्यशाली हैं। हम उनका हार्दिक अभिनंदन करते हैं।

दिनांक 25 अगस्त, 2013 को सवाई सिंघई श्री सुधीर जैन, कटनी को औपचारिक रूप से तीर्थक्षेत्र कमेटी का अध्यक्ष चुनकर कमेटी की कमान उन्हें सौंप दी गई। पश्चात नवनिर्वाचित प्रबंधकारिणी समिति की प्रथम बैठक वीर सेवा मंदिर, दिल्ली में सम्पन्न हुई, जिसमें नियमानुसार पदाधिकारीयों का चुनाव हुआ।

दिनांक 22 दिसम्बर, 2013 को दिल्ली में तीर्थक्षेत्र कमेटी के नवनिर्वाचित पदाधिकारी परिषद की प्रथम बैठक सम्पन्न हुई, जिसमें समितियों का गठन कर उनके चेयरमैन नियुक्त किये गये।

आगामी कार्यकाल के लिए भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट के ट्रस्ट मण्डल का गठन किया गया।

अंचलीय समिति के अध्यक्षों के चुनाव :

अंचलीय समिति के लिए बनाये गये नियम में राष्ट्रीय अध्यक्ष के चुनाव होने के 6 महीने के अन्दर सभी अंचल के अध्यक्षों के चुनाव होने का प्रावधान है। दिनांक 22 दिसम्बर, 2013 को पदाधिकारी परिषद की बैठक में यह निर्णय लिया गया कि 7 अंचल के अध्यक्षों के चुनाव 3 माह के अंदर करा लिये जाएं। तद्नुसार सभी अंचल के अध्यक्षों के चुनाव अब सम्पन्न हो गये हैं।

इसके अतिरिक्त उत्तर प्रदेश अंचल का गठन करने का भी निर्णय श्री महावीर जी क्षेत्र पर रखी गई। दिनांक 14 अप्रैल, 2014 को हुई पदाधिकारी परिषद की बैठक में लिया गया है।

श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र सोनागिर के इतिहास पुस्तक का विमोचन :-

डॉ. नवनीत जैन, ग्वालियर द्वारा लेखन-संपादन की गई इस पुस्तक का विमोचन दिनांक 22 दिसम्बर, 2013 को श्री आर.सी.जैन, गाजियाबाद एवं सुप्रसिद्ध बिल्डर दानवीर श्री नरेशचंद जी जैन, दिल्ली के कर-कमलों से किया गया है। इसी प्रकार का एक दूसरा ग्रन्थ डॉ.रमेशचंद जैन द्वारा लिखित **'गिरनार वंदन'** का प्रकाशन किया गया है जिसका विमोचन आज के सम्मेलन में हुआ है।

तीर्थक्षेत्रों से संबंधित चल रहे मुकदमों का संचालन एवं समझौते के प्रयास :

दिनांक 25 अगस्त, 2013 को श्री तिजारा क्षेत्र पर सम्पन्न हुए कमेटी के साधारण अधिवेशन में सदस्यों द्वारा यह भावना व्यक्त की गई कि मुकदमों के संचालन के साथ-साथ समझौते के प्रयास भी किये जाएं, जिससे अनावश्यक रूप में हो रहे अपव्यय से बचा जा सके। इस लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए वर्तमान पदाधिकारियों के प्रयत्न हो रहे हैं। सर्वप्रथम दिनांक 11 नवम्बर 2013 को आगरा (उ.प्र.) में श्वेताम्बर-दिगम्बर जैन प्रतिनिधियों की बैठक हुई। यह बैठक अत्यंत उत्साहवर्धक रही उसके बाद दूसरी बैठक दिनांक 12 जनवरी, 2014 को अहमदाबाद में दोनों जैन समाज के प्रतिनिधियों की बैठक सम्पन्न हुई जिसमें सकारात्मक पहल हुई थी। उसके बाद दिनांक 8 फरवरी, 2014 को दिल्ली में पुनः बैठक हुई जिसमें विवादों से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर चर्चाएं हुई हैं। प्रयत्न चालू है।

जहां तक मुकदमों का प्रश्न है उसकी पूरी पैरवी तीर्थक्षेत्र कमेटी मुश्तैदी से कर रही है।

श्री ऋषभदेव (केशरियाजी) केस :

ऋषभदेव का मंदिर जैन मंदिर है ऐसा सुप्रीम कोर्ट ने घोषित कर दिया है। मंदिर जी की मैनेजमेंट कमेटी बनाने के लिए हम प्रयत्नशील हैं। इसके लिए Cause of action का एक डिक्लेरेटरी सूट फाइल करने की तैयारी हुई है। शीघ्र ही वकीलों की एक मीटिंग बुलाकर उसमें फाइनल निर्णय लिया जावेगा।

श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथ क्षेत्र सिरपुर :

सिरपुर केस फाइनल हियरिंग के लिए सुप्रीम कोर्ट में विचाराधीन है। हम सभी की यह भावना है कि श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथ भगवान की मूर्ति जो वर्षों से ताले में बंद है उसका ताला कैसे खुलवाया जाय, इस दिशा में हम सभी प्रयत्नशील है और श्वेताम्बर प्रतिनिधियों से भी बातचीत चल रही है।

श्री गिरनार जी केस :

गिरनारजी पहाड़ की सभी टोकों से संबंधित केस गुजरात हाई कोर्ट में विचाराधीन है। समझौते के प्रयास भी किये जा रहे हैं। दिनांक 14 दिसम्बर,

जिन धर्म गुणों की उपासना करता है व्यक्ति की नहीं।

2013 को मैं स्वयं पहाड़ पर दो इंजीनियरों के साथ गया था। उन्होंने पूरा निरीक्षण करके अपनी रिपोर्ट भी दी है। पांचवीं टोंक के बारे में विकल्प भी सुझाए हैं, परन्तु हिन्दू साधु लोग हमारी बातों को मानने के लिए तैयार नहीं हैं। प्रयास जारी है।

तीर्थराज श्री सम्मेदशिखर टोंकों का जीर्णोद्धार एवं विकास :-

पारसनाथ टोंक :

शिखरजी पहाड़ स्थित भगवान अभिनन्दननाथ टोंक जो गत वर्ष बिजली गिरने से क्षतिग्रस्त हो गई थी तथा उसमें स्थापित चरण चिह्न भी खंडित हो गये थे उसका पुनर्निर्माण कराकर उसमें पुनः पूर्वाकार में काले पाषाण के चरण चिह्न पर दिनांक 28 नवम्बर, 2013 को विधि विधान पूर्वक स्थापित किये गये हैं जिसमें हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीर जैन उनकी धर्मपत्नी श्रीमती नीलम जैन, मैं और मेरी पत्नी श्रीमती वैशाली जैन, कमेटी के उपाध्यक्ष श्री वसंतलाल एम. दोशी आदि महानुभाव उपस्थित हुए थे। अभिनंदननाथ टोंक के चरण चिह्नों की प्रतिष्ठापना विधि-विधानपूर्वक स्थापित होने से प्रभावित होकर हमने अपनी ओर से (पारस चैनल) रु. 21 लाख की न्यौछावर राशि भी प्रदान करने की घोषणा की थी।

पारसनाथ टोंक जिसके जीर्णोद्धार का कार्य पिछले 2-3 वर्षों से चल रहा है। इसकी गुफा के अंदर मार्बल लगाने का कार्य पूर्ण कर लिया गया है। गुफा के पीछे दीवाल एवं फर्श पर मार्बल व ग्रेनाइट टाइल्स लगाने का कार्य भी पूर्ण कर लिया गया है। पारसनाथ टोंक पर रेलिंग लगाने का कार्य चल रहा है जिसके लिए 60 लाख रुपये से अधिक के मार्बल्स खरीदी किये जा चुके हैं। सिल्वर के दरवाजे, खिड़की सभी तैयार कर लिये गये हैं। इस कार्य को पूर्ण करने में अभी 25 से 30 लाख रुपये व्यय होने का अनुमान है। इस कार्य में श्री मनोज जैन, धनबाद; श्री संतोष जैन 'पंढारी', श्री सी.पी.जैन, श्री वसंतलाल एम. दोशी, श्री महावीर प्रसाद सेठी, सरिया, श्री छीतरमलजी पाटनी, श्री सुनील जैन 'शिवम' का सहयोग मिल रहा है।

इसके अतिरिक्त शिखरजी में निम्नलिखित कार्य और सम्पन्न हुए हैं - जैसे -

1. भाताघर के रंग-रोगन एवं दो महिला शौचालय एवं पेशाब घर का निर्माण-कुल लागत - 71,625/-
2. पहाड़ पर 20 नये सूचना बोर्ड लगाये गये हैं- लागत मूल्य - 81,336/-
3. पारसनाथ टोंक से डाक बंगला प्रवेश द्वार तक सड़क निर्माण - ,31,987/-
4. गोरा बंगला से सीता नाला तक सड़क की मरम्मत एवं प्लास्टर - 7,96,510/-
5. राजस्व विभाग के डाक बंगला की मरम्मत एवं जीर्णोद्धार - 9,11,094/-

इस प्रकार कुल 33,92,612/- अब तक इन योजनाओं पर और व्यय हुए हैं।

डाक बंगले पर सभी जैन तीर्थयात्रियों के लिए शुद्ध भोजनशाला की व्यवस्था:

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से अभी तक केवल डाक बंगले में ठहरने वाले तीर्थ यात्रियों के लिए निःशुल्क भोजन की व्यवस्था की जाती थी परन्तु यह व्यवस्था पर्याप्त नहीं थी। इस पर हमारे पदाधिकारियों में विचार-विमर्श हुआ और यह आवश्यक समझा गया कि श्री सम्मेदशिखरजी पर्वत की वंदना कर लौट रहे यात्रियों को डाक बंगले पर शुद्ध भोजन दिया जाय। आप सभी को जानकर प्रसन्नता होगी कि दिनांक 24 जनवरी, 2014 से यह व्यवस्था पारस चैनल के चेयरमैन के नाते मेरी ओर से, श्री अशोक पाटनी, श्री राजेश जैन,दिल्ली, श्री प्रवीण जैन, दिल्ली; इन चारों श्रेष्ठियों की ओर से प्रारंभ हो गई है जिससे शिखरजी तीर्थ वंदनाथ आने वाले यात्री लाभान्वित हो रहे हैं।

जन-जागृति अभियान योजना के अंतर्गत राष्ट्रीय अध्यक्ष का तूफानी दौरा :

अध्यक्ष पद की कमान संभालने के बाद राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं अन्य पदाधिकारियों ने सर्व प्रथम तीर्थसंत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज ससंघ के दर्शनार्थ रामटेक (महाराष्ट्र) पहुंचे, जहाँ आचार्यश्री का चातुर्मास सम्पन्न हो रहा था। इस दरमियान नागपुर पहुंचने पर वहाँ की स्थानीय समाज ने उनका भव्य स्वागत किया और तीर्थक्षेत्र कमेटी के कार्यों में सहयोग देने का आश्वासन दिया।

गुना (म.प्र.) जहाँ मुनिश्री पुंगव सुधा सागरजी महाराज का चातुर्मास हो रहा था उस दरमियान वहाँ सम्पन्न हो रहे साधना शिविर में करीब 2300 शिविरार्थियों ने भाग लिया था। वहाँ पहुंच कर मुनिश्री का आशीर्वाद प्राप्त किये।

दिनांक 6 सितम्बर को शिखरजी क्षेत्र पर शाश्वत ट्रस्ट की मीटिंग हुई जिसमें पधारकर बैठक की अध्यक्षता की एवं अनेक महत्वपूर्ण निर्णय लिये गये।

दिनांक 17 नवम्बर, 2013 को राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथ क्षेत्र सिरपुर पधारे, वहाँ नवनिर्मित भगवान महावीर कीर्ति स्तंभ के उद्घाटन के साथ ताले में बंद अंतरिक्ष पार्श्वनाथ के दर्शन कर दुःख प्रकट किया कि भगवान वर्षों से ताले में बंद हैं।

दिनांक 27 नवम्बर, 2013 तीर्थराज श्री सम्मेदशिखर स्थित आनंदकूट टोंक पर भगवान अभिनंदननाथ के चरण चिह्न जो वज्रपात होने से टूट गये थे उसका जीर्णोद्धार कराकर नवीन चरण चिह्नों को पूर्वाकार में पुनः प्रतिष्ठापित किया गया। इस अवसर पर तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीर जैन सपत्नीक, कमेटी के उपाध्यक्ष श्री वसंतलाल एम. दोशी, महामंत्री

श्री पंकज जैन (पारस चैनल) सपत्नीक सम्मिलित हुए थे। इसी दरमियान हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष महोदय कोलकाता भी गये और वहाँ कई विशिष्ट महानुभावों से भेंटकर तीर्थक्षेत्र कमेटी का संरक्षक सदस्य बनाने के प्रयास भी किये।

दिनांक 22 दिसम्बर, 2013 को दिल्ली में आयोजित तीर्थक्षेत्र कमेटी की पदाधिकारी परिषद की बैठक में अनेक महत्वपूर्ण निर्णय लिये गये, जिसमें तीर्थों की सुरक्षा, सर्वेक्षण एवं विकास के लिए एक समिति का गठन भी किया गया।

परमपूज्य कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारूकीर्ति भट्टारक महास्वामी की भावनानुसार कर्नाटक अंचल के अध्यक्ष श्री डी.आर.शाह, इंडी एवं राष्ट्रीय मंत्री श्री विनोद बाकलीवाल, मैसूर के आग्रह से हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष सपत्नीक विश्व तीर्थ श्रवणबेलगोला गये, वहाँ शाही अंदाज में उनका अभूतपूर्व स्वागत किया गया। इस यात्रा के दरमियान वं धर्मस्थल एवं श्री मूडबिद्री जी क्षेत्र का दौरा भी किया। इस दौरे में दोनों साथ रहे। धर्मस्थल पहुंचने पर वहाँ धर्माधिकारी श्री वीरेन्द्र हेगड़े जी के लघु भ्राता श्री हर्षवर्धन जी हेगड़े मिले। उन्होंने बड़े ही सम्मान के साथ पूरे धर्मस्थल का दर्शन कराया तथा वहां चल रही धार्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक प्रवृत्तियों की जानकारी दी। पश्चात सभी लोग मूडबिद्री के भट्टारक पंडिताचार्य प.पू. चारुकीर्ति महास्वामी भट्टारक जी से भेंट करने मूडबिद्री पहुंचे। वहाँ पूज्य स्वामी जी से विचार-विमर्श किये। इस दरमियान बेंगलोर पहुंचने पर वहाँ की जैन समाज के प्रमुख श्री निहालचंद जी जैन एवं श्री आदीश्वर प्रसाद जैन आदि ने उन सभी का आत्मीय स्वागत किया और दोनों महानुभाव दौरे में साथ-साथ रहे। उनकी इस यात्रा में श्री संजय जी जैन 'मैक्स' इंदौर सपत्नीक भी साथ-साथ रहे।

जन-जागृति इस अभियान योजना के अंतर्गत वे सतना एवं इंदौर भी गये। दिनांक 24 मार्च, 2014 को श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र चांदखेड़ी (राज.) क्षेत्र पर सम्पन्न हुई पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में भी सम्मिलित हुए। वहाँ उन्होंने स्थानीय कार्यकर्ताओं के साथ विचार-विमर्श भी किया।

दिनांक 6 अप्रैल, 2014 को भाग्योदय तीर्थ, सागर में सम्पन्न हुए अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला परिषद मध्यप्रदेश के त्रैवार्षिक प्रांतीय अधिवेशन में जहाँ करीब 1500 महिलाएं सम्मेलन में विभिन्न स्थानों से आयी हुई थीं उसमें विशेष अतिथि के रूप में हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष सम्मिलित हुए। इस अवसर पर महिलाओं की ओर से 65 हजार की राशि तीर्थक्षेत्र कमेटी के लिए उन्हें भेंट भी की गई।

दिनांक 15 अप्रैल, 2014 को श्री महावीर जी क्षेत्र पर तीर्थक्षेत्र कमेटी की पदाधिकारी परिषद एवं प्रबंधकारिणी समिति की बैठकें सम्पन्न हुईं जिसमें हमारे अधिकांश पदाधिकारीगण उपस्थित हुए थे। इसी दरमियान अध्यक्ष महोदय ने श्री चमत्कार जी क्षेत्र का दौरा भी किया तथा वहां के कार्यकर्ताओं से विचार-विमर्श भी किये। इस दौरे में उनके साथ श्री कुंडलपुर क्षेत्र अध्यक्ष श्री संतोष कुमार सिंघई भी थे।

जैन तीर्थ श्री मूडबिद्री जी क्षेत्र (कर्नाटक) से चोरी हुई बहुमूल्य रत्नों की मूर्तियां बरामद :

6 जुलाई, 2013 की मध्य रात्रि में बहुमूल्य रत्नों की 15 मूर्तियां चोरी हो गई। इस घटना से देश में हाहाकार मच गया। कर्नाटक पुलिस ने इस घटना को संवेदनशील मानते हुए बड़ी ही तत्परता से कार्रवाई की। 16 जुलाई को दुर्ग के श्री घनश्यामदास संतोषदास व उनके ससुर भुवनेश्वर के पटनायक को गिरफ्तार कर लिया गया तथा उनसे 5 स्वर्ण प्रतिमाओं का गलाया हुआ सोना 1 किलो 100 ग्राम बरामद किया गया। उन्होंने बताया कि 7 रत्नों की मूर्तियों को छत्तीसगढ़ के जाने-माने प्रभावशाली ज्वेलर्स अनोपचंद त्रिलोकचंद को बेची गई है। उनके इस बयान से अनोपचंद त्रिलोकचंद के मालिक को गिरफ्तार कर लिया गया। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से इस प्रकरण के संबंध में केन्द्रीय गृहमंत्री श्री सुशील कुमार शिंदे को पत्र प्रेषित कर करोड़ों रुपये की बहुमूल्य मूर्तियों को बरामद करने तथा इसकी जांच सीबीआई से कराने की मांग की। तीर्थक्षेत्र कमेटी ने इसके लिए छत्तीसगढ़ के माननीय मुख्यमंत्री श्रीमान् रमन सिंह से भी मूर्तियों की जांच सीबीआई से कराने केन्द्रीय गृहमंत्री को अपनी अनुशंसा भेजकर अपना दबाव डालने का अनुरोध किया गया। फलस्वरूप सभी मूर्तियां बरामद हुईं।

राजस्थान एवं पूर्वांचल के तीर्थक्षेत्रों का दौरा :-

राजस्थान :-

जन-जागृति अभियोजन के अंतर्गत तीर्थक्षेत्रों के संरक्षण, संवर्धन एवं उनके सम्यक विकास हेतु दिनांक 24 से 28 फरवरी, 2014 तक राजस्थान प्रांत के श्री पदमपुरा क्षेत्र, श्री चूलगिरि क्षेत्र, श्री आंवा क्षेत्र, श्री महेन्द्रवास एवं सांगानेर आदि तीर्थक्षेत्रों का दौरा तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीर जैन ने किया। श्री संघीजी सांगानेर में जयपुर के आसपास के तीर्थक्षेत्रों के प्रतिनिधियों की सभा का आयोजन भी किया गया, जिसमें तीर्थक्षेत्रों की समस्याओं के बारे में पारस्परिक चर्चा विचारणा हुई। इस दौरे में राजस्थान के मंत्री श्री रवीन्द्र जैन 'बज' सपत्नीक उनके साथ थे। इस दरमियान श्री ऋषभदेव मंदिर केस के संदर्भ में श्री ऋषभदेव कमेटी के अध्यक्ष श्री केशवलालजी वाणावत एवं मंत्री वसंतलाल मेहता से भी विचार-विमर्श किया गया।

पूर्वांचल :

दिनांक 30 जून, 2014 से 4 जुलाई, 2014 तक पूर्वांचल के श्री मंदारगिरि क्षेत्र, श्री चंपापुर क्षेत्र, श्री गुणावाजी क्षेत्र, श्री पावापुरी क्षेत्र, श्री कमलदह क्षेत्र, श्री कुंडलपुर क्षेत्र, श्री राजगृही क्षेत्र एवं कोल्हुआ पहाड़ आदि क्षेत्रों का भ्रमण किया गया। इस दौरे में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीर जैन उनकी

धर्म केवल मंदिर में हीं, मूक प्राणियों के ऊपर दया करना भी धर्म है ।

धर्मपत्नी श्रीमती नीलम जैन शिखरजी शाश्वत ट्रस्ट के महामंत्री श्री छीतरमल जी पाटनी सपत्नीक, हजारीबाग पूर्वांचल कमेटी के मंत्री श्री ज्ञानचन्द जैन, गिरिडीह साथ में थे। यह यात्रा दिनांक 30 जून को श्री सम्मेदशिखर जी से प्रारम्भ हुई थी। दिनांक 1 जुलाई को पावापुरी में पूर्वांचल के अध्यक्ष श्री कन्हैयालाल जी सेठी एवं दिनांक 2 जुलाई को श्री कुण्डलपुर क्षेत्र पर बिहार स्टेट दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के मंत्री श्री अजय कुमार जैन, आरा उनके साथ रहे। 3 जुलाई को कोल्हुआ पहाड़ पर पूर्वांचल समिति के कोषाध्यक्ष दानवीर श्री महावीर प्रसाद जी सोगानी, रांची भी यात्रा संघ में सम्मिलित हुए। देवघर में झारखण्ड न्यास बोर्ड के अध्यक्ष श्री ताराचंद जी जैन एवं स्थानीय समाज के पदाधिकारियों ने यात्रा संघ का स्वागत एवं अभिनंदन किया। इसी प्रकार सभी क्षेत्रों पर क्षेत्र की कमेटियों ने यात्रा संघ का जोर-शोर से स्वागत, अभिनंदन के साथ अपने-अपने क्षेत्र की समस्याओं के बारे में अध्यक्ष जी का ध्यान आकर्षित किया।

जैन समुदाय को राष्ट्रीय स्तर पर अल्पसंख्यक का दर्जा मिला :

जैन समाज के लिए यह हर्ष का विषय है कि काफी लम्बे समय के बाद जैन समुदाय को अल्पसंख्यक का दर्जा केन्द्र सरकार ने दिया। इसमें समग्र जैन समाज विशेषकर स्व.बाल पाटिल, मुंबई का अथक प्रयास रहा। साथ ही साथ लोकसभा के सदस्य एवं केन्द्रीय अल्पसंख्यक मंत्री श्री के.के.रहमान खानजी, जिन्होंने कानूनी स्थिति पर समीक्षात्मक स्पष्टीकरण देते हुए जैन समुदाय को राष्ट्रीय स्तर पर अल्पसंख्यक मान्यता दिये जाने की संस्तुति करवाई। केन्द्रीय स्तर पर जैन समाज को अल्पसंख्यक का दर्जा दिलाने में यूपीए अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी, उपाध्यक्ष श्री राहुल गांधी, कानूनी मंत्री श्री कपिल सिब्बल एवं केन्द्रीय ग्रामीण विकास राज्य मंत्री श्री प्रदीप जैन 'आदित्य' का महनीय सहयोग रहा है, जिसके लिए तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार एवं सम्पूर्ण जैन समाज हृदय की गहराइयों से आभार व्यक्त करता है।

तीर्थों के जीर्णोद्धार एवं विकास हेतु अनुदान :

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की जीर्णोद्धार की यह नीति रही है कि वह अंचलीय समितियों की अनुशंसानुसार ही तीर्थों के जीर्णोद्धार के लिए अनुदान देती है। अब सभी अंचलों के चुनाव सम्पन्न हो गये हैं अतएव अब आगे की नीति निर्धारित की जावेगी। वर्ष 2013-14 में अभी तक निम्नलिखित तीर्थक्षेत्रों को अनुदान भेजे गये हैं -

1. श्री शत्रुंजय क्षेत्र पालीताना (गुजरात) - 11,00,000
2. श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पाल (गुजरात) - 5,00,000
3. श्री सिद्धक्षेत्र गिरनार (गुजरात) - 5,00,000
4. श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथ क्षेत्र सिरपुर-कीर्ति स्तंभ हेतु - 3,00,000
5. श्री दिग.जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, कोल्हुआ पहाड़ (बिहार)- 4,00,000
6. श्री दिग.जैन मंदिर काला बाबा बसवा (राज.) - 5,00,000
7. श्री दिग.जैन अति.क्षेत्र करगुंवा (झांसी) उ.प्र. - 2,00,000
8. श्री दिग.जैन अति.क्षेत्र करगुंवा (झांसी) उ.प्र. (ट्रस्ट से) -10,00,000
9. श्री कनकगिरि दिग.जैन अति.क्षेत्र मैसूर -10,00,000

तीर्थों के सर्वेक्षण एवं सुरक्षा हेतु सी.सी.टी.वी.कैमरा लगाने की योजना :

तीर्थक्षेत्रों की मूर्तियों की सुरक्षा हेतु क्लोज सर्किट (सी.सी.टी.वी. कैमरा) लगाये जाने की योजना भी की गई है। जिसके लिए सभी तीर्थक्षेत्रों को सर्कुलर भेजे गये हैं। इसी प्रकार तीर्थक्षेत्रों के संरक्षण, संवर्धन एवं उनकी सुरक्षा के संदर्भ में एक सर्वेक्षण फार्म छपाकर भी सभी क्षेत्रों को भेजा गया है ताकि वे अपने क्षेत्र के रेकार्ड आदि के बारे में स्वयं जागरुक हो जाएं और हमें भी उसकी जानकारी भिजवाएं, जिससे कमेटी उसका अध्ययन कर उन्हें अपने सुझाव दे सकें। कुछ तीर्थक्षेत्रों के सर्वेक्षण फार्म भरकर भी आ गये हैं और अधिकांश क्षेत्रों के फार्म भरकर अभी आने बाकी हैं।

सदस्यता :

किसी भी संस्था की सुदृढता उसके सदस्यों पर निर्भर करती है। नवनिर्वाचित प्रबंधकारिणी समिति एवं पदाधिकारियों के प्रयास से निम्नलिखित सदस्य बनाये गये हैं -

संरक्षक सदस्य (रु. 5 लाख प्रदान कर)	-	3
परम सम्माननीय सदस्य (रु. 1 लाख प्रदान कर)	-	2
सम्माननीय सदस्य (रु. 31,000/- प्रदान कर)	-	5
आजीवन सदस्य (रु. 11,000/- प्रदान कर)	-	677

हम आभारी हैं :

- सभी आचार्यों, साधु-संतों, त्यागी-व्रती श्रावक-श्राविकाओं के,जिन्होंने इस कमेटी को सशक्त बनाने के लिए अपना मंगल आशीर्वाद दिया है।
- भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के पदाधिकारी परिषद के सभी सदस्यों, प्रतिनिधि सदस्यों, सहयोगियों के जिन्होंने समय-समय पर तीर्थक्षेत्र कमेटी के कार्यक्रमों के लिए अपना अमूल्य समय निकालकर, सम्मिलित होकर अपना पूर्ण मार्गदर्शन देकर कार्यक्रम को सफल बनाया है।
- हम सभी दानदाताओं के जिन्होंने प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से आर्थिक सहयोग प्रदान कर अथवा सदस्यता ग्रहण कर हमें सहयोग प्रदान किया है।
- हम डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन 'भारती', श्रीमती नीलम जैन, श्री श्रीकिशोर जैन के, जिनका 'जैन तीर्थ वंदना' के प्रकाशन में भरपूर सहयोग मिल रहा है।
- हम कमेटी मुख्यालय के एवं शिखरजी कार्यालय के सभी कर्मचारियों को धन्यवाद देते हैं जिन्होंने इसके कार्यों को गतिशील बनाने में

धर्म किसी दुकान पर नहीं मिलता जो पैसे से खरीदा जाये ।

लगन एवं परिश्रम पूर्वक अपने उत्तरदायित्वों का निर्वाह किया है।

पश्चात् भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के उपाध्यक्ष एवं कानूनी सलाहकार समिति के चेयरमैन श्री वसंतलाल एम.दोशी ने श्री सम्मेदशिखरजी, श्री ऋषभदेव (केशरियाजी), श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथ क्षेत्र, सिरपुर एवं श्री गिरनारजी क्षेत्र के बारे में विभिन्न न्यायालयों में चल रहे मुकदमों की जानकारी प्रस्तुत करते हुए श्री ऋषभदेव (केशरियाजी) एवं श्री गिरनारजी के बारे में चल रहे समझौते के प्रयासों की जानकारी दी तथा समझौते के प्रमुख मुद्दों पर सभी को समर्थन प्रदान करने का निवेदन किया, जिसका सभा द्वारा हाथ उठाकर समर्थन किया गया।

तीर्थ सर्वेक्षण एवं विकास के चेयरमैन श्री सुनील जैन 'शिवम्' ने तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से सर्वेक्षण योजना के उद्देश्यों एवं प्रयासों की जानकारी दी और कहा कि सम्बद्ध करीब 165 तीर्थक्षेत्रों में से उनके पास अभी तक करीब 25 तीर्थक्षेत्रों से ही सर्वेक्षण फार्म भरकर आये हैं। उन्होंने उपस्थित सभी महानुभावों से अनुरोध किया कि सभी अपने-अपने क्षेत्रों से सर्वेक्षण फार्म भरकर शीघ्रातिशीघ्र भिजवा देवें, जिससे क्षेत्र के मूल दस्तावेजों के रख-रखाव के बारे में सही जानकारी हो सके।

राष्ट्रीय समन्वय समिति के चेयरमैन श्री एम.पी.अजमेरा, आई.ए.एस.(रिटा.) रांची ने समन्वय समिति के प्रयास से झारखण्ड राज्य सरकार की ओर से शिखरजी में जल समस्या के निवारणार्थ पहाड़ की तलहटी में 5 लाख लीटर पानी की बनाई गई विशाल टंकी, जिससे पूरे मधुबन में पानी की सप्लाई हो रही है, की जानकारी दी और आगे बताया कि मधुबन की सड़क जो पहले अत्यन्त सकरी होने से चलने में असुविधा हो रही थी उसे भी राज्य सरकार पर दबाव डालकर उसका चौड़ीकरण करके पक्का मार्ग बनाया गया है। बिजली की समस्या भी दूर करने के लिए पावर प्लांट बैठाये गये हैं जिससे मधुबन में अधिक समय तक बिजली की सप्लाई हो रही है। उनके इस प्रयास के लिए सभा में उपस्थित सभी प्रतिनिधियों ने कर-तल-ध्वनि से उनके प्रति आभार व्यक्त किया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने कहा कि आज हम यहाँ सुनाने के लिए नहीं अपितु सुनने के लिए आये हैं। तीर्थक्षेत्र कमेटी का गौरव आप सभी से है। धर्म तीर्थ के सृजन में आप सभी का योगदान प्रशंसनीय है। उन्होंने समय की सीमाओं का ध्यान रखते हुए सभी से अपनी-अपनी बात रखने का अनुरोध किया।

श्री बावनगजाजी क्षेत्र (चूलगिरि) बड़वानी (म.प्र.) :

श्री राजकुमार जी जैन ने क्षेत्र के विकास की योजनाओं की जानकारी देते हुए बताया कि क्षेत्र की खुली पड़ी जमीन जिसका अतिक्रमण हो रहा था उस पर बाउन्ड्रीवाल का निर्माण कराकर सुरक्षित किया गया है। करीब दो तिहाई से अधिक बाउंड्रीवाल बनकर तैयार हो गई है और करीब एक तिहाई कार्य अभी होना बाकी है। जिसके लिए तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से 5 लाख रुपये की सहयोग राशि उन्हें प्राप्त हुई है। इसके अलावा बावनगजाजी में सुविधायुक्त 36 कमरों की धर्मशाला व 24 कमरों के संत निवास के निर्माण कार्य के प्रगति की जानकारी दी।

श्री दिगम्बर जैन अति.क्षेत्र पनागर (म.प्र.) :

श्री चक्रेश जैन सिंघई ने क्षेत्र पर निर्माणाधीन 'संत निवास' के लिए सहयोग देने की अपील की और कहा कि 'जैनों को अल्पसंख्यक' घोषित किया गया है परन्तु राज्य एवं केन्द्र की ओर से हमें इसका लाभ कैसे मिल सकता है। इसकी जानकारी क्षेत्रों को उपलब्ध कराई जानी चाहिए। तीर्थक्षेत्र कमेटी का जो मोनोग्राम है वह भी सभी क्षेत्रों के प्रवेश द्वार पर बड़े आका लगाया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि मूर्तियों की सुरक्षा के लिए सीसीटीवी कैमरा लगाना अत्यन्त आवश्यक है। इसके लिए तीर्थक्षेत्र कमेटी के महामंत्री की ओर से जो प्रयास किया जा रहा है वह प्रशंसनीय है।

श्री कोल्हुआ पहाड़ दिग.जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी (बिहार):

क्षेत्र के अध्यक्ष श्री कन्हैयालाल सेठी ने बताया कि यहाँ दसवें तीर्थंकर भगवान शीतलनाथ के तप और ज्ञान कल्याण हुए हैं। विश्वास किया जाता है कि निर्वाण काण्ड में वर्णित 'कोटिशिला' क्षेत्र यही हैं। इसे **'पारसगिरि'** तीर्थ के नाम से भी जाना जाता है। क्षेत्र पर मूलभूत सुविधाओं का अत्यन्त अभाव है। अन्य धर्मावलंबियों द्वारा इस क्षेत्र पर अतिक्रमण करने का प्रयास होता रहता है। क्षेत्र के विकास हेतु एवं धर्मशाला के निर्माण हेतु जमीन खरीदी करने की अत्यन्त आवश्यकता है, जिसके लिए उन्होंने 20 लाख रुपये सहयोग देने की अपील की और बताया कि सीढ़ियों का निर्माण भी कराना आवश्यक है, ताकि यात्रियों का आवागमन बढ़ सके। उन्होंने कहा कि क्षेत्र के संरक्षण, संवर्धन एवं उसके विकास के लिए श्री विजय कुमार जी छाबड़ा, श्री धर्मचन्द जी जैन 'रारा' व श्री महावीर प्रसाद जी सोगानी, रांची का सराहनीय सहयोग मिल रहा है उनका जितना आभार माना जाय कम है।

श्री सहस्त्रफणी पार्श्व.दिगम्बर जैन अति.क्षेत्र बीजापुर (कर्नाटक) :

क्षेत्र के एवं कर्नाटक अंचलीय समिति के अध्यक्ष श्री डी.आर.शाह ने कहा कि तीर्थक्षेत्रों के सर्वेक्षण का प्रयास तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से पिछले कई वर्षों से हो रहा है। संभवतः कुछ क्षेत्रों का सर्वेक्षण भी हुआ है। अभी उनके पास जो फार्म आया है वह 10 पृष्ठों का है। अतएव इसे छोटा करीब 2 पेज का बनाना चाहिए जिससे क्षेत्र के कार्यकर्ताओं को फार्म की पूर्ति करने में आसानी हो सके। उन्होंने कहा कि तीर्थक्षेत्र कमेटी पूर्व में जो ग्रांट देती थी वह अंचलीय समितियों के माध्यम से देती थी, परन्तु पिछले कई वर्षों से यह प्रथा बंद कर दी गई है जो ठीक नहीं है। ग्रांट अंचलीय समितियों के माध्यम से ही दी जानी चाहिए।

जीवन को उन्नत और ऊँचाई पर ले जाने के लिए धर्म ही एकमात्र साधन है।

श्री दिग.जैन अतिशय क्षेत्र पजनारी (म.प्र.) :

क्षेत्र के अध्यक्ष श्री महेन्द्र कुमार जैन ने क्षेत्र की योजनाओं की जानकारी देते हुए सभी प्रतिनिधियों को क्षेत्र पर पधारने के लिए आग्रह किया तथा तीर्थक्षेत्र कमेटी के महामंत्री द्वारा तीर्थक्षेत्रों पर सीसीटीवी कैमरा एवं दिशा-निर्देश लगाये जाने की सराहना की।

श्री पटनागंज रहली क्षेत्र (म.प्र.):

श्री संतोष कुमार जैन, रहली ने क्षेत्र के विकास के लिए तीर्थक्षेत्र कमेटी के सदस्यों से सहयोग एवं मार्गदर्शन देने की अपील की और कहा कि अर्थाभाव के कारण यह क्षेत्र विकसित नहीं हो पा रहा है।

श्री देवपुरी-देरोल क्षेत्र (गुजरात) :

श्री नयन सी.दोशी ने क्षेत्र की ऐतिहासिकता एवं विकास की योजनाओं की जानकारी देते हुए बताया कि अभी कुछ ही समय पहले वहाँ जो पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न हुई है वह अपने आपमें महत्वपूर्ण है। परमपूज्य मुनिराजों के आशीर्वाद से क्षेत्र का दिन दूना रात चौगुना विकास हो रहा है।

श्री दिग.जैन अतिशय क्षेत्र करगुवां (झांसी) उ.प्र. :

झांसी से पधारे क्षेत्र के मंत्री श्री कमल जैन, झाँसी ने कहा कि करगुवां क्षेत्र (झांसी) बुंदेलखण्ड के तीर्थक्षेत्रों की वंदना करने वालों के लिए प्रवेश द्वार है। सन् 2008 में तीर्थक्षेत्र कमेटी का अधिवेशन जब इस क्षेत्र पर सम्पन्न हुआ था तब उस समय बुंदेलखण्ड के तीर्थक्षेत्रों के विकास के लिए तीर्थक्षेत्र कमेटी ने 25 लाख रुपये घोषित किये थे जिसमें से 17 लाख रुपये उन्हें प्राप्त हुए हैं। क्षेत्र पर जो गेस्ट हाउस बन रहा है उसका तीन मंजिला पूरा हो गया है। शेष कार्य की पूर्ति के लिए तीर्थक्षेत्र कमेटी से सहयोग दिये जाने की अपील की।

श्री दिग.जैन अतिशय क्षेत्र मदनपुर (ललितपुर) उ.प्र. :

प्रतिष्ठाचार्य पं. विमलकुमार जैन सोरया, टीकमगढ़ ने कहा कि तीर्थों की रक्षा का दायित्व तीर्थक्षेत्र कमेटी का है परन्तु यह कहते हुए दुःख हो रहा है कि इसके पहले जब तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष श्री आर.के.जैन थे तब उन्होंने उन्हें कई पत्र लिखे थे और प्रत्यक्ष मिलकर भी उनसे मदनपुर क्षेत्र के जीर्णोद्धार एंव विकास के लिए सहयोग देने की अपील की थी परन्तु खेद है कि अभी तक कुछ भी सहयोग राशि प्राप्त नहीं हुई है। अब इस कमेटी से भी निवेदन कर रहा हूँ कि क्षेत्र की धरोहर को नष्ट होने से बचाये। उन्होंने कहा कि खंडित प्रतिमाओं को रखने के लिए एक संग्रहालय, यात्रियों की सुविधा के लिए धर्मशाला, जल की आपूर्ति हेतु कुंआ एवं पानी की टंकी का निर्माण होना अत्यन्त आवश्यक है। इन योजनाओं में करीब 60 लाख रुपये व्यय होने का अनुमान है। अध्यक्ष जी ने आश्वासन दिया कि वे मदनपुर क्षेत्र के जीर्णोद्धार के लिए अवश्य प्रयास करेंगे।

श्री दिगम्बर जैन अति.क्षेत्र कुण्डलगिरि (कोनीजी) :

श्री अभिनंदन सांधेलीय, पाटण ने बताया कि क्षेत्र पर भोजनशाला का निर्माण कराना है जिसके लिए 16 लाख रुपये व्यय होने का अनुमान किया गया है जिसमें तीर्थक्षेत्र कमेटी को सहयोग देने की अपील की।

श्री दिगम्बर जैन अति.क्षेत्र गोलाकोट पचराई (म.प्र.):

चौधरी श्री ताराचन्द जी जैन ने क्षेत्र पर चल रहे विकास कार्यक्रमों की जानकारी दी और कहा कि 'जैनों को अल्पसंख्यक' का लाभ कैसे मिले इसकी पूरी स्कीम बनाकर तीर्थक्षेत्र कमेटी को सभी क्षेत्रों पर भेजनी चाहिए, जिससे क्षेत्र के विकास में उसका लाभ लिया जा सके।

श्री दिग.जैन अतिशय क्षेत्र जामनेर (म.प्र.) :

क्षेत्र के अध्यक्ष श्री नेमीचन्द जी ने क्षेत्र की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की जानकारी देते हुए बताया कि यह क्षेत्र अत्यन्त प्राचीन है। यहाँ आदिनाथ भगवान की अत्यन्त प्राचीन मनोज्ञ प्रतिमा विराजमान है। जिसे मुगलकाल में खंडित करने का प्रयास किया गया था। जिन चोरों ने यह कार्य करना चाहा वे अंधे हो गये। यहां प्रतिवर्ष गुड़ी पड़वा पर दो दिवसीय मेला लगता है, जिसमें मुनि महाराजों, ब्रह्मचारियों एवं त्यागी व्रती व विद्वानों को आमंत्रित किया जाता है। क्षेत्र पर मेला स्थल को बाउंड्रीवाल से सुरक्षित रखना, मुख्य प्रवेश द्वार बनवाना, मेला स्थल पर कमरों का निर्माण, आदि सुविधाओं की आवश्कता है जिसके लिए तीर्थक्षेत्र कमेटी को सहयोग करना चाहिए।

श्री दिगम्बर जैन अति.क्षेत्र श्रेयांसगिरि-सलेहा (पन्ना) म.प्र.:

क्षेत्र के महामंत्री श्री अजित कुमार जैन ने क्षेत्र के विकास कार्यक्रमों, सीमा सुरक्षा विवाद एवं क्षेत्र की भूमि पर हो रहे अतिक्रमण के बारे में अवगत किया। उन्होंने मध्यांचल के पदाधिकारियों से अनुरोध किया कि वे क्षेत्र पर पधारें और उन्हें सहयोग एवं मार्गदर्शन करें।

श्री सिद्धक्षेत्र गिरनारजी (गुजरात) :

क्षेत्र के अध्यक्ष श्री निर्मल कुमार जी बंडी, मुंबई ने गिरनारजी क्षेत्र की वर्तमान स्थिति की जानकारी देते हुए कहा कि इंदौर मेरा जन्म स्थान है और गिरनार हमारी कर्मस्थली है। श्री बंडीलाल दिगम्बर जैन कारखाना 160 वर्ष पुरानी संस्था है जिसने प्रथम टोंक से पांचवीं टोंक तक कई बार छतरियों की रिपेयरिंग करवाई। जूनागढ़ के नवाब से परमीशन लेकर सन् 1875, सन् 1902 में पांच बार छतरियों की रिपेयरिंग करवाई है। सीढ़ियों का भी निर्माण करवाया है, उसी परिवार से मैं भी हूँ और गिरनार जी के लिए पूर्णरूप से समर्पित हूँ और आवश्यकता पड़ी तो वे अपना बलिदान भी देने के लिए तैयार हैं। उन्होंने कोर्ट केसेस एवं हिन्दू महंतों के साथ चल रहे समझौता के बारे में भी सभा को अवगत किया।

पश्चात श्री पपौरा जी क्षेत्र से श्री विनय जैन सुनवाहा, श्री श्रावस्ती क्षेत्र से श्री श्रेयांस जैन, श्री मांगीतुंगी क्षेत्र से डॉ. सूरजमल गणेशलाल जी जैन,

क्रिया सहित धर्म कभी निष्फल नहीं होता।

शिवपुरी (म.प्र.) से श्री सुरेश जैन 'मारौरा' ने तीर्थ संरक्षण, पर्यावरण संरक्षण एवं आर्थिक विकास के लिए क्षेत्रों पर पेड़-पौधे कब और कैसे लगाये जाएं उसके बारे में जानकारी दी। श्री महेन्द्र जैन ने श्री रेशंदीगिरि नैनागिरि क्षेत्र के बारे में तथा अन्य पधारे हुए प्रतिनिधियों ने अपने-अपने क्षेत्र का परिचय देते हुए क्षेत्र की आवश्यकताओं एवं समस्याओं के बारे में सभा को अवगत कराया।

राजस्थान अंचल के महामंत्री श्री कमल बाबू जैन ने दो पृष्ठों का प्रतिवेदन देते हुए विश्वास दिलाया कि श्री राजेन्द्र के. गोधा, जिन्हें राजस्थान अंचल का अध्यक्ष चुना गया है उनके नेतृत्व में तीर्थक्षेत्र कमेटी उत्तरोत्तर प्रगति करेगी। केन्द्रीय कमेटी उन्हें जो भी दायित्व सौंपेगी उसे वे पूरा करने का भरसक प्रयास करेंगे।

इस अवसर पर भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के पदाधिकारी परिषद के सदस्यों के अतिरिक्त श्री मदनपुर क्षेत्र, श्री भातकुली क्षेत्र, श्री श्रावस्ती क्षेत्र, श्री महावीर ब्रह्मचर्याश्रम कारंजा, जामनेर क्षेत्र, फलहोड़ी-बड़ागांव क्षेत्र, अहार जी क्षेत्र, पपौरा क्षेत्र, देवपुरी, पजनारी, पटनागंज-रहली, कोल्हुआ पहाड, गिरनारजी, करगुवां एवं प्यावल जी क्षेत्र, बड़वानी-बावनगजाजी, करहिया, श्री सैरोनजी क्षेत्र (ललितपुर), गोलाकोट पचराई, मांगीतुंगी, थुबौनजी, कोनीजी, श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथ क्षेत्र सिरपुर, श्री गिरारजी क्षेत्र, शिवपुरी, द्रोणगिरि, रेशंदीगिरि-नैनागिरि, बंधाजी, केसापुरी, श्रेयांसगिरि-सलेहा, पावागढ़, कचनेर, जटवाड़ा, मदनपुर, उरवाया, तारंगाजी क्षेत्र के अध्यक्ष, मंत्री एवं प्रतिनिधि सदस्य तथा मध्यांचल समिति के पदाधिकारी बड़ी संख्या में उपस्थित थे। आभार प्रदर्शन की विधि तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय मंत्री श्री संतोष जैन 'पेंढारी', नागपुर ने सम्पन्न किया।

पश्चात सभा सधन्यवाद विसर्जित हुई।

विद्वत्परिषद् का खुला अधिवेशन कोटा में

श्री अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद् का ४०वाँ खुला अधिवेशन परम पूज्य मुनिपुङ्गव श्री सुधासागर जी महाराज, क्षु. श्री गंभीरसागर जी महाराज, क्षु. श्री धैर्यसागर जी महाराज के सान्निध्य एवं डॉ. जयकुमार जैन (मुजफ्फरनगर) की अध्यक्षता में दि. ४ एवं ५ अक्टूबर, २०१४ को श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, दादावाड़ी, कोटा (राज.) में आयोजित किया जायेगा। यह जानकारी देते हुए विद्वत्परिषद् के महामंत्री कर्मयोगी डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन ने बताया कि अधिवेशन में धर्म और धर्माचरण के क्षेत्र में संत, समाज एवं विद्वानों की भूमिका विषय पर विचार-विमर्श होगा। विद्वत्परिषद् कार्यकारिणी समिति की बैठक दि. ३अक्टूबर, २०१४ को होगी। श्री राजेन्द्र नाथूलाल जैन मेमोरियल चेरिटेबल ट्रस्ट, सूरत के सौजन्य से क्षुल्लक श्री गणेशप्रसाद वर्णी स्मृति विद्वत्परिषद् पुरस्कार एवं पं.गोपालदास वरैया स्मृति विद्वत्परिषद् पुरस्कार प्रदान किये जायेंगे। अधिवेशन के पूर्व डॉ. जयकुमार जैन, प्रा. अरुणकुमार जैन के निर्देशन एवं डॉ. नरेन्द्रकुमार जैन (गाजियाबाद) के संयोजकत्व तथा डॉ. अनेकान्त जैन के सहसंयोजकत्व में दिनांक २ से ४ अक्टूबर,२०१४ तक आचार्य कुन्दकुन्द साहित्य अध्यात्म राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी होगी; जिसमें विद्वत्परिषद् के सभी विद्वानों को विशिष्ट श्रोता के रूप में आमंत्रित किया गया है। संगोष्ठी के अंतर्गत श्री राजेन्द्र नाथूलाल जैन मेमोरियल चेरिटेबल ट्रस्ट, सूरत के सौजन्य से महाकवि आचार्य ज्ञानसागर पुरस्कार एवं मुनिपुङ्गव श्री सुधासागर श्रमणसंस्कृति एवं तीर्थ संरक्षण पुरस्कार प्रदान किये जायेंगे तथा जिनवाणी-सुधासागर, पावन भया जग पावस के परसे, मानव और मानवाधिकार, मूल्य और मूल्यचिन्तन, शिखर (नैतिक कहानियाँ) आदि अनेक कृतियों का विमोचन होगा। विद्वत्परिषद् के सभी विद्वानों को आमंत्रण पत्र भेजे गये हैं।

बहुत सुन्दर विचार है सबके लिए प्रेरक है -

अपने विचारों पर नजर रखिये;
क्योंकि वे शब्द बन जाते हैं।
अपने शब्दों पर नजर रखिये;
क्योंकि वे कर्म बन जाते हैं।
अपने कर्मों पर नजर रखिये;
क्योंकि वे आदत बन जाते हैं।
अपनी आदतों पर नजर रखिये;
क्योंकि वे चरित्र बन जाते हैं।

- मुनि श्री प्रमाण सागरजी महाराज

जीवन का विकास बाह्य संसाधनों से नहीं, साधना से होता है।

श्री वासुपूज्य दिगम्बर जैन चेरिटेबल मेडिकल सेन्टर एवं
अनुशासन प्रशासनिक प्रशिक्षण संस्थान का भव्य उद्घाटन

मंदिर बनाओ, पर मानव सेवा भी हो : एलाचार्य श्री अतिवीर जी

जैन संस्कृति, प्रारम्भिक अवस्था से ही प्रेम, मैत्री, अहिंसा की संस्कृति रही है। दो सौ-तीन सौ वर्ष पूर्व जहां मंदिर होता था, वहां सामाजिक सेवा का काम भी जरूर होता था। जैनियों के लिए पांच काम बताये हैं, देव-शास्त्रों के लिए जिनालयों का निर्माण, आचार्य-उपाध्यायों-साधुओं के लिए धर्मशालाओं का निर्माण, शिक्षा केन्द्रों का निर्माण, मानव सेवा के लिए औषधालयों का निर्माण। इन उद्गारों के साथ ऐलाचार्य श्री अतिवीरजी महाराज ने श्री वासुपूज्य दिगम्बर जैन चेरिटेबल मेडिकल सेन्टर एवं अनुशासन प्रशासनिक प्रशिक्षण संस्थान के भव्य उद्घाटन समारोह में अपना मंगल आशीर्वाद दिया।

देश भर से आयु अग्रणी समाजसेवियों, विद्वानों, दिल्ली के प्रमुखों से भरी धर्मसभा को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि बड़ा अजीब लगता है, जब आज बच्चों को पश्चिमी सभ्यता में डूबे देखता हूँ। जानते हैं क्यों? क्योंकि हमने उनके लिए ऐसे स्कूलों का निर्माण नहीं किया। आज आप लोग अपने बच्चे क्रिश्चियन स्कूलों में पढ़ने भेजते हैं। देखो क्रिश्चियन इससे सीखकर शिक्षा और मानव सेवा में आगे बढ़ गये और हम पिछड़ गये। ऐसे समय में जब ऐसे कार्यक्रम होते हैं, तो सम्बल मिलता है कि दीपक टिमटिमा तो रहा है, अभी बुझा नहीं है। आज आपने संतों को बांट लिया और हम संतों ने श्रावकों को बांट लिया। आज संतो ने अपने धाम बनाने शुरू कर दिए और समाज भी ऐसे धामों को बनाने में बढ़-चढ़कर सहयोग करते हैं। इससे आप जैन समाज की संस्कृति के लिए एक संत के अहंकार को जरूर पुष्ट करते हो। प्रतिमाओं और कलशों के लिए तिजोरियां खुली रखने वालो से मैं पूछता हूँ कि मानव सेवा के प्रति भी क्या उनका ध्यान गया है?

ऐलाचार्य श्री ने आगे कहा कि आज जैन समाज सुखी-समृद्ध होने के बावजूद गति नहीं पा रहा। आज मंदिरों में साधुओं के नाम पर हॉल-कमरे बन रहे हैं। आने वाले कल में तीर्थंकरों की जगह साधुओं के नाम से मंदिर जाने जायें तो हैरानगी नहीं होनी चाहिए। यहां का कार्यक्रम देखकर मैं उत्साहित हूँ कि इस टिमटिमाते दीपक में कुछ ने तो तेल डाला। खुशी है कि अब नौजवान मानव-सेवा के लिए आगे बढ़ रहे हैं। मंदिर बने पर कितने, यह सोचना होगा? क्या पड़ोसी को भूखा छोड़ देना चाहिए? आज गरीब को दो जगह मार पड़ती है- एजुकेशन और मेडिकल पर। आज दिगम्बर जैनियों में सामर्थ्य है, शक्ति है, सम्पन्नता है, पर संगठन की कमी है।

इस नये वेंचर में सहयोग कर रहे हैं तीर्थक्षेत्र कमेटी के महामंत्री और पारस चैनल के चेयरमैन श्री पंकज जैन। उन्होंने बताया कि समाज और देश की तरक्की के लिए आज जरूरत है कि हमारे बच्चे सिविल सर्विसेज में जाएं। उसके लिए यहां प्रशासनिक प्रशिक्षण केन्द्र खोला गया है। 37 बच्चों को पढ़ने के लिए यहां रखा जाएगा। उनकी कोचिंग, आवास, भोजन पर तीन से चार लाख रुपये प्रति विद्यार्थी का खर्च आएगा, जिसे यह प्रशिक्षण संस्थान वहन करेगा। इस समय 22 विद्यार्थी कोचिंग ले रहे हैं। अगस्त से और नये बच्चों का दाखिला किया जाएगा।

इसके अलावा मेडिकल सहायता में उच्च प्रकार की सब तरह की जांच, डायलेसिस, दंत उपचार, नेत्र जांच व उपचार, ओपीडी आदि अत्यन्त न्यूनतम चार्जेस पर होगा। यदि उसमें किसी प्रकार की कमी पड़ती है, वह सब खर्चा वहन करेंगे। ऐसे दानी समाज में विरले ही मिलते हैं जो चंचला लक्ष्मी का उपयोग ज्ञान और औषधि में लगाते हैं।

डॉ. श्रेयांस जैन ने कहा कि महावीर भगवान ने सेवा को उच्च धर्म बताया है। मानव सेवा में अगर आप लगते हैं तो आपका मनुष्य जन्म सफल हो जाता है।

दिल्ली प्रदेश कांग्रेसाध्यक्ष श्री अरविन्द सिंह लवली ने कहा कि जैन दर्शन ने हजारों वर्ष पहले कह दिया और आज सारी दुनिया मानती है कि मानवता को जिंदा रखने के लिए शाकाहार जरूरी है। विश्व के लिए पर्यावरण की सुरक्षा जरूरी है।

तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष श्री सुधीर जैन, कटनी ने कहा कि इस दुनिया में क्वान्टिटी (Quantity) से नहीं क्वालिटी (Quality) से पहचान होती है। संख्या से नहीं, गुणों से पहचान होती है जैनों की। सबके भीतर ज्ञानपुंज है, उसे विकसित करें।

तीर्थक्षेत्र कमेटी के महामंत्री श्री पंकज जैन, प्रसिद्ध उद्योगपति श्री अशोक पाटनी के सहयोग की सराहना की गई तो गांधी नगर समाज के अध्यक्ष श्री मदनलाल जैन के सफल प्रयासों की भी भूरि-भूरि प्रशंसा की गई।

- श्री किशोर जैन, नई दिल्ली

धर्म केवल मंदिर में हीं, मूक प्राणियों के ऊपर दया करना भी धर्म है ।

अनुशासन प्रशासनिक प्रशिक्षण संस्थान के भव्य उद्घाटन की झलकियाँ

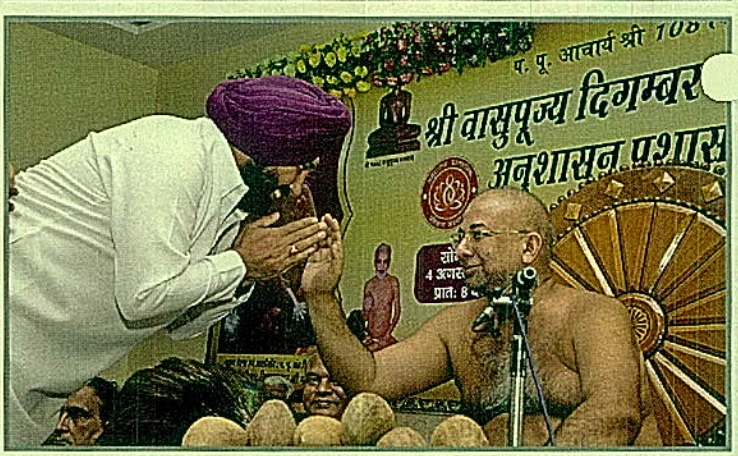

बिना पूछे न बोलें और पूछने पर असत्य न बोलें।

प्लास्टिक अपशिष्ट और हम

संकलन एवं प्रस्तुतीकरण, राजरतन

वर्तमान में प्लास्टिक से निर्मित सामान तथा पॉलिथीन थैलियों का चलन लगातार बढने के परिणामस्वरुप नगरों के घरेलू अपशिष्ट में पॉलिथीन व प्लास्टिक अपशिष्ट की मात्रा भी निरंतर बढती जा रही हैं, जिसके परिणामस्वरुप नाली/सीवर लाइनों के चोक होने, पर्यटक स्थलों पर पर्यावरणीय दुष्प्रभाव, जानवरों द्वारा पॉलिथीन की थैलियां खाए जाने के अलावा अनेक पर्यावरणीय समस्याएं भी परिलक्षित हो रही है।

प्लास्टिक अपशिष्ट का उद्‌गम सील

घरेलू प्लास्टिक बैग, बोतल, कंटेनर आदि।
अस्पताल इन्जेक्शन, सिरींज, ग्लूकोज बॉटल, रक्त एवं यूरिन थैलियां एवं दस्ताने आदि।
होटल पेकिंग की वस्तुएं, पानी की बोतलें, प्लास्टिक की प्लेट, ग्लास, चम्मच आदि।
वायु, रेल, सडक परिवहन पानी की बोतलें, प्लास्टिक की प्लेट, ग्लास, चम्मच एवं प्लास्टिक बैग आदि।

समस्याएं

- प्लास्टिक पूर्ण रुप से अविघटनीय होता है तथा पर्यावरण में यह सौ वर्षों से अधिक समय तक बना रहता है।
- पॉलिथीन का कचरा जमीन पर फेके जाने पर नष्ट नहीं होता है तथा लंबे समय तक बने रहने से जमीन की जल प्रवाहन एवं जलधारण क्षमता को विपरित रुप से प्रभावित कर उत्पादन क्षमता घटाकर उसे बंजर बना देता है एवं भूमिगत जल के संवर्धन में बाधा उत्पन्न करता है।
- पॉलिथीन की यत्र – तत्र फेंकी गई पन्नियां नालियों में फंसकर दूषित जल के प्रवाह को रोक देती है, जिससे गंदगी नालियों से बाहर फैलने लगती है। पीने के पानी की लाइन में लीकेज होने पर यह पन्नियां वितरण के उपरान्त टूटी पाईप लाइन के अन्दर जाकर पुनः वितरण के समय जल अवरोध की स्थिति तथा प्रदूषण का कारण बनती हैं। घरेलू कचरे के साथ प्लास्टिक कचरा जलाए जाने पर यह डाई आक्सिन एवं फ्यूरेन जैसी विषैली गैसे उत्पन्न करता है जिससे श्वास रोग, केंसर तथा मृत्यु तक हो सकती है। इससे उत्पन्न धुंए से बच्चों के स्वास्थ्य पर व्यस्क की तुलना में 6 गुना ज्यादा प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है ।
- प्लास्टिक की पन्नियों में भरकर खाद्य पदार्थ जूठन के रूप में फेंक दिया जाता है, जिसको पालतू पशुओं द्वारा खाये जाने से यह पन्नियां आंतों में अवरोध उत्पन्न कर उनकी मृत्यु का कारण बनती है । सर्वेक्षण द्वारा ज्ञात हुआ है की पन्नियों को खाने से प्रतिदिन 5 गायों की मौत हो रही है ।
- पॉलीथीन कचरा जलाने पर ग्रीन हाउस गैसों को बढ़ावा देती है । परिणामतः ग्लोबल वार्मिंग व ओजोन परत को क्षति पहुंचती है ।
- घरेलू कचरे एवं कृषि बागवानी कचरे से बनने वाली कंपोस्ट खाद की गुणवत्ता प्लास्टिक कचरे के कारण विपरित रूप से प्रभावित होती है, जिससे वह हानिकारक अपशिष्ट में परिवर्तित हो जाता है।
- यह अनुमानित है की प्रतिवर्ष 1.2 बिलियन प्लास्टिक केरी बेग बिना किसी शुल्क के खुदरा व्यवसायियों के द्वारा उपभोक्ताओं को उपलब्ध कराए जाते हैं । परिणामस्वरूप अनावश्यक रूप से प्लास्टिक अपशिष्ट में वृद्धि हो रही है ।
- रंगीन अथवा काले रंग की पालीथीन थैलियों में रखी गई खाद्य सामग्री पन्नी के रंग के प्रभाव से दूषित हो जाती है और स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव डालती है ।
- पॉलीथीन की थैलियां वजन में हल्की होने के कारण सार्वजनिक स्थानों को दूषित करती है पर्यटन स्थलों, धार्मिक स्थलों, बाग बगीचों, तालाब, पोखरों आदि का सौंदर्य नष्ट करती है एवं वहां की मृदा को बंजर बनाती है ।

निदान

भावी पीढ़ी के स्वास्थ्य एवं पर्यावरण की रक्षा हेतु निम्नलिखित बिंदुओं पर ध्यान देकर एवं उसके अनुसार कार्यवाही कर आप पॉलीथीन के कचरे के नियंत्रण में अपना बहुमूल्य सहयोग दे सकते है ।

REDUCE – न्यूनता

- घर से निकलते समय कागज़, जूट अथवा कपड़े की थैली अवश्य साथ में रखे।
- दुकानदार द्वारा पॉलीथीन की थैली में सामान देने पर उसे हतोत्साहित करें तथा पॉलीथीन कचरे के दुष्प्रभावों की जानकारी भी उसे देवें । पॉलीथीन के बदले में कागज के लिफाफे के प्रयोग के लिए प्रोत्साहित करें ।

स्वाध्याय करने से साधना में निखार आता है।

- अपने आसपास पॉलीथीन विरोधी माहौल तैयार करें जिससे यह एक वृहद आंदोलन का रूप ले सके और जनसामान्य पॉलीथीन का उपयोग स्वतः बंद कर सके ।
- किसी भी प्रकार की पुनः चक्रित व रंगीन पॉलीथीन में खाद्य पदार्थों का भंडारण/पैकिंग न करे एवं नैतिक दायित्वों का पालन करते हुए अन्य लोगों को रोकें ।
- पुनः चक्रित, रंगीन, खुरदुरी, व छोटे आकार की पॉलीथीन थैलियों का बहिष्कार करें ।
- बाजार से सुन्दरता के चक्कर में नित नये प्लास्टिक के बर्तन खरीदने के बजाय यथासंभव उपलब्ध धातु के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
- अपने दैनिक जीवन में पॉलीथीन/प्लास्टिक से बनी वस्तुओं का कम से कम उपयोग करें।

Reuse – पुनःउपयोग

- अनेक छोटी प्लास्टिक बोतलें खरीदने के बजाय बड़ी बोतले खरीदे ।
- एक ही बोतल को पुनर्भरण के उपयोग में लाए।
- बुके में प्रयोग में की गई पॉलीथीन मोटी व पारदर्शी होती है। इसको फुलों के बुके से आराम से निकालकर साफ करके इसका पुस्तकों पर कवर चढ़ाया जा सकता है ।
- पतली पॉलीथीन के छोटे छोटे टुकड़े की खेल खिलौने जैसे गुड़िया आदि में रबर या फोम के स्थान पर भरने में इनका उपयोग किया जा सकता है ।
- मिनरल वाटर की बोतल को बीच में से काटकर उपर के भाग को अलग कर दें। नीचे का आधा भाग जो मिलेगा उसमें मिट्टी आदि भरकर पौधा लगाया जा सकता है अथवा नर्सरी के लिये बीज रोपकर इसमें पौधा भी तैयार किया जा सकता है । उपर के कटे हुए भाग को फनल की तरह प्रयोग किया जा सकता है । दीवाल पर हेंगिग शोभादार व फूलदार पौधों के लिए दीवार पर चिपका दिया जा सकता है ।
- दूध के पेकेट, मोटी पॉलीथीन, प्लास्टिक की बोतलें, डिब्बे, इन्हें एकत्रित कर रखते जाऐं तथा बाद में इन्हें कबाड़ी को बेच दें । इससे आर्थिक लाभ भी होगा तथा साथ ही इससे कचरे में न फेंकने से कचरे में कमी आएगी । आपके सहयोग से यह सामग्री कचरे में न जाकर पुर्नचक्रण के लिये भेजा जाना संभव हो सकेगा ।
- शादी व अन्य समारोह में प्लास्टिक के डिस्पोजेबल गिलास का अधिकता में उपयोग किया जाता है जो कि एक बार पानी पीने के बाद उपयोगी नहीं रह जाते है । इनकी संख्या सैकड़ों में होती है । इन गिलासों का उपयोग हम नर्सरी में पॉलीथीन के स्थान पर पौधा तैयार करने में कर सकते हैं ।
- डिस्टेम्पर पेन्ट के प्लास्टिक के डिब्बों का प्रयोग बाल्टी की भांति किया जा सकता है ।
- प्लास्टिक की बाल्टी, टब, आदि टूट जाने पर इनका उपयोग गमलों के स्थान पर किया जा सकता है ।
- अस्पतालों से निकलने वाली ग्लूकोस की प्लास्टिक की बोतलों से आकर्षक फ्लावर पॉट तैयार किये जा सकते हैं ।

Recycle पुनर्चक्रीकरण

- यदि प्लास्टिक / पॉलीथीन कचरे को प्रभावी रूप से पृथक कर लिये जाने की सुदृढ़ व्यवस्था सुनिश्चित कर ली जावे तो ऐसे प्लास्टिक को मोल्डिंग की विशेष मशीनों की सहायता से प्लास्टिक ब्लाक्स के रूप में मोल्ड कर इन ब्लाक्स का उपयोग बिटूमिन तथा अन्य प्लास्टिक एडहेसिव के साथ मिलाकर सड़क निर्माण, डिवाइडर, विभिन्न चौराहों पर बनाये यातायात नियंत्रण चक्र तथा अन्य उचित स्थानों पर किया जा सकता है ।
- नगर निगम / नगर पालिका द्वारा रखे गए कचरादानों में ही कचरा फेंके और कचरे के समुचित प्रबंधन में सहयोग करें ।
- अपने क्षेत्र में प्लास्टिक के पुर्नचक्रण का प्रसार करे एवं प्लास्टिक अपशिष्ट को एकत्रित कर छोटे पुर्नचक्रण इकाइयों तक पहुँचाने की व्यवस्था करे ।

उपसंहार

प्लास्टिक अपशिष्ट के उपचार कि तुलना में प्लास्टिक का उपयोग लगातार बढता जा रहा हैं, जों की 2030 तक 10 गुना बढ़ जायगा। यदि हम वर्तमान में प्लास्टिक के उपयोग को कम नहीं करेंगें तो भविष्य मे यह एक गंभीर समस्या का रूप ले सकती हैं।

Email : response@rajratan.in

मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान ने आचार्य विद्यासागरजी से आशीर्वाद ग्रहण किया

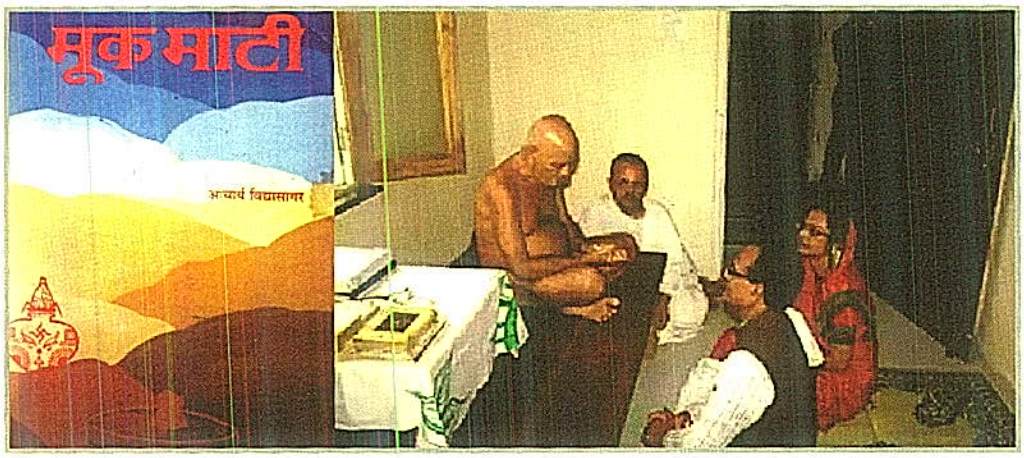

मध्यप्रदेश के विदिशा नगर में चातुर्मास रत दिगम्बर जैन जगत के संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के दर्शनार्थ म.प्र.के मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान 3 अगस्त रविवार को पहुंचे । 23वें तीर्थंकर भगवान श्री पार्श्वनाथजी के निर्वाण कल्याणक पर निर्वाण लाडू समर्पित करने के उपरांत विदिशा के शीतलधाम (हरिपुरा) में विशाल प्रवचन सभा का आयोजन हुआ । जिसमें मुख्यमंत्री श्री चौहान का अभिनंदन भी किया गया । मुख्यमंत्रीश्री चौहान, धर्मपत्नी साधनासिंह चौहान के साथ आचार्यश्री की चरण वंदना करते हुए कहा कि यह म.प्र. का सौभाग्य है कि आचार्य विद्यासागरजी जैसे महातपस्वी संत म.प्र.की भूमि पर चातुर्मासरत हैं । आचार्यश्री के साहित्य सृजन की चर्चा करते हुए श्री चौहान ने आचार्यश्री द्वारा रचित महाकाव्य 'मूकमाटी' को म.प्र. की उच्चशिक्षा के पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने की घोषणा की।

श्री चौहान ने आचार्यश्री द्वारा हिन्दी भाषा की प्राथमिकता के मद्देनजर कहा कि प्रदेश के हिन्दी विश्वविद्यालय में मेडिकल और इंजीनियरिंग की पढ़ाई भी हिन्दी माध्यम में की जाएगी, उन्होंने कहा कि अंग्रेजी भाषा हमारे विद्यार्थियों की प्रतिभा को कुंठित करती है निज भाषा पर हमें गर्व होना चाहिए । श्री चौहान ने इस अवसर पर शासन की अनेक योजनाओं को रेखांकित भी किया । वित्तमंत्री श्री जयंतमलैया के साथ उन्होंने आचार्यश्री के मंगल प्रवचन भी श्रवण किए । म.प्र.शासन द्वारा कुण्डलपुर में बड़े बाबा मंदिर के निर्माण की स्वीकृति प्रदान किए जाने पर समिति द्वारा श्री चौहान व श्री मलैया का अभिनंदन किया गया ।

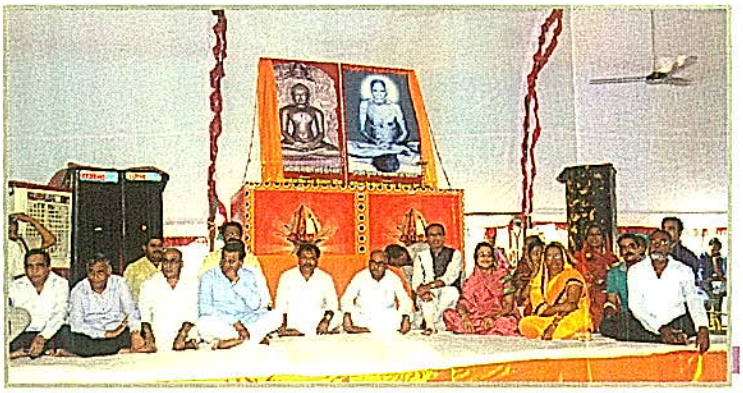

6.30 घंटे में 700 मुनियों को अर्पित किए सवा लाख श्रीफल, उमड़ी आस्था

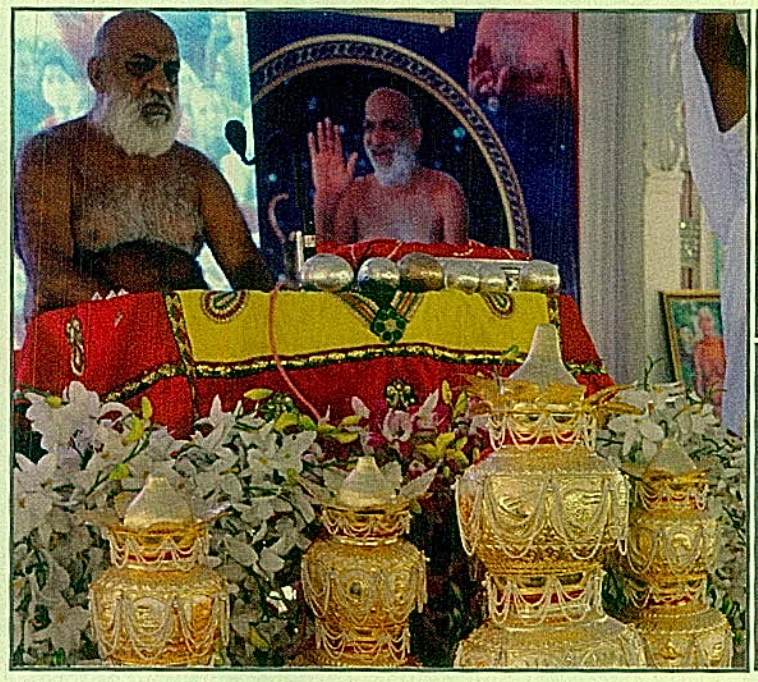

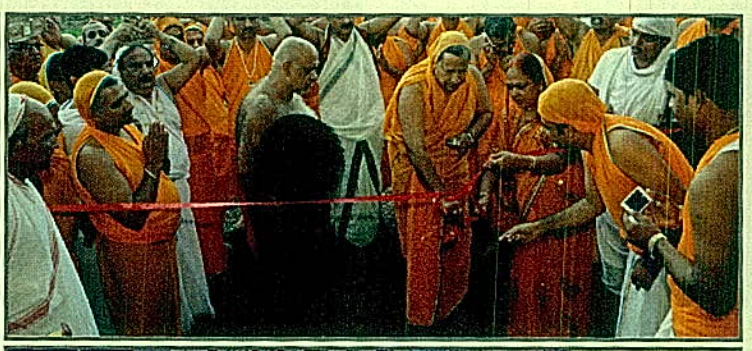

कोटा, 10 अगस्त। धार्मिक नगरी कोटा में जैन समाज की ओर से रक्षाबंधन पर रविवार को प्रदेश का सबसे बड़ा धार्मिक पर्व मनाया गया। जैन समाज के राष्ट्रीय संत मुनि पुंगव सुधा सागरजी महाराज के सानिध्य में खुशगवार मौसम के बीच भव्य पांडाल के नीचे हजारों की तादाद में मौजूद श्रद्धालुओं की मौजूदगी में 700 जैन मुनियों को मंत्रोच्चारण के बीच सवा लाख श्रीफल सहित अर्घ्य अर्पित किए गए। पूजन वस्त्रों में जैन समाज के 108 परिवारों ने बोली लगाकर श्रीफल अर्पित करने का सौभाग्य हासिल किया। दिगंबर जैन धर्म प्रभावना समिति कोटा की ओर से आरएसी ग्राउंड में सुबह 6 बजे से दोपहर 12.30 बजे तक श्रमण संस्कृति रक्षा पर्व मनाया गया। 25 हजार 200 वर्ग फीट के भव्य वाटर प्रूफ पांडाल में श्रीफल चढ़ाने का कम आरंभ हुआ तो श्रद्धालुओं की आस्था देखते बनी। महाराजश्री के जयघोष गूंजते रहे। देखते ही देखते श्रीफलों का पहाड़ बन गया। श्रद्धालु इस नजारें को मोबाइल कैमरे में कैद करते दिखे। जबलपुर से आए संगीतकार अवशेष कुमार एंड पार्टी द्वारा जैन भजनों की प्रस्तुति हुई। मंचासीन सुधासागरजी महाराज ने सभी सात सौ मुनियों का मंत्रोच्चारण के साथ नाम लिया और आदिकाल में उन पर आए उपसर्ग के घटनाकम पर विस्तृत प्रकाश डाला। आयोजन समिति के मुख्य संयोजक हुकुम जैन काका ने बताया कि श्रीफलों की व्यवस्था समिति द्वारा की गई। करीब साढ़े छह घंटे तक चले इस समारोह में सवा लाख श्रीफल अर्पित किए गए। इस कार्यकम में एकत्र राशि को गौशालाओं में पलने वाले गौवंश की सेवा के लिए दी जाएगी। श्रावक श्रेष्ठी देवेंद्र पांडिया परिवार प्रादप्रक्षालन किया।

छह हजार से ज्यादा श्रद्धालुओं ने लिया धर्म व संस्कृति रक्षा का संकल्प

सुधा सागरजी महाराज ने मौजूद श्रद्धालुओं को धर्म व संस्कृति रक्षा का संकल्प दिलाया। कहा कि धर्म के प्रति श्रद्धा रखेंगे तो जीवन में कभी अमंगल नहीं होगा। धर्म की रक्षा करोगे तभी तुम्हारी भी रक्षा होगी। देश की रक्षा के लिए जब सैनिक मर मिटने को तत्पर रहता है तो देशवासियों को भी चाहिए कि धर्म व संस्कृति की रक्षा के लिए सदैव तैयार रहे। धर्म रक्षा के लिए प्राण भी देने पड़े तो पीछे न रहे। मुनि सुधा सागरजी महाराज के सानिध्य में हुए इस महोत्सव में छह हजार से ज्यादा श्रद्धालुओं ने हाथ खड़े कर धर्म व संस्कृति की रक्षा का संकल्प लिया। समिति के महामंत्री गोपाल जैन एडवोकेट ने बताया कि पांडाल में काउंटर लगाकर राखियों की व्यवस्था की गई थी। श्रद्धालुओं ने एक–दूजे को धर्म रक्षा सूत्र बांधे। समारोह में समिति के अध्यक्ष कैलाशचंद्र सर्राफ, गुलाबचंद चुने वाला, प्रकाश बज, अज बाकलीवाल, मनोज जैन आदिनाथ, राकेश जैन मडिया, ऐश्वय जैन, नरेश जैन, जंबू जैन सर्राफ, पदमचंद जैन, उशा बाकलीवाल, लेखा जैन, निषा जैन सहित बड़ी तादाद में राजस्थान, महाराष्ट्र, दिल्ली, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ सहित अन्य राज्यों से आए श्रद्धालु मौजूद रहे।

गाजे बाजे के साथ तीर्थंकर प्रतिमाओं को लाए पांडाल में

नसियांजी मंदिर समिति के महामंत्री विरेंद्र जैन आदिनाथ ने बताया कि आयोजन आरंभ होने से पहले अल सुबह गाजे–बाजे के साथ नसियांजी मंदिर से सात तीर्थंकर भगवान की प्रतिमाओं को आयोजन स्थल पर लाए। पांडाल में विराजमान किया। मानो ऐसा लगा रहा था भगवान का साक्षात क्षमवषरण सजा हो। इस मौके पर 11 वें तीर्थंकर भगवान श्रेयांसनाथ का मोक्ष कल्याण पर्व भी मनाया गया। लखपत कासलीवाल परिवार ने लाडू चढ़ाया। 14 श्रावकों ने षांतिधारा की। 2001 की यादे ताजा हुई तब कोटा में महाराजश्री के सानिध्य में 36 हजार श्रीफल चढ़ाएं गए थे। सोमवार को नसियांजी मंदिर में सुबह 7.40 बजे धर्म सभा होगी।

वात्सल्यपूर्ण व्यवहार ही धर्म है।

छपारा (मध्यप्रदेश) में श्री 1008 भगवान महावीर स्वामी जी की चतुर्थ कालीन प्रतिमा प्राप्त

छपारा।

राष्ट्रीय राजमार्ग क्र. 7 पर पावन बैनगंगा नदी के तट पर स्थित धर्म नगरी छपारा में स्थित भव्य जिनालय में भू-गर्भ से प्राप्त लगभग 2000 वर्ष प्राचीन चतुर्थ कालीन भव्य मनोहारी श्री 1008 भगवान महावीर स्वामी जी की प्रतिमा स्थापित है। सन् 1980 के दशक में परमपूज्य गुरुश्री 108 श्री विद्यासागरजी महाराज ने जैसे ही इस भव्य प्रतिमा के दर्शन किये तो गुरु जी ने बड़े बाबा की महिमा को फौरन पहचान लिया। गुरु श्री ने छपारा वासियों के सौभाग्य की सराहना कर आशीष भी दिया, बस उसी दिन से बड़े बाबा एवं छोटे बाबा दोनों ही महती अनुकंपा से धर्मनगरी सदैव अपने बड़े बाबा की भक्ति में लीन है। 2001 में वंदनीय आर्यिकारत्न श्री दृढ़मति माताजी के पावन वर्षायोग के सानंद समापन उपरांत गुरुश्री जी के पावन सान्निध्य में त्रिमूर्ति जिनालय प्रतिष्ठा-महा महोत्सव गजरथ महोत्सव भी सम्पन्न हुआ। इसी दौरान पूज्य माताजी ने समाज को बड़े बाबा जी की वेदिका के नव निर्माण हेतु प्रेरित किया।

पूज्य माताजी की प्रेरणा एवं गुरुश्री के मंगलमय आशीष से 12 वर्ष की लंबी अवधि में जो निर्माण समाज ने कराया वो अद्वितीय ही नहीं, राष्ट्रीय ख्याति प्रदान करने वाला साबित हुआ, नव निर्मित रजत वेदिका में श्री बड़े बाबा जी की स्थापना एवं वेदिका प्रतिष्ठा महामहोत्सव पूज्यनीय दृढ़मति माताजी के ही पावन सान्निध्य में 15 से 18 जून को सम्पन्न कराया गया। इस महामहोत्सव को सम्पन्न कराने में समाज को सम्माननीय प्रतिष्ठाचार्य बा.ब्र. श्री प्रदीप भैया अशोकनगर का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। त्रिदिवसीय इस महामहोत्सव में पधारे सैकड़ों श्रावकों ने श्री बड़े बाबा के दर्शन की अनुभूति को संयोये रखने का अवसर पाया।

नित्य पूजन अभिषेक, विधान, पूजन, हवन आदि क्रियाओं के पश्चात नगर में एक भव्य शोभायात्र ने नगर में अभूतपूर्व धर्मप्रभावना का वातावरण निर्मित किया।

उल्लेखनीय है कि नवनिर्मित रजत वेदिका में जैसे ही श्री बड़े बाबा जी के जिनबिंब को स्थापित किया गया उपस्थित जनसमुदाय जयघोष कर अपने आनंद एवं उत्साह का प्रदर्शन करने लगा। नवनिर्मित रजत वेदिका में विराजमान होने के बाद अब श्री बड़े बाबा के दर्शन से मन पुलकित हो रहा है।

आगंतुक श्रद्धालु इस अवसर पर नगरवासियों के सौभाग्य की सराहना कर रहे हैं।

श्री गुरुदेव नमः !

सूरत में परम पूज्य आचार्य श्री सुनील सागरजी महाराज के सान्निध्य में हुई जैनेश्वरी मुनि दीक्षा के दृश्य

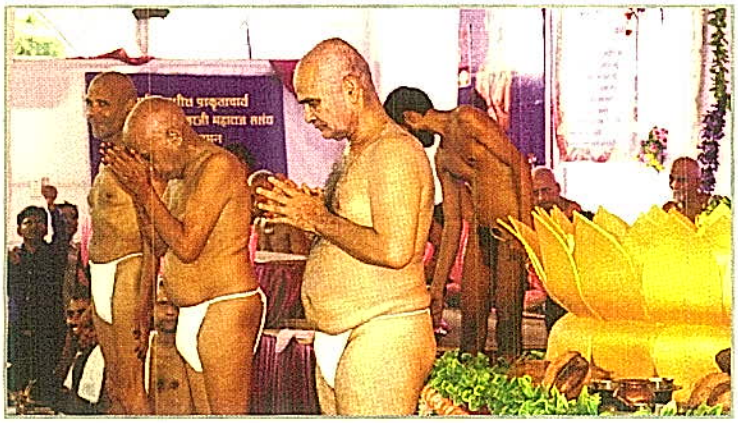

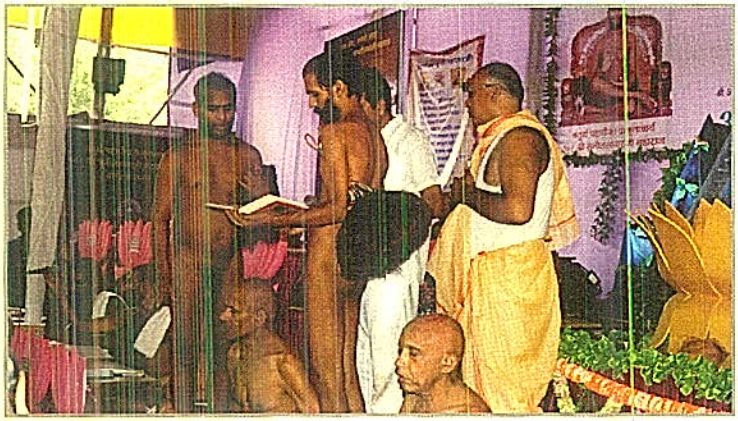

स्वस्तिश्री भट्टारक स्वामीजी द्वय का अभिनन्दन

स्वस्तिश्री भुवनकीर्ति भट्टारक स्वामीजी, श्री क्षेत्र कनकगिरि एवं स्वस्तिश्री धवलकीर्ति भट्टारक स्वामी, अरिहंतगिरि को विद्यालय का प्रतीक चिह्न भेंट करते हुए स.सं.वि.वि. के प्रति कुलपति श्री यदुनाथ दुबे जी एवं प्रो. अशोक कुमार जी जैन, श्री अजय कुमार जी जैन (मंत्री) एवं श्री विमल कुमार जी जैन (प्रबंधक)।

श्री स्याद्वाद महाविद्यालय के पूर्व स्नातक स्वस्तिश्री भुवनकीर्ति भट्टारक एवं स्वस्तिश्री धवलकीर्ति भट्टारक स्वामी जी का वाराणसी आगमन पर महाविद्यालय के सभा कक्ष में दिनांक 30.06.2014 को श्री जयकृष्ण जी जैन की अध्यक्षता में अभिनंदन समारोह का आयोजन किया गया है।

संपूर्णानंद संस्कृत वि.वि. से सम्बद्ध महाविद्यालय के तत्वावधान में महाविद्यालय के पूर्व स्नातक तथा वर्तमान में भट्टारक परम्परा में क्षेत्र कनकगिरि, मैसूर के भट्टारक भुवनकीर्ति जी को संपूर्णानंद संस्कृत वि.वि. के प्रतिकुलपति प्रो. यदुनाथ दुबे (मुख्य अतिथि) द्वारा स्वर्ण पदक (आचार्य में प्राकृत एवं जैनागम विषय में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने पर) प्रदान किया गया तथा प्राकृत एवं जैनागम विषय में आचार्य परीक्षा की डिग्री प्रदान की गयी। इसी अवसर पर श्री क्षेत्र तिरूमलय (अरिहंत गिरि) के भट्टारक धवलकीर्ति का भी विद्यालय परिवार ने स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया। धवलकीर्ति स्वामी जी को पूर्व में संपूर्णानंद संस्कृत वि.वि. स्वर्ण पदक दिया जा चुका है। ज्ञातव्य है कि भट्टारक द्वय ने आचार्य की परीक्षा महाविद्यालय से उत्तीर्ण की है।

कार्यक्रम में दीप प्रज्ज्वलन भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के पूर्व अध्यक्ष श्री आर.के.जैन, मुंबई; श्री अजय कुमार जैन, आरा; श्री जयकृष्ण जैन, श्री दीपक जैन एवं श्री विमल कुमार जैन ने किया। अतिथियों का स्वागत करते हुए विद्यालय के मंत्री श्री अजय कुमार जैन ने कहा कि इन महान विभूतियों का सम्मान करके हम गौरवान्वित हैं। भट्टारक द्वय ने अपने छात्र जीवन को स्मरण [illegible] हुए कहा कि इस विद्यालय के साथ हमारा गहरा संबंध है। इस विद्यालय में रहकर कई वर्ष तक जैन विद्या के साथ-साथ अन्य शास्त्रों (ज्योतिष, संगीत आदि) के अध्ययन का स्वर्णिम अवसर जो हमें प्राप्त हुआ उसे हम अपना सौभाग्य समझते हैं। हमारी आस्था व परम्परा से जुड़ी यह संस्था देश की सर्वाधिक प्रतिष्ठित जैन शिक्षण संस्था है। इसी भावना के फलस्वरूप हमें वहां अध्ययन करने का पूर्ण अवसर मिला। इसी विद्यालय में अध्ययन के फलस्वरूप भट्टारक जैसे पावन पद पर प्रतिष्ठित होने का भी अवसर प्राप्त हुआ है। हमारे जीवन में नया आयाम, नई दिशा मिली, ऊर्जा और प्रकाश मिला यह सब श्री स्याद्वाद महाविद्यालय की देन है।

मंगलाचरण निर्मला जैन ने एवं संचालन डॉ. आकाश जैन एवं धन्यवाद प्रबंधक श्री विमल कुमार जैन ने किया। अभिनंदन समारोह के संयोजन का कार्य कार्यालय एवं पुस्तकालय अधीक्षक श्री सुरेन्द्र जैन द्वारा किया गया।

- सुरेन्द्र जैन, भदैनी, वाराणसी

पितृहीन विद्यार्थियों को छात्रवृत्तियां

दिल्ली की प्रमुख समाजसेवी संस्था तरुण मित्र परिषद द्वारा श्री किशन गुप्ता स्मृति छात्रवृत्तियां वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। परिषद के महासचिव श्री अशोक जैन ने बताया कि इस कार्यक्रम में कक्षा नौवीं से बारहवीं तक के पितृहीन अथवा विकलांग विद्यार्थियों को छात्रवृत्तियां, स्कूल बैग व स्टेशनरी आदि प्रदान की जायेगी। जरुरतमंद विद्यार्थी आवेदन पत्र 8 अगस्त तक पातः 10 बजे परिषद कार्यालय- एफ-236, मंगल बाजार, लक्ष्मी नगर, दिल्ली-92 से प्राप्त कर सकते हैं। यह कार्यक्रम परिषद के पूर्व संरक्षक श्री किशन गुप्ता की स्मृति में 25 अगस्त को आयोजित किया जायेगा । अध्यक्ष सुभाष जैन के अनुसार 'श्रद्धा सदन' का प्रथम स्थापना दिवस 15 अगस्त को मनाया जायेगा।

- अशोक जैन, दिल्ली
महासचिव, तरुण मित्र परिषद

श्री महावीर ग्रुप ऑफ इण्डस्ट्रीज

संस्थापक एवं निदेशक
दयाचन्द जैन (फ्रीडम फाईटर)
मो. 98141 75293

IN THE SERVICE OF NATION 1970 ESTD.

मैनेजिंग डायरेक्टर
राजेन्द्रकुमार जैन
मो. 98140 92613

जगराओ (पंजाब)	श्री गंगानगर (राजस्थान)	जम्मू (कश्मीर)	कोलकाता (बंगाल)
223191, 223103	2494412	2547876	98304 86979
222 093, 228962	2494413	2547239	99973 4272

आर्यिका रत्न पूर्णमती माताजी का रजत जयंती संपन्न

बांसवाड़ा । संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज की आज्ञानुवर्ती परम शिष्या आर्यिका रत्न 105 श्री पूर्णमती माताजी का 25वां दीक्षा रजत जयंती समारोह बांसवाड़ा (राजस्थान) में 31 जुलाई से 4 अगस्त तक अत्यंत हर्षोल्लास के साथ मनाया गया । खान्दू कॉलोनी बांसवाड़ा में हुए उक्त भव्य आयोजन के पुण्यार्जक बनने का सौभाग्य आर.के. मार्बल ग्रुप किशनगढ़ के विमल तारिका पाटनी परिवार मिला । समारोह से लौटकर राजेन्द्र जैन 'महावीर' ने बताया कि भव्यातिभव्य आयोजन में आचार्य छत्तीसी विधान, अनुभूति सभा, दीक्षा दिवस, ध्यान कवि सम्मेलन, शोभायात्रा आदि आयोजन हुए जिनमें देश भर के हजारों श्रद्धालुओं ने सम्मिलित होकर आर्यिका संघ से आशीर्वाद प्राप्त किया ।

ऐसी 'अनुभूति' करो कि 'सहानुभूति' की जरुरत न पड़े

– पूर्णमती माताजी

समारोह में पधारे हजारों गुरुभक्तों को संबोधित करते हुए पूर्णमती माताजी ने कहा कि जैन होने का मतलब ममता व करुणा होना है, जितनी करुणा जीवों के प्रति होगी उतना मन पवित्रता से भर जाएगा । जीवन में ध्यान रखें कि एक द्रव्य दूसरे द्रव्य का कुछ भी नहीं कर सकता है । जीवन में जितने ज्यादा दुष्ट होंगे उतने कष्ट होंगे, कोई किसी का कुछ कर नहीं सकता है । इसलिए भावों को पवित्र बनाने का कार्य करों । जीवन में ऐसी अनुभूति करें कि आपको सहानुभूति की आवश्यकता ही न पड़े । जिंदगी को बेहतर बनाने के लिए, नेक नियत, ईमानदारी की भावनाएं रखें । दुनिया में सबसे तेज रफतार भावनाओं की होती है । सभी मिलकर अच्छी भावनाएं सारी दुनिया में फैला दें । देशभर से आए गुरुभक्तों ने अपनी अनुभूति को व्यक्त करते हुए माताजी के आशीर्वाद को श्रेष्ठ बताया । श्रीमती सुशीला पाटनी, शांता पाटनी, तारिका पाटनी (आर.के.मार्बल) सहित अनेक श्रेष्ठीजनों ने अपनी भावनाये व्यक्त की । दृष्टि पब्लिक स्कूल सनावद एवं महिला मण्डलों द्वारा रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए जिन्हें सभी ने सराहा ।

6 वर्ष की उम्र में ले लिया था ब्रह्मचर्य व्रत

राजस्थान के डूंगरपूर में सन् 1963 में अक्षय तृतीया पर जन्मी वीणा ने 1969 में सम्मेदशिखर जी यात्रा के दौरान आचार्यश्री शिवसागरजी महाराज से ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण किया था । धार्मिक संस्कारों में पली बढ़ी वीणा ने युग प्रमुख आचार्यश्री विद्यासागरजी का आशीर्वाद प्राप्त किया और 1989 कुण्डलपुर में आर्यिका दीक्षा प्राप्त कर 'आर्यिका पूर्णमती' नाम प्राप्त किया था। अनेक पूजन, विधानों की रचयित्री आर्यिका पूर्णमती माताजी कोकिलकंठी, हसमुख, प्रखर वक्ता, सहृदय व्यक्तित्व की धनी है। जिनके मुख से निकली वाणी से श्रद्धालु सहज आकर्षित हो जाते हैं ।

– राजेन्द्र जैन 'महावीर'

तीर्थ महिमा

तीर्थ - पन्थ की रज अति पावन
भवि वि-रजी हो जाता है ।
तीर्थ - भ्रमण की महिमा अद्भुत
भव का भ्रमण मिटाता है ।।

तीर्थ-क्षेत्र-हित द्रव्य–दान थी
सुथिर सम्पदा दाता है ।
तीर्थ-पूजने वाला जग में
जगदीश्वर पद पाता है ।।

धर्म किसी दुकान पर नहीं मिलता जो पैसे से खरीदा जाये ।

सैनिक सीमा पर एवं संत संस्कृति की रक्षा करते हैं

- मुनिश्री वीरसागर

खुरई। मुनि दीक्षा समारोह पर मुनिश्री वीरसागरजी महाराज ने कहा कि अपने माता-पिता, घर-परिवार, एशोआराम को त्याग कर जिस तरह सैनिक सीमा पर हमारे राष्ट्र की रक्षा करता है वैसे ही संत अपनी भारतीय संस्कृति की रक्षा के लिए अपना संपूर्ण जीवन कुर्बान कर देता है। जैन मुनि तो वस्त्र आदि का भी त्याग कर 28 मूल गुणों का पालन करते हुए हजारों-लाखों मुमुक्षुओं के लिए प्रेरित कर मोक्ष मार्ग प्रशस्त करने में अपनी महती भूमिका का निर्वाहन करते हैं। यह पलायनवाद नहीं, राष्ट्र धर्म है।

मुनिश्री ने कहा कि कोई भी साधक जब मुनि दीक्षा लेता है वह न तो पलायन ही करता है और न ही पूजा, लाभ, यश, कीर्ति की चाह के लिए मुनि बनता है। वैभव संपदा, स्वर्ग की चाह भी मुनि नहीं करता। एकांत से जो ऐसा सोचते हैं उनका सोचना भी गलत नहीं है परन्तु उन्हें समीचीनता से विचार करना चाहिए कि संसार के दल-दल से निकलने का कोई अन्य रास्ता है भी तो नहीं। यदि कोई 'गणाचार' या 'हजाराचार्य' बनने के लिए यदा-कदा दीक्षा आदि प्रदान कर भी देता है तो वह भी उसके कर्मों के अधीन रहता है। सच्चे गुरु विरले व्यक्तियों को ही प्राप्त हो पाते हैं। अपवाद प्रत्येक स्थान पर हो सकते हैं। मुनि धर्म अंगीकार करना तलवार की धार पर चलने से भी अधिक कठिन होता है। दीक्षा अपने स्वयं की अपनी आत्मा के कल्याण के लिए भक्त से भगवान बनने के लिए धारण करनी होती है। बहुत समता परिणामों को अंगीकार करना पड़ता है।

मुनिश्री ने कहा कि जैन साधक पुरुषार्थहीन भी नहीं होता वह प्रातः 3 बजे से मध्य रात्रि तक धर्म साधना में रत रहता है। मात्र एक बार आहारचर्या को उठते हैं और आपको उसके बदले में तीन-तीन बार स्वाध्याय, प्रवचन आदि के

माध्यम से कल्याण का मार्ग बताते हैं। उनके वात्सल्य एवं करूणा भाव सभी के प्रति समान रहते हैं वह न तो किसी को श्राप देते हैं और न ही किसी को प्रसन्न होकर वरदान ही देते हैं। राजा आए या रंक, चोर डाकू आएं या महात्मा, नेता आए या अभिनेता सबके कल्याण की भावना रखकर ही आशीर्वाद प्रदान करते हैं। वह राग-द्वेष से ऊपर उठकर अपने परिणामों को सतत निर्मल बनाने का प्रयास करते हैं।

मुनिश्री ने कहा कि गृहस्थ व्यक्तियों, जद्दोजहद भरी जिंदगी उनकी छल-प्रपंच से भरी दिनचर्या को देख मन दुखी होता है एवं इसको देखकर मुनियों के वैराग्य में असंख्यात गुणी वृद्धि होती है। संसार के मोहजाल से विरक्ति का मार्ग वह सदैव श्रद्धालुओं के बताते हैं। वह हमेशा गृहस्थ को सद्गृहस्थ बनने के लिए प्रेरित कर स्वयं का कल्याण तो करता ही है जग के कल्याण की भी भावना भाते रहते हैं। संपूर्ण विश्व में अमन-शांति कायम हो यही तो धर्म का मूल मंत्र हुआ करता है।

वयोवृद्ध समर्पित समाजसेवी श्री शांतिलाल दोशी, इंदौर का निधन

इंदौर । दिगम्बर जैन समाज के वयोवृद्ध समाजसेवी 85 वर्षीय श्री शांतिलाल दोशी, इंदौर का 10 जुलाई, 2014 को निधन हो गया। वे तीर्थक्षेत्र कमेटी के सदस्य थे साथ ही साथ दिगम्बर जैन समाज इंदौर के वर्षों से पदाधिकारी रहे। हूमड़ जैन समाज के भी वे पदाधिकारी थे। वस्त्र व्यवसाय से उन्होंने अपना जीवन प्रारम्भ किया। इंदौर के विश्व विख्यात कांच मंदिर की व्यवस्था श्री माणकचंद मगनीराम गोठ के माध्यम से उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे एक उसाही एवं कर्मठ व्यक्तित्व के धनी, समाज के गौरव महापुरुष थे। उनके निधन से जैन समाज की अपूरणीय क्षति हुई है।

कर्मठ समाजसेवी श्री गुलाबचन्दजी बाकलीवाल, इंदौर को पुत्र वियोग

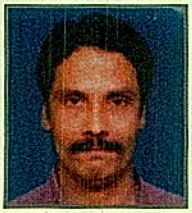

इंदौर दिगम्बर जैन समाज के प्रमुख, वयोवृद्ध, सक्रिय एवं कर्मठ समाजसेवी श्री गुलाबचन्दजी बाकलीवाल के सुपुत्र श्री मुकेश बाकलीवाल का अल्पायु में 8 जुलाई, 2014 को स्वर्गवास हो गया।

वह आटो पार्ट्स के प्रमुख व्यवसायी श्री अनिलजी (भोपाल) एवं प्रसिद्ध ट्रांसपोर्ट व्यवसायी श्री शांतिलालजी (इंदौर) के अनुज तथा रेलवे सलाहकार मण्डल के सदस्य एवं कांग्रेस पार्टी के सक्रिय नेता इंदौर ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष श्री संजय बाकलीवाल के ज्येष्ठ भ्राता थे। वह अत्यन्त ही सरल, व्यवहार कुशल एवं कर्मठ व्यक्तित्व के धनी थे। परिवार ने उनकी स्मृति में एक पारमार्थिक न्यास के गठन का संकल्प लिया है जिसके माध्यम से जरूरतमंद लोगों को चिकित्सा एवं औषधि हेत आर्थिक सहायता उपलब्ध करायी जावेगी।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार दिवंगत आत्माओं के प्रति अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके शोक संतप्त कुटुम्बीजनों को यह अपार दुःख सहन करने की शक्ति मिले, ऐसी वीर प्रभु से प्रार्थना करता है।

जहां सत्य होता है वहां अहिंसा होती है ।

स्वर्णभद्र कूट गूंज उठा पारस बाबा के जयकारों से हजारों ने चढ़ाया मोक्ष सप्तमी लाडू

मोक्ष सप्तमी के अवसर पर स्वर्णभद्र कूट पार्श्वनाथ टोंक पर देश भर से आए हजारों भक्तगणों ने निर्वाण लाडू चढ़ाया। तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से आयोजित इस अवसर पर विशेष व्यवस्था की गयी थी। तीर्थक्षेत्र कमेटी, मधुबन शाखा के प्रबंधक सुमन ने बताया कि इस वर्ष पूरे मधुबन को सजाया गया और एक टेम्परेरी कार्यालय बनाया, जिसमें यात्रियों को सभी प्रकार की जानकारी दी गयी और निर्वाण लाडू ले जाने की व्यवस्था की गयी। निहारिका से तलहटी तक सजावट और आकर्षक लाइटें, पांच जगह स्वागत तोरण द्वार ने यात्रियों का अभिनंदन किया।

ज्ञातव्य है कि भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा भोर होते ही बीसपंथी जिनालय से लेकर चलते हैं। श्री दिगम्बर जैन शाश्वत तीर्थराज सम्मेद शिखर ट्रस्ट के उपाध्यक्ष श्री किशोर जैन (दिल्ली) ने मंत्रोच्चारण के साथ वेदी से प्रतिमा सिर पर विराजमान कर गाने बाजे व अनेक भक्तगणों के बीच पार्श्वनाथ भगवान की जयकारों के साथ स्वर्णभद्र कूट के लिए शोभायात्रा प्रारम्भ की। साथ में चल रहे थे आचार्य सुदेश सागर महारज, मुनि आदर्श सागर महाराज, मुनि रविनन्दी जी महाराज, मुनि निरंजन सागर, सुरत्नमति माताजी व अनेक दूर-दूर से यात्रीगण। प्रवीन कुमार जैन (सान्ध्य महालक्ष्मी, दिल्ली), सुरेन्द्रपाल जैन (शंकर नगर दिल्ली), चन्द्रशेखर शान्तिलाल कासलीवाल व वर्धमान पाण्डे (नासिक) चौगुले भण्डारी, सुधाकर प्रबंधक, ब्र. सरोज दीदी, संजय जैन पुजारी, महावीर प्रसाद सेठी, कन्हैयालाल सेठी, सुनील जैन (दिल्ली), नवीन जैन (कोडरमा) सहित सैकड़ों भक्तगण उपस्थित थे।

कभी सूरज बादलों की ओट में छिपता, कभी दिखता, ऐसा लग रहा था कि वृक्ष मौन भाव से भक्तगणों की जयकार ध्वनि सिद्धालय पहुंचा रहे हैं। रास्ते भर दोनों ओर खड़े वृक्ष भक्तों का सम्मान करते दिखाई दे रहे थे।

स्वर्णभद्र कूट पर शोभायात्रा के साथ प्रतिमा जी लगभग 9 बजे पहुंची, जहां विशाल जनसमूह ने भगवान पार्श्वनाथ की जयकारों से आसमान गुंजायमान कर दिया। स्वर्णभद्र कूट में बादलों के स्पर्श ने उत्साह दुगुना-चौगुना कर दिया। श्रीजी को वहां सिंहासन पर विराजमान कर ध्वजारोहण, मंगल कलश, चार अभिषेक कलशों, शांतिधारा प्रथम लाडू की बोलियां लगाई गई। ध्वजारोहण ललित जैन (दिल्ली), मंगल कलश राकेश चन्द जैन (गाजियाबाद), चार अभिषेक कलश क्रमशः सुरेश चन्द पटौदी (छिन्दवाड़ा), नरेन्द्र झांझरी (कोडरमा), राजेश गंगोत्री (बोरीवली), सुरेन्द्र जैन, तथा प्रथम निर्वाण लाडू अभिषेक जैन ने चढ़ाने का सौभाग्य प्राप्त किया। हजारों श्रद्धालुओं ने लाडू चढ़ाया और श्रीजी की आरती की। तत्पश्चात् शोभायात्रा के साथ ही श्रीजी को स्वर्णभद्र कूट से बीसपंथी कोठी ले जाया गया। मार्ग में नवीन शाहदरा का युवा दल एवं भक्तों का रेला पूरे रास्ते भजन गाता हुआ साथ-साथ चला। पूजा-अर्चा का यह कार्यक्रम सन् 1996 से लगातार चल रहा है।

इस अवसर पर श्री चन्द्रप्रभ तीर्थयात्रा संघ, गांधी नगर के महामंत्री श्री

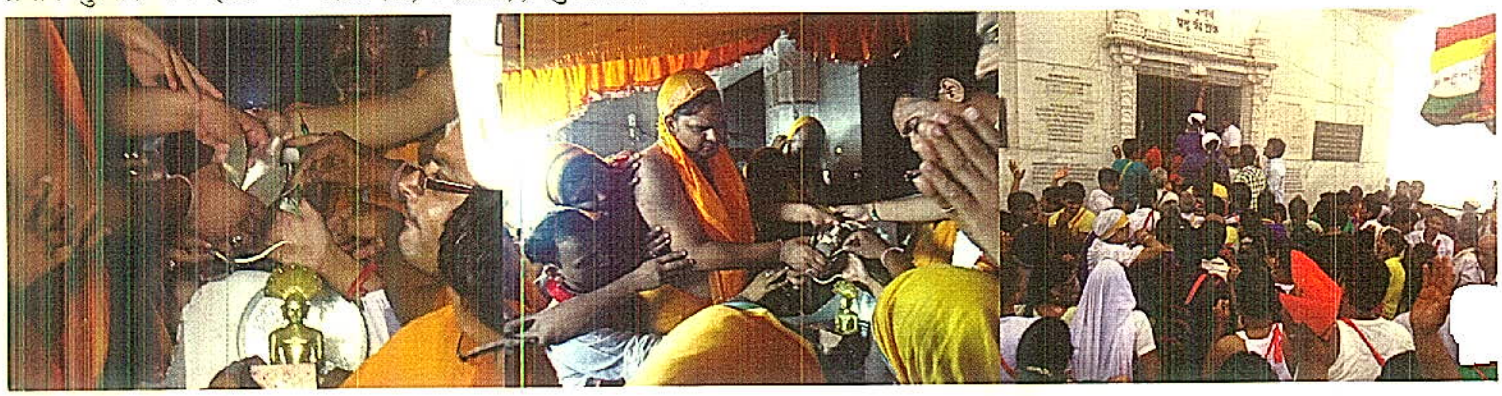

बुद्धिमान व्यक्ति सुनते सब की हैं लेकिन करते मन की है।

विजेन्द्र कुमार जैन एवं महावीरा चैनल के चेयरमैन श्री दिगंबर जैन ने 250 लोगों को निःशुल्क यात्रा कराई और तेरापंथी कोठी में विधान कराया। कई जैन संस्थाओं ने यात्रियों के लिये निःशुल्क भोजन की व्यवस्था कराई, जिनमें अग्रणी रहीं जैन लाईफ (हरियाणा भवन में) एवं शिखर मित्र मंडल (गुणायतन में)। अनेक जगह प्रसाद रूप हलवा, मेवा, लाडू, कचौड़ी, पेय पदार्थों का निःशुल्क वितरण किया गया। गुरु सौरभ सागर सेवा समिति, दिल्ली प्रदेश ने स्वर्णभद्र कूट पर फ्री चैकअप कैम्प लगाया।

उल्लेखनीय है कि जैनों के 24 तीर्थंकरों में 23वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ की अलौकिक विशेषता है। पिछले दस जन्मों (भवों) से वह कमठ वैरी द्वारा सताये गये, लेकिन वह सदैव त्याग और तपस्या में लीन रहे। आखिर में जब भगवान को केवलज्ञान हो रहा था, उससे पूर्व उसी वैरी कमठ ने पत्थर, ओले और आग बरसाई, लेकिन भगवान पार्श्वनाथ अडिग तपस्या में लीन केवलज्ञान के बाद निर्वाण प्राप्त किया। यह दिन था श्रावण शुक्ला सप्तमी का। इसी दिन जैन निर्वाण लाडू चढ़ाते हैं। यह दिन मोक्षसप्तमी और मुकुट सप्तमी दिवस के नाम से विख्यात है। भगवान पार्श्वनाथ ने कमठ वैरी को सदैव क्षमा किया और कभी बदला नहीं लिया। उन्होंने अपनी त्याग और तपस्या से दुश्मन पर विजय पाई। आज पूरे हिन्दुस्तान में जितने भी जैन मन्दिर हैं, भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा जरूर मिलेगी। यही उनकी विलक्षणता है। ऐसे पावन अवसर पर शिखरजी में हजारों नर-नारी आकर अपना शीश झुकाते हैं।

भगवान पार्श्वनाथ का नाम करण

अब हम भगवान पार्श्वनाथ का नाम करण और उनकी सिद्धालय यात्रा का वर्णन करते हैं, जिनके चरण कमलों के ध्यान से सर्वश्रेष्ठ मुक्ति निकटवर्ती या समीपस्थ हो जाती है उन तीर्थंकर पार्श्वनाथ का मैं मन से उनके चरणों का पार्श्ववर्ती होकर आश्रय लेता हूँ। जिनके सिर पर सात फणों वाला मुकुट सुशोभित होता है उन नील वर्ण वाले प्रभु पार्श्वनाथ की मैं उपासना करता हूँ।

लोहाचार्य द्वारा कथित उन पार्श्वनाथ की पंचकल्याणकों से दीपित सुशोभित कथा को कहता हूं जम्बू नामक विशाल द्वीप में भरत भूभाग के क्षेत्र मे एक काशी नामक देश था उस देश में एक वाराणसी नगरी थी। वह नगरी रत्नों से परिपूर्ण और चारों तरफ से सुन्दर व श्रेष्ठ थी। उस नगरी में सुख से परिपूर्ण विश्वसेन नामक राजा हुआ था। उसकी शुभ लक्षणों वाली एक वामा नामक रानी थी। उस रानी के साथ उन महाराज विश्वनाथ ने अपने पूर्वसंचित पुण्यकर्मों के फल के प्रभाव से प्रतिदिन शुभकारी सुख को भोगा। राजा और रानी दोनों के ही देवगृहतुल्य घर में इन्द्र की आज्ञा से कुबेर ने अनेक प्रकार के रत्नों की बरसात की। तथा उसके बाद शुभ वैसाख सुदी द्वितीया को रात्रि के अन्तिम प्रहर में उस रानी ने सोलह स्वप्नों को देखा। उन स्वप्नों के अन्त में अपने मुख से प्रविष्ट होते उन्मत्त हाथी को देखकर जागी हुई वह सुन्दर मुख वाली रानी राजा के पास गई। राजा के मुख से स्वप्नों का फल सुनकर तथा अपने गर्भ में देव को धारण करके रानी परम तेज से सुशोभित हुईं।

गर्भकाल बीत जाने पर पौष कृष्णा ग्यारस के दिन पूर्व दिशा में सूर्यास्त के समान प्रकाशित होते हुये जगत्प्रभु तीर्थंकर ने रानी के गर्भ से जन्म लिया। तभी वहां आकर देवताओं के साथ प्रसन्नचित्त सौधर्म इन्द्र ने प्रभु को ग्रहण किया और सुमेरु पर्वत पर लेकर पहुंच गया। सुमेरु पर्वत पर स्थित पाण्डुक शिला पर क्षीर सागर से लाये जल द्वारा विधिपूर्वक भगवान् का

अभिषेक करके दिव्य आभूषणों से उन्हें सुसज्जित करके वह इन्द्र वाराणसी आ गया। वहां राजा के आंगन में प्रभु को विराजमान करके हर्ष सहित उनकी पूजा करके, आश्चर्यकारी ताण्डव नृत्य करके उनका पार्श्वनाथ नाम रखकर, और जयघोष करके वह इन्द्र राजा की अनुमति से देवताओं सहित स्वर्ग चला गया।

एक दिन कुमार अवस्था में क्रीड़ा के लिये वन को गये तीनों लोकों के स्वामी प्रभु ने सम्यग्ज्ञान शून्य, पंचाग्नितप में संतप्त, जिनागम बाहय आसुरि विद्या वाले, तप में लीन एक कमठ नामक तपस्वी को देखा। वहाँ अग्नि में नाग से युक्त एक जलते हुये काष्ठ को देखकर अवधिज्ञान से दोनों प्राणियों को जलता हुआ जानकर तथा इस तपस्वी को थोड़ा कुछ कहकर प्रभु पार्श्व कुमार तत्क्षण ही अत्यधिक वैराग्य को प्राप्त हुये। उसी समय लौकान्तिक देवों ने आकर प्रभु को कुमारावस्था में ही संसार से विरक्त जानकर अनेक प्रकार से उनकी स्तुति की। उसी समय वहाँ उपस्थित हुये इन्द्र ने भी जयकार करते हुये विमला नाम की पालकी प्रभु के सामने रखकर उनको प्रणाम किया। उसके बाद वैराग्य लक्ष्मी को धारण किये प्रभु इन्द्र द्वारा लायी गयी पालकी पर चढ़कर मोक्ष पाने हेतु दीक्षा के लिये सहेतुक वन में पहुंच गये। उन्होंने पौष कृष्णा दशमी के दिन तीन सौ राजाओं के साथ मुनिदीक्षा को ग्रहण कर लिया। तभी चौथे मन पर्यय ज्ञान को प्राप्त करके यह मुनिराज आहार हेतु गुल्म नगर में पहुंच गये।

उस नगर में धन्य नामक राजा ने भक्तिभाव से उन मुनिराज की पूजा करके गोदुग्ध का उत्तम आहार दिया और पंचाश्चर्यों को देखा। इसके बाद मुनिराज ने मौनव्रत सहित परिषहों को सहते हुये एक वर्ष तक उग्र व महान् तपश्चरण किया। तपश्चरण से अपने कर्म कलंक को जला देने वाले उन प्रभु ने चैत्र कृष्णा एकम को देवदारू वृक्ष के नीचे केवल ज्ञान प्राप्त कर लिया। इसके बाद कुबेर द्वारा रचे गये अद्भुत समवसरण में अपने प्रभामण्डल के कारण भगवान हजारों सूर्य के समान सुशोभित हुये।

उस समवसरण में गणधरों द्वारा एवं बारहों कोठों में स्थित सभी भव्य जीवों द्वारा स्तुति और वन्दना किये गये प्रभु ने अपनी कृपा से सभी को देखा।

सम्मेद शिखर यात्रा

पुण्यशाली देशों या शुभ आर्य क्षेत्र के देशों में अपनी स्वाधीनता से विहार करते हुये तीनों लोक के अधिपति प्रभु पार्श्वनाथ एक माह आयु की अवशिष्टता जानकर सम्मेद शिखर पर्वत पर गये। उस सम्मेदशिखर पर्वत पर स्वर्णभद्र कूट को प्राप्त करके महान यतीश्वर जिन्होंने पहिले ही मोह शत्रु को जीतकर जिनेन्द्र पदवी पायी ऐसे उन पार्श्वनाथ प्रभु ने कायोत्सर्ग करके श्रावण शुक्ला सप्तमी को मोक्ष प्राप्त किया।

धन से सुविधायें मिल सकती हैं सुख नहीं।

कलश स्थापनाकर्ता- प्रथम कलश-श्री अशोक जी जैन, विदिशा (म.प्र.), द्वितीय कलश - श्री कॅवरलाल अशोक जी पाटनी, मदनगंज-किशनगढ़ (राजस्थान), तृतीय कलश - श्री प्रभात जी, मुंबई; चतुर्थ कलश - श्री पंकज विशाला, दिल्ली; पंचम कलश - श्री शैलेन्द्र कुमार जी (शैलू) सागर (म.प्र.)

सूरत, गुजरात में प. पू. आचार्य श्री सुनीलसागरजी महाराज के सान्निध्य में मनाये गये मोक्ष सप्तमी का दृश्य

कलश स्थापना धारुएड़ा (हरियाणा) दिनांक 11/07/2014 गणिनी आर्यिका 105 स्याद्वादमती माताजी के सान्निध्य में बाएं से खड़े हैं श्री विजय कुमार जैन (धारुखेड़ा), श्री प्रदुमन जी पाटनी (इंदौर), श्री शिखरचन्द पहाड़िया (मुंबई) एवं श्री राजीव जी जैन (जयपुर)।

हमारा धर्म कथनी प्रधान नहीं, करनी प्रधान है।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार में हम हृदय की गहराईयों से आप सभी का स्वागत करते हैं, अभिनंदन करते हैं।

संरक्षक सदस्य

श्री प्रवीण कुमार सुदर्शनलाल जैन
दिल्ली

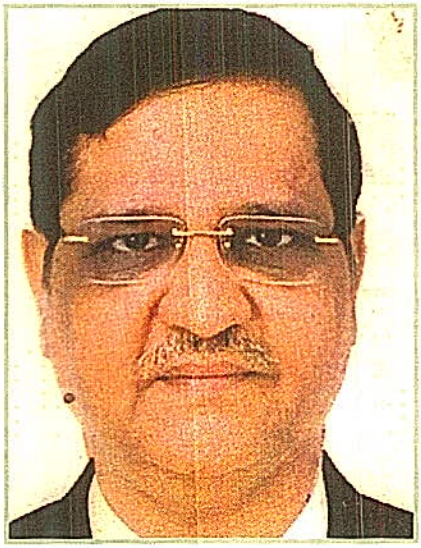

मेसर्स संतोष ललिता जैन फाउण्डेशन, कोलकाता
प्रतिनिधि- श्री संतोष कुमार जैन (सेठी), कोलकाता

परम सम्माननीय सदस्य

श्री खंडेलवाल दिग.जैन पंचायत पार्श्वनाथ मंदिर,औरंगाबाद
प्रतिनिधि - श्री ललितकुमार बबनलाल पाटनी

मेसर्स सुन्दरलाल जैन धर्मशाला ट्रस्ट, आगरा
प्रतिनिधि- श्री मनोज कुमार जैन

सम्माननीय सदस्य

श्री संजय कुमार सुरेशचन्द जैन
भीलवाड़ा

श्री नवीन प्रेमचन्द जैन
दिल्ली

श्री राकेश कुमार शम्भूदयाल जैन
दिल्ली

श्री कुंदकुंद कहान पारमार्थिक ट्रस्ट
प्रतिनिधि- श्री केतन शांतिलाल शाह, मुंबई

सरलता, सादगी और सद्भावना ही जीवन का सही धर्म है।

परमपूज्य एलाचार्य श्री श्रुतसागर जी 'आचार्य' पद पर प्रतिष्ठित

रविवार, 27 जुलाई, 2014, नई दिल्ली। परमपूज्य श्वेतपिच्छाचार्यश्री विद्यानन्दजी मुनिराज ने **52वाँ दीक्षा दिवस** के अवसर कुन्दकुन्द भारती में आयोजित धर्मसभा में कहा कि– शरीर आदि बाह्य पदार्थों को सजाने में हम बहुत समय लगाते हैं, लेकिन उससे हमारा वास्तविक भला नहीं होगा, आत्मा का कल्याण तो अपने जीवन को सम्यक्दर्शन, ज्ञान, चारित्र रूपी त्रिरत्नों को सजाने से ही होगा। इसी पर ध्यान देना चाहिए और इसके लिए रोज पूजा-पाठ स्वाध्याय करना चाहिए।

परमपूज्य आचार्यश्री का पाद-प्रक्षालन श्री सतीश चन्द जैन (SCJ) सपरिवार, नवीन पिच्छि श्री अनिल जैन (नेपाल) सपरिवार, शास्त्र भेंट श्री विनय जैन (ग्रीनपार्क) सपरिवार ने भेंट किए।

परमपूज्य आचार्यश्री विद्यानन्द जी मुनिराज ने अपने प्रिय शिष्य परमपूज्य एलाचार्यश्री श्रुतसागर जी महाराज को श्रावण शुक्ल, प्रतिपदा, रविपुष्य योग में विधि-विधानपूर्वक **आचार्य पद** पर प्रतिष्ठित किया। मंत्र पाठ एवं शंखनाद एवं करतल ध्वनि के साथ उनका स्वस्तिक लेखन किया गया। पूज्य श्रुतसागर जी का पाद-प्रक्षालन श्री सतीश चन्द जैन (SCJ), पिच्छि भेंट श्री राकेश जैन (ग्रीनपार्क) एवं शास्त्र श्री सुशील जैन (रोहतक रोड़) ने भेंट किए। ध्यातव्य हो कि पूज्य एलाचार्यश्री को 21 फरवरी, 1988 में **मुनि दीक्षा**, 18 अप्रैल, 1998 को **उपाध्याय दीक्षा** एवं 8 दिसम्बर, 2006 को **एलाचार्य दीक्षा** प्रदान की गई।

श्री सतीश चन्द जैन (SCJ) ने परमपूज्य एलाचार्यश्री श्रुतसागर जी महाराज की वैशाली में कठिन परिस्थितियों में उल्लेखनीय भूमिका निभाने के लिए उनके प्रति समाज की ओर से अपनी विनयांजलि अर्पित की।

कार्यक्रम में मुनिश्री अनुमान सागर जी एवं गणिनी आर्यिका प्रज्ञमती माताजी का भी समारोह को आशीर्वाद प्राप्त हुआ।

श्री सतीश चन्द जैन (SCJ) द्वारा परमपूज्य एलाचार्यश्री श्रुतसागर जी महाराज को आचार्य पद प्रदान करने की घोषणा करते ही तालियों की गड़गड़ाहट एवं जयकारों से सभास्थल गूँजता रहा।

कुन्दकुन्द भारती के अध्यक्ष साहूश्री अखिलेश जैन एवं महामंत्री श्री मुकेश कुमार जैन, कुन्दकुन्द भारती न्यास के सभी न्यासीगण, भगवान महावीर स्मारक समिति वैशाली के अध्यक्ष श्री स्वदेश भूषण जैन एवं श्री रमेश चन्द जैन (अध्यक्ष–ग्रीनपार्क जैन समाज), मुनि विहार समिति के संघपति श्री राजेन्द्र जैन (ग्रीनपार्क) तथा दिल्ली जैन समाज के गणमान्य महानुभाव एवं बाहर से पधारे महानुभावों ने पूज्य आचार्य संघ के प्रति अपनी विनयांजलि प्रकट करते हुए श्रीफल समर्पित किए।

'मंगलाचरण' करते हुए प्रो. (डॉ.) वीरसागर जैन ने जैन शास्त्रों के अनुसार दीक्षा दिवस की भावना का महत्त्व समझाया कि इससे वैराग्य की वृद्धि होती है। इस अवसर पर श्री प्रदीप जैन, श्रीमती उषा जैन (ग्रीनपार्क), श्रीमती अंजू जैन (सैनिक फार्म), सुश्री मेघा जैन ने भजन एवं काव्य-पाठ श्रीमती त्रिशला जैन एवं श्रीमती प्रभाकिरण जैन ने प्रस्तुत किए। सभा संचालन करते हुए श्री सतीश जैन (आकाशवाणी) ने परमपूज्य आचार्यश्री जी द्वारा किए गए महत्त्वपूर्ण कार्यों का समाज के बीच उल्लेख कर पुरानी स्मृति को ताजा किया।

प्रेषक– **सतीश चन्द जैन (SCJ)**

कुन्दकुन्द भारती, 18-बी, स्पेशल इंस्टीट्यूशनल एरिया, नई दिल्ली-110067

सम्पर्क सूत्र – 09810081861, 09871139942, ई-मेल : scjain@scjgroup.net, वेबसाईट : www.lordmahavirbirthplace.com

न्यासी कुन्दकुन्द भारती–नरेश जैन (कामधेनु सरिया) दिल्ली

ASHIANA GROUP A Symbol of Quality

ASHIANA ISPAT LIMITED

(ISO 9001-2008 Certified Co.)

Mfr.: ASHIANA®, KAMDHENU, AL KAMDHENU™ GOLD TMT

Regd. Office: A-1116, RIICO Industrial Area, Phase-III, Bhiwadi, Distt. - Alwar (Rajasthan), E-mail: ashianagroup@yahoo.co.in

Corp. Office: C-9/36, Sector-8, Rohini, Delhi-110085

दमदार सरिया

TMT Grade Fe 415,500,550